सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

संस्थापक संपादकः कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

वर्ष : 34 अंक : 1-2 अक्टूबर-दिसम्बर 2020 40 रुपये

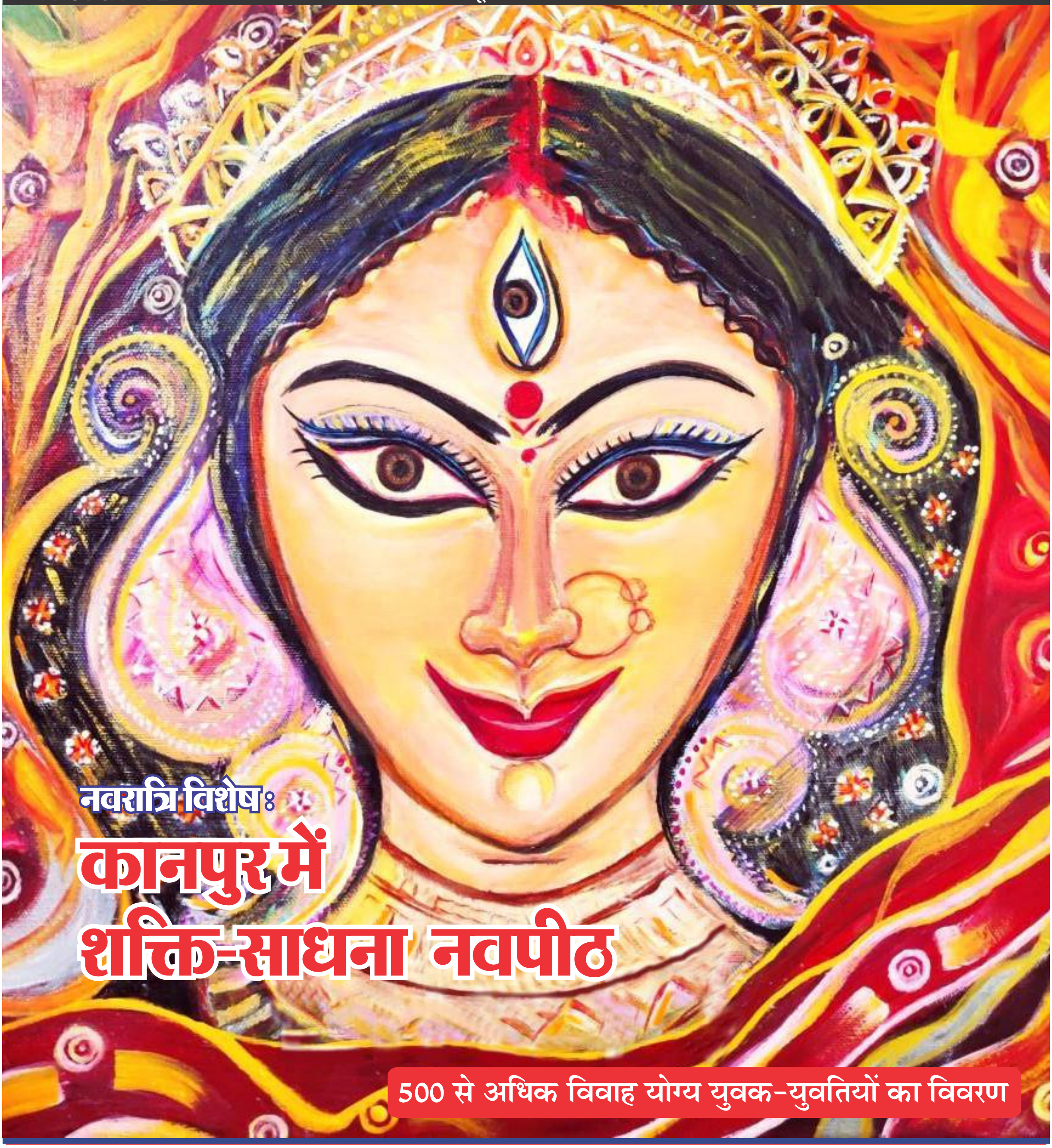

नवरात्रि विशेषः

कानपुर में शक्ति-साधना नवपीठ

500 से अधिक विवाह योग्य युवक-युवतियों का विवरण

SKYLINE SCHOOL

A DAY BOARDING PLAY SCHOOL

A Home away from Home

- Play Group to Nursery Grade
- English Medium
- Door to Door Pick and Drop
- Well Trained Teachers
- Swimming Pool, Play Area, Rides

NS-24, Block-G, Delta 1st Greater Noida
Phone: 0120-2321746, Mobile: 8130557885

भारतमित्र

BHARATMITRA

Premier Hindi Daily

L.S. Publication Pvt. Ltd.

32, Metcalfe Street, Kolkata-700013
Tel.: 22361572, 2119429, Mob.: 9830012330
Telefax: 033-22151533
Email: bharatmitra1@yahoo.com

tewari brothers

Desi Ghee Sweets & Namkeens

862, Chandni Chowk, Delhi-110006
Tel.: 23918326, 23927690, 23956846
Fax : +91-11-23947743

73, M.M. Market, Connaught Circus, New Delhi-110001
Tel.: 23413313, 23411764, 23411765

Branches :

• KOLKATA • MUMBAI • DELHI • BANGALORE • HYDERABAD • KANPUR

E-mail : ravitewari6@gmail.com visit us at : www.tewaribrother.com

'आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः' ऋग्वेद 1-89-1

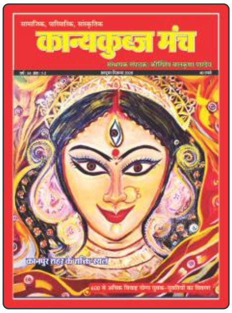

संस्थापक संपादक

कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

●

प्रबंध संपादक

विष्णु कुमार पाण्डेय

3/19 सेक्टर-जे, जानकीपुरम लखनऊ-21

9450362385

●

संपादक

आशुतोष पाण्डेय

264 सेक्टर 3, फरीदाबाद 121004 हरियाणा

9312020932

●

प्रतिनिधि

रविकांत तिवारी (97-176-76003)

तिवारी ब्रदर्स, चांदनी चौक दिल्ली-6

प्रताप शुक्ल (लखनऊ) 9335912667

अजय (कानपुर) 8953882491

संदीप (कानपुर) 7054098204

मनीषा (नोएडा) 9310111069

●

विधि सलाहकार

सांकृत अजीत शुक्ल, एडवोकेट

9415474584

सहयोग राशिः-

संरक्षक....................................... रूपये11000.00

विशिष्ट....................................... रूपये 5100.00

आजीवन.....................................रूपये 2100.00

पत्रिका प्रसार सहयोग (5 वर्ष हेतु)......रूपये 500.00

पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है स्पीड पोस्ट/कोरियर से पत्रिका मंगाने हेतु तथा विदेशों के लिए वास्तविक डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से प्रकाशक व संपादक की सहमति आवश्यक नहीं। न्यायायिक मामलों हेतु कानपुर न्यायालय क्षेत्र ही मान्य होगा।

सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुब्ज मंच

वर्ष : 34 अंक : 1-2,अक्टूबर-दिसम्बर 2020

इस अंक में विशेष

संपादकीय	3
अपनी बात	5
मेरी दृष्टि में	7
नेतृत्वहीन समाज	8
विवेकानन्द और ब्राह्मण	9
स्मृति के अक्षर	10
समाज में हमारी भूमिका	11
हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी	13
हम धरती पर कुछ वर्ष बिताने आए हैं	15
कानपुर में शक्ति साधना नवपीठ	17
आलोक पर्व (दीपावली विशेष)	23
छट पर्व	25
सिंहपुरुष श्रीशचन्द्र दीक्षित	27
असनी के काष्टजिव्ह स्वामी	31
आरक्षण का भस्मासुर	33
व्यक्तित्व परिचय	36
संस्था परिचय	38
वैवाहिक विवरण - युवा वर्ग	41
युवती वर्ग	47
सामाजिक मंच	52
श्रद्धांजलि	54
एवं अन्य स्थाई स्तम्भ	

इस अंक के साथ वर्ष 33, अंक 4 भी समाहित है।

पत्रिका मंगाने हेतु तथा समस्त पत्र व्यवहार के लिए

प्रबन्ध संपादक

कान्यकुब्ज मंच कार्यालय

20बी, किदवई नगर, कानपुर-208011

मो. 9450362385 (समयः सायं 7-9 तक)

ईमेलः kkmanch@gmail.com

www.kanyakubjmanch.com

Graphic Designer: Suresh Kataria

हमारे संरक्षक

इस सूची में आपका नाम भी जुड़ने की प्रतीक्षा है।

कानपुर : पं. प्रेम नारायण तिवारी, तिवारी ब्रदर्स, पं. लक्ष्मी नारायण शुक्ल, पं. प्रेम कुमार पाण्डेय, पं. शरद मिश्र, डॉ वाई एन शुक्ल, श्रीमती सरिता-अनूप द्विवेदी, पं. प्रेम नारायण मिश्र, पं. संजीव दीक्षित, पं. राम प्रकाश मिश्र, श्रीमती मधु-सौरभ अवस्थी।

लखनऊ : पं. अमरनाथ मिश्र, पं. सर्वेश वाजपेयी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, पं. त्रिवेणी प्रसाद दुबे। **प्रयागराज** : पं. विजय कुमार तिवारी। **कन्नौज** : पं. गोपालजी मिश्र। **वाराणसी** : पं. देव नारायण पाण्डेय। **गाजियाबाद** : पं. वी एन अग्निहोत्री। **नोएडा** : पं. रविन्द्र शेखर शुक्ल, कैप्टन संजीव वाजपेयी, पं. प्रशांत तिवारी। **दिल्ली** : पं. रामकृष्ण त्रिवेदी, पं. प्रकाश तिवारी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, श्रीमती शोभा मिश्रा। **मुम्बई** : पं. ब्रजेन्द्र कुमार मिश्र। **फरीदाबाद** : डॉ पारस नाथ दुबे, डॉ देव राज चौबे, पं. जगदीश चंद्र द्विवेदी। **कोलकाता** : पं. राजेन्द्र नारायण वाजपेयी, पं. काशीनाथ पाण्डेय, पं. लक्ष्मीकांत तिवारी, पं. ऋषि शंकर पाण्डेय, पं. अश्विनी कुमार अवस्थी, पं. रामकृष्ण त्रिवेदी (आईपीएस)। **पुरुलिया** : पं. महादेव मिश्र। **अहमदाबाद** : पं. ओमप्रकाश दीक्षित। **छत्तीसगढ़** : पं. के एस शुक्ल। **तमिलनाडु** : श्रीमती लक्ष्मी प्रभा। **विदेश** : पं. वीरेंद्र कुमार तिवारी (यूके)।

हमारे नए संरक्षक : डॉ. विजय दीक्षित, अपोलो हॉस्पिटल, हैदराबाद

हमारे विशिष्ट

कानपुर : पं. आर एस मिश्र, पं. उमेश कुमार पाण्डेय, पं. ओम प्रकाश मिश्र, पं. कृष्णस्वरूप मिश्र (राजा), पं. मंजुल मिश्र, वैद्य राजेश कुमार पाण्डेय, पं. राजेश कुमार दीक्षित (एडवोकेट), प्रो सुरेंद्र कुमार त्रिपाठी, पं. आदित्य कुमार शुक्ल, पं. ब्रजेश अवस्थी, पं. प्रभात मिश्र, पं. कमलेश कुमार शुक्ल (मुचकुंद)। **लखनऊ** : पं. श्रीकृष्ण तिवारी, सांकृत प्रताप शुक्ल, पं. कृष्ण कुमार शुक्ल, डॉ विनोद बिहारी दीक्षित, पं. दिनेश चंद्र मिश्र, पं. प्रदीप शुक्ल, पं. पंकज तिवारी, पं. अजेय शंकर तिवारी, डॉ के के त्रिपाठी, कर्नल पं. धर्मदेव तिवारी, डॉ मृदुला मिश्रा, पं. योगेश चंद्र मिश्र, पं. सुनील कुमार शुक्ल, डॉ मंजू शुक्ला, पं. जी पी द्विवेदी, पं. कृष्ण कुमार मिश्र, पं. देवेंद्र नाथ मिश्र, पं. कमल वाजपेयी, पं. देवानन्द वाजपेयी, पं. विनीत वाजपेयी, पं. गिरीश चंद्र शुक्ल, डॉ गणेश चन्द्र मिश्र, पं. जय शंकर द्विवेदी, पं. राजेश कुमार मिश्र, पं. दीपक कुमार मिश्र। **प्रयागराज** : श्रीमती सुधा अवस्थी (एडवोकेट)। **गाजियाबाद** : पं. श्याम वाजपेयी, पं. निरंजन चन्द्र मिश्र। **बरेली** : पं. एस पी पाण्डेय। **झांसी** : पं. विष्णु शुक्ल। **नोएडा** : पं. शरद त्रिवेदी। **दिल्ली** : वैद्य अशोक कुमार मिश्र, पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित, पं. विक्रम तिवारी, डॉ रघुनंदन प्रसाद तिवारी, पं. विनोद त्रिपाठी, पं. सलिल दीक्षित, डॉ महादेव प्रसाद पाठक, पं. रामदास तिवारी, पं. रविशंकर तिवारी, पं. अनुराग मिश्र, पं. अमरेंद्र तिवारी, पं. विनोद कुमार अग्निहोत्री, श्रीमती मधु-पवन शुक्ला। **कोलकाता** : पं. हरीश मिश्र, पं. गणेश शंकर तिवारी, पं. कुलदीप दीक्षित, पं. सुशील कुमार शुक्ल, पं. शिव किशोर मिश्र, पं. मुकुतेश्वर तिवारी, डॉ हरि शंकर पाठक। **सतना** : पं. उमेश कुमार त्रिपाठी। **भोपाल** : पं. कैलाश नाथ मिश्र। **होशंगाबाद** : डॉ विभावसु दुबे। **फरीदाबाद** : पं. राजेश द्विवेदी, पं. कृष्णबिहारी दुबे, पं. अंजनी कुमार दुबे, डॉ सुरेश पचौरी। **विदेश** : पं. सिद्धार्थ मिश्र (कैलिफोर्निया)

हमारे नए विशिष्ट : डॉ. रामकुमार तिवारी, अध्यक्ष - दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा, हैदराबाद

असतो मा सद्गमय • तमसो मा ज्योतिर्गमय • मृत्योः मा अमृतं गमय

अंधकार में ज्योति की उपासना दीपावली का मूल स्रोत है

-शुभ कामनाओं सहित -

त्रिवेदी एण्ड कम्पनी

पोस्ट बॉक्स नं. 1411, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006

फोन-23965712, 23973045

देत लेत मन संक न धरई

'भूदेव' होने और पारम्परिक सम्मान पाने की पात्रता हमने कब की खो दी है। 'द्विज देवता घरहिं के बाढे', मिथ्या अहं की परिधि से बाहर आना होगा। ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, यह जानते हुए भी, जिस मंदिर जाने पर शांति नहीं मिलती, शक्ति-ऊर्जा का संचार नहीं होता, मनोकामनाओं की पूर्ति नहीं होती, उस मंदिर से भी लोगों की आस्था कम हो जाती है। वह कबीर के 'पाथर' से अधिक कुछ नहीं। सिद्धपीठ, सिद्ध-स्थान, सिद्ध प्रतिमाएं, सिद्ध पुरुष आज भी पूज्य हैं। ब्राह्मण-कुल में जन्म लेना भर ही ब्राह्मण की पहचान बन गया है। गुणवत्ता व सिद्धता विलोपित होते जाने से समाज में हमारी गरिमा नगण्य होती जा रही है।

देव-पूजन विधान में दातव्यता के गुण-तत्व हैं। सूर्य, पृथ्वी, वायु, जल, वनस्पति, माता, पिता, गुरु आदि को कृतज्ञता भाव से देवतुल्य पूजने के मर्म में उनकी दातव्यता है, संग्रहता नहीं। संग्रह, अधिग्रहण, अतिक्रमण, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, तृष्णा आदि दानवीय गुण हैं। आज ब्राह्मण गुणहीन संज्ञा बनकर रह गया है।

'ब्रह्म जानाति सो ब्राह्मणः'। जो ब्रह्म को जान ले, 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्वमसि' आदि मूल-वाक्यों का मर्म समझ ले, वही ब्राह्मण है। 'सशंकितः शूद्रः' भ्रम की स्थिति शूद्रता की पहचान है। वेद भी स्वाध्याय की बात करते हैं। हमने इन्हें जाति-वर्गों में बांट लिया। 'जन्मना जायते शुद्रः, संस्कारात् द्विज उच्यते' सोलह संस्कार, जो मानव-जीवन को क्रमागत परिष्कृत-परिमार्जित करते थे, परम्परा-निर्वाह तक सीमित रह गए।

उपनिषद का वाक्य है- 'सम्मात्वम मनुर्भवः'। सबसे पहले मनुष्य बनो। मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली, उसके जीवन को अर्थ देने वाली संस्कृति से मोहभंग हो चुका है। अर्थ, सुख-ऐश्वर्य की चाह में मानवीय, पारिवारिक, सामाजिक, सामुदायिक मूल्यों का चेहरा विद्रूप होता जा रहा है। विशेषतयः ब्राह्मणों का अपने कर्तव्यों-आचरणों से च्युत होते जाना चिंतनीय है।

स्वामी विवेकानंद ने ब्राह्मणों की मेधा, त्यागवृत्ति, तपश्चर्या, आत्मानुशासन को भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की मानवता के लिए वरदान माना है, तो उनके संग्रह प्रवत्ति की भर्त्सना भी की है। स्वामीजी का मानना था कि वेद-उपनिषद-शास्त्रों में ब्राह्मणों के जिन गुणों का आख्यान है, उन गुणों को अंगीकार करके अन्य जाति-वर्गों को भी ब्राह्मण बन जाना चाहिए। भारत देश को 'ब्राह्मण देश' घोषित कर देना चाहिए। ब्राह्मणों द्वारा ज्ञान संग्रह करने एवं इतर जाति-वर्गों को उससे च्युत रखने को उन्होंने पाप माना है।

'देत लेत मन संक न धरई' श्रीरामचरितमानस में भगवान राम ने मित्रता के लिए पहले देने और बाद में लेने की बात कही है। बालि का वध कर पहले सुग्रीव को उसका राज-पाट दिलवाने का काम किया है। यह नहीं कहा कि पहले सीता की खोज करो। मर्यादा पुरुषोत्तम इसीलिए कहलाये।

ब्राह्मण जब तक समाज, मानवता, पर्यावरण आदि के पोषण-संरक्षण-सम्वर्धन में तत्पर रहा, समाज में पूजा जाता रहा। देना बड़प्पन है। अर्पण, तर्पण, समर्पण हमारे संस्कार थे। धन, ऐश्वर्य व भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह में जब से हम समाज के अन्य वर्गों से प्रतिस्पर्धा करने लगे, ईर्ष्या-द्वेष के भाव हमारे अंतर्मन में पनपने लगे, हमारा बड़प्पन जाता रहा और हम भीड़ का एक हिस्सा बनकर रह गए, ये जानते हुए भी कि हमारी गरिमा संख्याबल से नहीं, गुणवत्ता से है।

कोरोना महामारी की त्रासदी झेलने को आज विश्व अभिशप्त है। भय, तनाव, नकारात्मकता, अनिश्चितता का वातावरण पनप रहा है। आपदाएं-विपदाएं परिवर्तन का कारक बनती हैं। आपदा आई है तो जाएगी भी। आशावान लोग अपने-अपने तरीके से आपदा में अवसर तलाश रहे हैं। वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक रूप से परम्पराओं-मर्यादाओं की नई संरचना की संभावनाओं को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ब्राह्मण समाज से इसका सूत्रधार बनने की अपेक्षा की जा सकती है। समाज के अन्य जाति-वर्गों के साथ हमें उदारता दिखानी होगी। इस उदारता में किसी ढोंग का नग्न-प्रदर्शन न हो, यह उदारता दिखनी भी चाहिए अपने व्यक्तिगत व सामुदायिक व्यवहार व आचरण से। खोई हुई प्रतिष्ठा पाने की चुनौती पहले भी थी, कोरोना ने इसे आसन्न बना दिया है।

समाज को सही दिशा में उत्प्रेरित करने में पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। हमारे विचार स्वतन्त्र हो सकते हैं, स्वच्छन्द नहीं। किसी पूर्वाग्रह या दुराग्रह के पक्षधर नहीं। आपकी सहमति/असहमति सम्भव है। पत्र द्वारा या व्हाट्सएप-ईमेल द्वारा सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया हमारा मार्गदर्शन करेगी, दिग्भ्रमित समाज को दिशा सुझाएगी। हमें प्रतीक्षा है- ❑

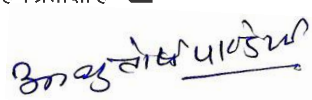

स्मरणीय तिथियां

1 अक्टूबर'20 गुरुवार - अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध-दिवस
2 अक्टूबर'20 शुक्रवार - अहिंसा-दिवस (गांधी जयंती)
9 अक्टूबर'20 शुक्रवार - 97 वीं जयंती
संस्थापक सम्पादक आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय
16 अक्टूबर'20 शुक्रवार - पुरुषोत्तममास समाप्त
17 अक्टूबर'20 शनिवार - शरदीय नवरात्रि आरम्भ
24 अक्टूबर'20 शनिवार - दुर्गाष्टमी,
25 अक्टूबर'20 रविवार - महानवमी, विजय दशमी
30 अक्टूबर'20 शनिवार - शरद पूर्णिमा
31 अक्टूबर'20 रविवार - महर्षि वाल्मीकि जयंती,
2 नवम्बर'20 मंगलवार - गुरु रामदास जयंती
4 नवम्बर'20 बुधवार - करक चतुर्थी
8 नवम्बर'20 रविवार - अहोई अष्टमी
12 नवम्बर'20 शुक्रवार - धन्वंतरि जयंती (धनतेरस)
13 नवम्बर'20 शुक्रवार - नरक चतुर्दशी, हनुमान जयंती
14 नवम्बर'20 शनिवार - दीपावली, बाल-दिवस
15 नवम्बर'20 रविवार - अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, अमावस्या
16 नवम्बर'20 सोमवार - यमद्वितीया (भाई दूज)
20 नवम्बर'20 शुक्रवार - सूर्य षष्ठी (छठ पूजा)
22 नवम्बर'20 रविवार - गोपाष्टमी (गोधन पूजा)
23 नवम्बर'20 सोमवार - अक्षय (आंवला) नवमी
25 नवम्बर'20 बुधवार - देवोत्थान एकादशी, तुलसी विवाह
30 नवम्बर'20 सोमवार - चंद्रग्रहण, कार्तिक पूर्णिमा,
गुरुनानक जयंती
11 दिसम्बर'20 शुक्रवार - सुब्रह्मण्यम जंयती
25 दिसम्बर'20 शुक्रवार - मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती
मालवीय जयंती, अटल जयंती
30 दिसम्बर'20 बुधवार मार्गशीर्ष पूर्णिमा,दत्तात्रेय जयंती

शिक्षक और राष्ट्र

राष्ट्र गौरवशाली तब होगा, जब यह राष्ट्र जीवन मूल्यों और परम्पराओं का निर्वाह करने में सफल और सक्षम होगा। राष्ट्र सफल और सक्षम तब होगा, जब शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में सफल होगा। शिक्षक सफल तब कहा जायेगा, जब वह प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्र का निर्माण, चरित्र का निर्माण करने में सफल होगा। यदि व्यक्ति राष्ट्र भाव से शून्य है, हीन है, सजग नहीं है तो यह शिक्षक की असफलता है। इतिहास साक्षी है और हमारा अनुभव भी यही कहता है कि राष्ट्रीय चरित्र के अभाव में हमने अपने राष्ट्र को अपमानित होते हुए देखा है। शस्त्र से पहले हम शास्त्र के अभाव से पराजित हुए हैं। शस्त्र और शास्त्र को धारण करने वालों को राष्ट्रीयता का बोध नहीं कर पाए। व्यक्ति से पहले खंड-खंड हमारी राष्ट्रीयता हुई। शिक्षक राष्ट्र की राष्ट्रीयता व सामर्थ्य को जागृत करने में असफल हुए।

वेद-वंदना के साथ-साथ राष्ट्र वंदना का स्वर भी गूंजना आवश्यक है। आवश्यकता है व्यक्ति को, व्यवस्था को यह आभास कराना कि यदि व्यक्ति की, राष्ट्र की उपासना में आस्था नहीं रही तो उपासना के अन्य मार्ग भी संघर्ष मुक्त नहीं रह पाएंगे। अतः व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज, समाज से राष्ट्र का एकीकरण आवश्यक है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में बांधना होगा और वह सूत्र ही राष्ट्र का हित कर सकता है। शिक्षक इस चुनौती को स्वीकार करें और शीघ्र ही राष्ट्र के नवनिर्माण में नेतृत्व करें।

संभव है, मार्ग में बाधाएं आएंगी पर शिक्षक को उन पर विजय पानी है। आवश्यकता पड़े तो शिक्षक शस्त्र उठाने में भी पीछे न हटें। शिक्षक का आदर्श शास्त्र है, पर रास्ते में शस्त्र बाधक हो और राष्ट्रवाद के कंटक शस्त्र की भाषा ही समझते हो तो शिक्षक उन्हें अपने सामर्थ्य का परिचय अवश्य दें। अन्यथा सामर्थ्यहीन शिक्षक अपने शास्त्रों की भी रक्षा नहीं कर पाएगा। संभव है राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए शिक्षक को सत्ताओं से भी लड़ना पड़े। पर स्मरण रहे सत्ताओं से अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र है। सत्ताओं की भी आहुति देनी पड़े तो शिक्षक संकोच न करें। इतिहास साक्षी है कि सत्ता की राजनीति ने इस राष्ट्र का अहित किया है। हमें सिर्फ राष्ट्र का विचार करना है। शिक्षक अपने पूर्वजों के पुण्य और कीर्ति का स्मरण कर अपने दायित्वों का निर्वाह करने को उद्यत हो तो विजय निश्चित है। आवश्यकता मात्र आवाहन की है। ❑

-टीवी सीरियल चाणक्य से।

उच्च कोटि के किराना, मेवा, खड़े व पिसे मसाले,
जड़ी-बूटी के थोक व फुटकर विक्रेता

लाला राम चन्द्र गुप्ता एण्ड सन्स

दुकान नं. 141-144, कैनाल पटरी, एक्सप्रेस रोड (6 नंबर कार पार्किंग के सामने) कानपुर
पर्चा लिखवाने वास्ते: 7510000300/9621265697
पर्चे की जानकारी वास्ते फोन नंबर 0512-2364444

अपनी बात

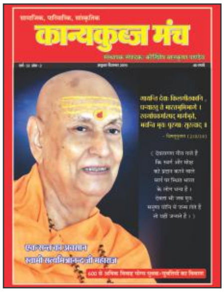

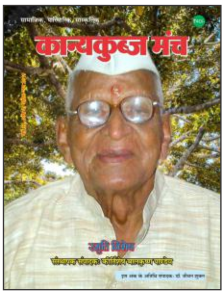

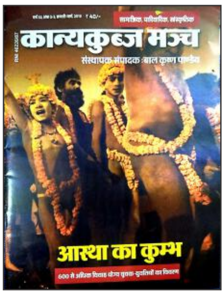

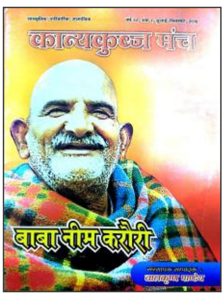

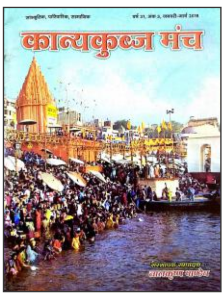

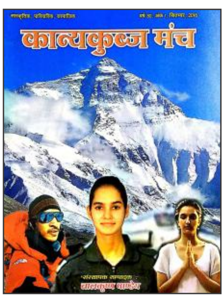

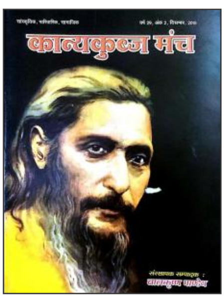

★ किसी पत्र-पत्रिका की उपयोगिता उसके पाठक तय करते हैं। 34 वर्षों के निरंतर प्रकाशन का श्रेय निश्चय ही हमारे प्रबुद्ध पाठकों को है ।

★ संस्थापक संपादक आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की 97 वी जयंती पर हम उनका पुण्य स्मरण करते हुए हृदय से स्वीकार करते हैं कि पत्रिका की समाज-स्वीकार्यता में अनवरत प्रकाशन व प्रकाशन सामग्री की गुणवत्ता के साथ ब्राह्मण संस्कृति के उन्नयन, संगठन की सार्थकता, एक समरस समाज के निर्माण में आदर्श परिवार की परिकल्पना, अपने इतिहास, गौरवशाली अतीत की जानकारी संबंधी प्रकाशन सामग्री उपलब्ध कराने में उनके 80 वर्षों की तप-साधना, समर्पण, समाज के प्रति निष्ठा व उनके अथक परिश्रम से ही सम्भव हो सका है।

★ 'मंच' के जरिए कोई क्रांतिकारी परिवर्तन करने या समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर करने में हम सफल न हो सके हों, समस्याओं का हल तो निकाला जा सकता है, हल मौजूद भी हैं, आवश्यकता उस पर अमल करने की है। फिर भी विचारों के आदान-प्रदान, चर्चा द्वारा संवेदनशील व्यक्तियों के दिलों दिमाग में कुछ कुलबुलाहट तो अवश्य हुई है, इसका आकलन बढ़ती पाठक से हम सहज ही कर सके हैं।

★ विकास के साथ उत्पन्न सामाजिक-पारिवारिक दूरियों के कारण, जो जानकारियां नाते-रिश्तेदारों के परस्पर सम्पर्कों से सुलभ थीं, अपनी युवा सन्तानों के लिए जीवनसाथी खोजने में वैवाहिक जानकारियों का भी पाठक वर्ग में स्वागत हुआ है।

★ अंधेरे को कोसने के बजाय एक नन्हा दीप जलाने का लक्ष्य लेकर जिस मिशन की ओर बढ़ने की चेष्टा की थी, कहना ना होगा, आपके स्नेह की एक-एक बूंद उस बाती को प्रज्ज्वलित किए हुए हैं।

★ हम जो परोस रहे हैं, वह आपको कैसा लग रहा है, इसका भान हमें होता रहे। आप की टोका-टोकी हमें कहीं बाधित नहीं करती। वरन निरंतर सुधार की तरफ बढ़ने में एक नई स्फूर्ति देती है।

★ पत्र के द्वारा, व्हाट्सएप या ई मेल से भेजे आप के दो शब्द 'टॉनिक' का काम करते हैं। अतः विनम्रता पूर्वक हम कह सकते हैं कि आप के समर्थन से वैचारिक स्तर पर समस्याओं से जोड़ने वाली यह पत्रिका शनैः शनैः समाज को बदलने का दमखम रखती है।

★ हमें अपनी यात्रा का दिग्बोध बना रहे इस कामना के साथ..

– **विष्णु पाण्डेय** (प्रबन्ध संपादक)

- धान्य लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी, जय लक्ष्मी, वीर्य लक्ष्मी, राज लक्ष्मी, और सौभाग्य लक्ष्मी ये लक्ष्मी के अष्टधा रूप हैं। इस रूप में वे पूरे समाज की आराध्य है। किसी भी कर्म और व्यवसाय में रत हों। सफलता के लिए योग और क्षेम का वहन करने वाली मातृ शक्ति रूपा लक्ष्मी देवी सर्वथा पूज्य हैं।
- जिस घर में लक्ष्मी की पूजा होती है वहां 'श्री' और 'शोभा' सदैव निवास करती है। अतिथि आतिथ्य पाते हैं। समस्त भूतधारी 'गृहस्थ' आश्रम के आश्रय से फलते-फूलते हैं। पर जहां ऐसा नहीं होता, वहां अधर्म, हिंसा, तृष्णा, वेदना का साम्राज्य हो जाता है। अतः गृहस्थ की धुरी में यदि लक्ष्मी तत्व निवास करेगा, तभी राष्ट्र का कल्याण होगा।

शुभकामनाओं सहित

माननीय सरोज मिश्रा

होटल शिवाय

16/97, शिवाय टावर, दि माल, कानपुर
फोनः 0512-2332050-51

सन्दर्भ : महामारी

–डॉ. जीवन शुक्ल, कन्नौज

हम एक ऐसे चक्रव्यूह के घेरे में अभी तक घिरे हैं, जो मानव को भीतर घुसकर या चलते-फिरते जहां हमें चाहता है, घेरकर अपना दास बना लेता है। इस चक्रव्यूह को लोग एक बीमारी के रूप में भी देख रहे हैं। डॉक्टरी भाषा में यह कोविड 19 या इसे कोरोना रोग कहते हैं। यह संक्रामक रोग है पर मैं इस रोग को मिसाइल 2020 नाम देना उचित समझता हूं। मिसाइल इसलिए कि इसने पूरी दुनिया को अपने निशाने में ले लिया। इसका लांचर तलाशना नहीं पड़ता। यह दुश्मन देखते ही लांचर तलाश लेती है। वैसे ही जैसे त्रेता और द्वापर में सिद्ध योद्धा स्मरण करते ही अपना दिव्यास्त्र धारण कर उसका संधान कर देते थे। उसी प्रकार इस मिसाइल 2020 का धारक योद्धा और इसका लांचर दोनों कब, कहां, किस को अपना निशाना बना ले, कौन जाने?

मनुष्य ने जितने भी अस्त्र-शस्त्र बनाए हैं, उनका संबंध आत्मरक्षा के नाम पर विनाश से ही रहा है। पाषाण युग में पत्थर के, ताम्र युग में तांबे के और लौह युग में लोहे के हथियार बनाकर हमेशा संहार का ही निर्माण किया। फिर भी मानव की आत्मा अतृप्त रही तो उसने 'अणुबम', हाइड्रोजन बमों का निर्माण किया। उसके विनाश से उत्पन्न द्वितीय विश्वयुद्ध की त्रासदी भी उसने देखी। लेकिन वर्चस्व की भावना का अंत नहीं हुआ तो इस महामारी का अनुसंधान कर अपनी प्रभुता का परचम लहराने का जघन्य अपराध कर डाला।

हमने इतिहास से कभी कोई सीख नहीं ली बल्कि अपना इतिहास रचने के लिए शक्ति-संचयन, नए विनाश की भूमिका रचने में ही अपने को भी विनष्ट कर डाला। अगर दूर अतीत पर दृष्टि डाली जाए तो रावण वह पहला व्यक्ति सामने आता है जिसने विश्व विजय की आकांक्षा से अपने पौरुष का उपयोग किया। सिकंदर, नेपोलियन और हिटलर का अंत हमने देखा ही है। विज्ञान के युग में हम जी रहे हैं। इंटरनेट की शक्ति के सहारे आज सेनाओं से लड़े जाने वाले युद्धों से बड़ा खतरा साइबर युद्ध से है। घर बैठे किसी का भी बैंक अकाउंट हाईजैक कर उसे कंगाल कर सकते हैं। बिना गोली या ज़हर के किसी व्यक्ति या राष्ट्र को अपंग कर सकते हैं।

कोरोना के माध्यम से हमारे आर्थिक संसाधनों को अपंग कर, हमें असमर्थता के घेरे में जकड़ कर, प्राणों की भीख मांगने काबिल भी नहीं रखा। लोग घरों में कैद हो गए, देश के, समाज के, व्यक्ति के, आर्थिक आय के स्रोत बंद हो गए। अनजानी बीमारी का तोड़ आज तक कोई वैक्सीन नहीं दे सकी। देश , समाज और व्यक्ति घबरा कर इधर-उधर भागने लगा। हमारे देश ने इस महामारी के गिरेबान पर हाथ डालकर ऐसा दबोचा कि इस मानव विरोधी अस्त्र का निर्माता चीन भी सकते में आ गया। हमने इस महायुद्ध में पूरे विश्व का मनोबल बढ़ाया। हमारे यहां के ही डॉक्टर कोठारी ने अपने बयान से हमें ही नहीं, पूरी दुनिया को आश्वस्त किया कि यह जानलेवा महामारी नहीं है। इसमें मृत्यु-संख्या नगण्य आंकड़े की है। हां, यह भय उत्पन्न करने, हमारी सहनशीलता और आर्थिक क्षति पर जबरदस्त हमला अवश्य है। हमें इससे डरने की कोई जरूरत नहीं है। सिर्फ सावधान रहने की आवश्यकता है।

इस बीमारी ने हमें खुद से ही शर्मिंदा होने के हालात में लाकर जरूर खड़ा कर दिया है। भारत आर्य सभ्यता का प्रमुख केंद्र है। आर्य कोई धर्म या जाति का नाम नहीं था, और न है। यह वैदिक सभ्यता से जुड़े उस समाज का द्योतक है जो वातावरण की शुद्धि को मानव जीवन में प्राथमिकता देता है। इसलिए स्नान, स्वच्छता और यज्ञों को मानव जीवन से जोड़ कर वातावरण को नित्य पवित्र रखने पर जोर देता है। अनार्य सदैव इस सभ्यता के विरोध में लामबंद रहे। हमने कालांतर में उनके प्रभाव में आकर अपने को ही हीनदृष्टि से देखना और नकारना शुरू किया। आज वही दकियानूसी कहे जाने वाले सिद्धांत ही हमारे प्राणरक्षक सिद्ध हो रहे हैं। जूठा ना खाना, बिना हाथ-पैर धोए न चौके में जाना और न भोजन करना, बाहर से आने पर पैर धोकर घर में आना आदि इन्हीं हथियारों से तो हमने कोविड-19 को परास्त किया है।

इस बीमारी ने हमारे धीरज, धर्म मित्र और जीवनसाथी से भी हमारा परिचय कराया। लोग पैदल, हाथ-गाड़ी या साइकिल से 500 - 800 और 12 सौ मील तक की यात्रा कर बड़े-बड़े शहरों से यहां रोटी कमाने गए थे। जान बचाकर उन स्थानों की ओर भागे जहां न रोजी का साधन है और न भोजन का ठिकाना। यह होती पुरखों की देहरी के प्रति आस्था, कि कुछ न मिले पहचान और सम्मान की सांस तो मिलेगी। ऐसा पुलिस प्रशासन भी दिखा जिसके ऊपर जनता ने स्वेच्छा से फूल बरसाए और ऐसे ही वीडियो भी देखने को मिले जिसमें पुलिस वालों को पीड़ित युवा, बाल, वृद्ध और औरतों पर लाठी चलाते देखा गया। नेता, अफसर भ्रष्टाचार का प्रखर अंग है। फिर भी सब में बहुत कुछ सराहनीय भी दिखा, लोगों ने, संस्थाओं ने, सरकारों ने, सबने समाज का दर्द बांटने में अपनी भूमिका निभाई। लेकिन अब टूटी अर्थ व्यवस्था को संभालना राम से काम वाली कहावत सा लगता है। आइए, हम पूरे आत्मविश्वास के साथ समाज, देश तथा सरकार के साथ खड़े होकर अपना घर पुनः सजाएं।❑

– 9415471813

नेतृत्वहीन समाज

– डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, कानपुर

भय से लड़ने की ताकत समाज देता है। एक जागरूक समाज अपने सदस्यों को भयभीत नहीं देख सकता। व्यक्ति से समूह और समूह से समाज का जन्म ही भय से लड़ने के लिए हुआ। लोकतंत्र में सत्ता राजनीतिज्ञों को सौंपी जाती है पर हमने समाज का नेतृत्व भी राजनीतिज्ञों को सौप दिया जो राजतंत्र में भी कभी नहीं हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन में भी राजनीतिक आंदोलनों के समांतर सामाजिक आंदोलन चलते रहे। मध्यकाल मे विदेशी शासकों के दमन के समय भी सामाजिक आंदोलन ही समाज को संजीवनी देते रहे । पुनर्जागरण सामाजिक नेताओं का कार्य है।

वही बीमारियां महामारी कही जाती हैं जो मनुष्य के सुरक्षा कवच समाज को तोड़ने में समर्थ होती हैं। तोड़ने का यह कार्य उनकी संक्रमण-क्षमता है जिससे वे मनुष्य को मनुष्य से दूर कर देती है। महामारी समाज को भीड़ बना देती है। भीड़ या हिंसक होती है या पलायनवादी। दोनो स्थिति में भीड़ मे व्यक्ति सत्ता समाप्त हो जाती है जबकि समाज मे व्यक्ति की इयत्ता बरकरार रहती है। कोरोना के प्रारंभिक चरण में ही हमने सामाजिक दूरी और पलायन की झलक पा ली है। राजनीति ने उपचार कम भय का प्रचार कुछ अधिक किया, क्योंकि यह उसका गुण धर्म है। पर सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण भूमिका मनुष्य के सुरक्षा कवच समाज की रही । समाज सुधारकों का अभाव बहुत कष्टप्रद है। नेतृत्वहीन समाज को ही भीड़ कहा जाता है । गाँव और नगर, धनी और निर्धन सबके बीच एक गहरी खाई स्पष्ट है। राजनीति समाज का मुँहताज रहती है पर आज समाज राजनीति का मुँह देख रहा है । यह एक छोटी घटना होगी जब हमें अनुभव होगा कि हमारे सामाजिक जीवन के सारे सूत्र टूट गये हैं और हम एक पंगु समाज बनकर रह गये हैं।

विपदायें भी नई राह सुझाती हैं

विपदायें नयी सोच देती हैं, हमें सोचने को विवश करती हैं कि क्या जो हमारी राह है, वह सही है या हमें कुछ बदलाव करना चाहिए। दुनिया में चाहे महायुद्ध हुए हों या विनाशकारी तूफान आये या फिर भीषण महामारी जैसी आपदायें प्रकृति का अभिशाप बनकर आती हैं पर अंततः ये वरदान बनती हैं क्योंकि ये मनुष्य को मनुष्य के निकट लाती हैं। विकास की अंधी दौड़ और गलाकाट प्रतियोगिता से भटके मनुष्य को मानवता की राह दिखाती हैं। इसीलिए मृत्यु को भी जीवन का अंत नहीं, नये जीवन का प्रारंभ माना गया है। ऐसे संकटों के बाद जब कारण तलाशे जाते हैं तो एक ही बात निकलकर सामने आती है, मानवीय लिप्सा और प्रकृति का क्षरण। प्रगति का अर्थ बदल गया, जिसके पास जितने अधिक आयुध वह उतना ही विकसित ,परमाणु सम्पन्न राष्ट्र। यह वायरस भी एक अदृश्य परमाणु ही तो है जो अहंकार को कुचल रहा है, मनुष्य को छिपने के लिए विवश कर रहा है। अहंकार के रथ पर सवार महानायक मुँह खोंचियाये घूम रहे हैं। जिनके पास सब कुछ है वे मृत्युबोध से ग्रस्त हैं। यह भय उस सुख और अहंकार के विलोप का भय है जो उन्हें प्राप्त है। इसके विपरीत साधारण आदमी जीवन तलाश रहा है। सड़कों पर मृत्यु के समय जीवन की तलाश ही मानव की ताकत है। समाज, धर्म, राष्ट्र सब उपजीव्य हो गये है। मनुष्य होकर मनुष्य की चिंता न कर हम कौन और किसका इतिहास रचते हैं- जड़ता का ही न।

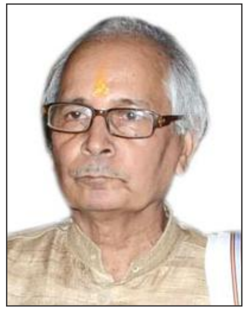

उपयोग और उपभोग

आज से दो पीढी पहले उपयोगिता हमारा जीवन सूत्र था। हर वस्तु हमारी आवश्यकता के अनुरूप थी और उसका उपयोग तब तक करते जब तक उसमें थोड़ी भी जान रहती। टूट जाने पर भी उसके पुर्जे अन्य कामों में आ जाते। फटे पुराने कपड़ो से बिस्तर बन जाते। कबाड़ घर से बहुत कम निकलते थे। दो पीढी तक साइकिल चल जाती। आवश्यकता से अधिक सामान लेने की आदत नहीं थी। तब हमारे जीवन में उपयोग का महत्व था। धीरे धीरे हम उपभोक्ता बनते गये। बाजार ने हमें खरीद लिया और हम उसके गुलाम हो गये। बाजार हमें परिचालित करता है।

उपयोगिता संतुष्टि है, जिसका परिणाम आनंद है और उपभोग असंतुष्टि, जिसका परिणाम सुख है। सुख नित्य जन्म लेता और मरता है, आनंद तृप्ति है।

इसका अर्थ यह नहीं कि उपयोगिता में स्थिरता है। जिसे हम सृजन या निर्माण कहते हैं, वही उपयोगितावाद है और जिसे विकास कहते हैं वह उपभोक्तावाद है। हमारी आज की पीढी असंतुष्ट पीढ़ी है । साहित्य भी उसी असंतुष्ट पीढी का है ।रचना अब स्वांतःसुखाय नहीं उसका भी प्रतिदान चाहिए। उपभोक्ता बनकर हम केवल खरीदारी नहीं करते, स्वयं भी विक्रय हो जाते हैं।

वैश्विकता उपभोक्तावाद की देन है। उपयोगिता में हम वैश्विक नहीं सार्वजनीन होते हैं।आज हम जिस कोरोना संकट से गुजर रहे हैं उसके मूल में हमारा उपभोक्तावाद है। जो विश्वयुद्ध का अनुमान करते हैं, उन्हें निराशा होगी क्योंकि बाजार लड़ता नहीं लड़ाता है - व्यक्ति को, समाज को ।❑

–9452694078

विवेकानंद और ब्राह्मण

स्वामी विवेकानंद का मत है कि आरंभ में सब ब्राह्मण थे तथा आर्यों में सर्वोच्च जाति ब्राह्मण थी। ये ब्राह्मण धार्मिक, नीतिवान, सदाचारी, सज्जन, उदार, निःस्वार्थी, ज्ञान एवं प्रेम-प्रसूत सत्य के सम्पादक-प्रचारक तथा भगवान के भक्त होते थे। ऐसे आध्यात्मिक साधना संपन्न महात्यागी ब्राह्मण ही हमारे आदर्श हैं। क्योंकि वह 'ईश्वर के अंतरंग स्वरूप' एवं 'मनुष्य के चरम आदर्श' हैं। विवेकानंद इसी 'ब्रह्मज्ञ पुरुष' तथा इसी 'आदर्श और सिद्ध पुरुष' की रक्षा करना चाहते हैं। और कहते हैं कि इसका लोप कदापि नहीं होना चाहिए। सच्चा ब्राह्मणत्व सद्गुणों का खजाना है और ब्राह्मण को इन सद्गुणों को संसार में बांटना चाहिए। ब्राह्मणों ने जीवन के उच्चतर उद्देश्यों तथा संस्कृति के महत् तत्वों का खजाना जब से जनसाधारण के लिए बंद कर दिया तभी भारत गुलाम हुआ और अवनति हुई। विवेकानंद सबसे पहले ब्राह्मणों के धर्म पर एकाधिकार तथा उनके विशेषाधिकारों पर गहरी चोट करते हैं। यद्यपि यह मानते हैं कि ब्राह्मणों ने ही पहले भारत की सब जातियों में धर्म का प्रचार किया और सबसे पहले त्याग के भाव का उन्मेष किया तथा जीवन के सर्वोच्च के लिए सब कुछ छोड़ा। यह ब्राह्मणों का दोष नहीं था कि वे उन्नति के मार्ग पर अन्य जातियों से आगे बढ़े। उनका दोष है कि उन्होंने संचित ज्ञान और संस्कार पर एकाधिकार करके अन्य जातियों को उससे वंचित कर दिया। यह अवसर अग्रसरता एवं सुविधाओं का आसुरी दृष्टि से किया गया दुरुपयोग था। विवेकानंद कहते हैं कि ब्राह्मणों ने धर्म शास्त्रों पर एकाधिकार जमा कर विधि-निषेधों को अपने ही हाथ में रखा तथा भारत की दूसरी जातियों को नीच कहकर उनके मन में विश्वास जमा किया कि वह वास्तव में नीच है।

विवेकानंद इस एकाधिकार को समूल नष्ट करने के लिए ब्राह्मणों का ही आवाहन करते हैं वे कहते हैं प्रयत्न करो, सबको वह धर्म प्राप्त हो जाए और अब्राह्मणों के मन में यह बैठा दो कि ब्राह्मणों के समान उनका भी धर्म पर वही अधिकार है। सभी को, चांडाल तक को भी इन्हीं जाज्वल्यमान मंत्रों का उपदेश करो और अग्नि मंत्र में दीक्षित करो। यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो धिक्कार है तुम्हारी शिक्षा और संस्कृति को, धिक्कार है तुम्हारे वेदों और वेदांत के अध्ययन को। स्वामी विवेकानंद मानते हैं कि ब्राह्मणों की प्रभुता की शक्ति उनके महान बौद्धिक एवं मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति पर आधारित है।

ब्राह्मण ने 'महान त्याग रूपी महंगा मूल्य' देकर जिस प्रभुत्व शक्ति को प्राप्त किया उसे वह दूसरों को देने के लिए तैयार नहीं। ब्राह्मण ने अपने मानसिक ज्ञान को गुप्त रखा और उससे अन्य को वंचित किया तथा अपने पूर्वजों के गौरव, अधिकार, सम्मान, सत्ता एवं एकाधिकार को बनाए रखा जिससे अन्य जातियों के साथ उसका संघर्ष हुआ। ब्राह्मण का यह एकाधिक अनुवांशिक परंपरागत शक्ति-केंद्र बन गया और ब्राह्मण 'अधिकारलिप्सा' एवं 'व्याघ्रवत तृष्णा' के केंद्र बन गए।

वे कहते हैं कि वेदांती होना और साथ ही किसी के लिए किसी प्रकार का भौतिक, मानसिक या आध्यात्मिक विशेषाधिकार स्वीकार करना असंभव है। वेदांत में किसी के लिए किसी भी प्रकार के विशेषाधिकार का स्थान नहीं है। प्रत्येक मनुष्य में एक ही शक्ति है- किसी में अधिक प्रकट हुई है, किसी में कम, वही सामर्थ्य सब में है। अतः वेदांत के अनुसार जन्मगत उच्च-नीच भेद का कोई अर्थ नहीं।❑

ज्ञान संगम

उपहूतो वाचस्पतिः उपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम्।
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि।। (अथर्व. 1-1-4)

ज्ञानी पुरुषों का हम आह्वान करते हैं। ज्ञानी पुरुष भी हमें बुलाएँ जिससे हम ज्ञान प्राप्त करें। हम ज्ञान से कभी वियुक्त न हों।

पं. ओम शंकर मिश्र

आश्रय मेन्शन, 30-21-22, आवास विकास कॉलोनी-3 पनकी, कानपुर

स्मृति के अक्षर

– आचार्य निशांतकेतु, गुरुग्राम

आलोचना

आप किसी भी क्षेत्र में काम करते हों, आपकी आलोचना होगी। आलोचना इसलिए होगी कि आप काम करेंगे। जो काम नहीं करेंगे उसकी आलोचना कहीं नहीं होगी। जीवन के हर क्षेत्र में आपको आलोचक मिलेंगे, केवल एक मुकाम पर आलोचक नहीं होता है, वह है - श्मशान। श्मशान में कोई आलोचना नहीं करता। जहाँ व्यक्ति अंतिम नींद सोता है, उस स्थान पर कोई आचोचना नहीं करता। लेकिन यदि आप आलोचकों से डरकर अपने संकल्प को कुँआरा छोड़ देते हैं तो भी आपकी आलोचना होगी। इसलिए इस संबंध में मुझे आपसे एक बात कहनी है कि आलोचकों की परवाह नहीं करें, क्योंकि आलोचकों के स्मारक नहीं बनते, स्मारक हमेशा सर्जकों के बनते हैं।

हिन्दी – अंग्रेजी

हिन्दी में वह चुस्ती, कसावट और खूबसूरती नहीं है, जो अँगरेजी में है। यह वक्तव्य एक प्रकार से सही है। हिन्दी हमारी मातृ-भाषा है, अर्थात वह भाषा, जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं। हिन्दी अपने मैला आँचल और झुर्रियों में भी हमारी ममतामयी माँ है, जिसके हम सभी संतति हैं। भारतवर्ष के लिए अँगरेजी एक नर्स-भाषा है। नर्स तो चुस्त, कसी हुई और खूबसूरत होती ही है। वह माँ नहीं हो सकती और फिर उसकी आवश्यकता बीमार पड़ने पर होती है। अभी भारतवर्ष सांस्कृतिक धरातल पर बीमार है, इसलिए नर्स तो अच्छी लगेगी ही।

श्रुति – स्मृति

श्रुति वेद हैं और स्मृति आचरणीय आचार-संहिता। गुरुमुख से सुनने के कारण वेदों की श्रुति आख्या हुई। साधक-शिष्य ने गुरुमुख से जो भी सुना-सीखा, वह अपरिवर्तनीय श्रुति (वेद) है। फिर वही साधक-शिष्य जब अपने जीवन की प्रयोगशाला में प्रवेश करता है तो अपनी अनुभूतियों के धरातल पर उसका भी कुछ कथ्य बनता है। यही स्मृति है। श्रुति गुरुमुखीन और स्मृति शिष्यमुखीन है। स्मृति श्रुति के पीछ-पीछे चलती है। महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में राजा दिलीप और उनकी पत्नी की उपमा श्रुति एवं स्मृति से दी है-

'तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुमपांसुलानां धुरिकीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वरधर्म-पत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।'

संप्रदायवाद

संप्रदायवाद जहर नहीं अमृत है। गुणी के पथभ्रष्ट होने से गुण उपेक्षणीय नहीं होता। अभी संसार में 300 धर्म हैं, जिनकी आचार-संहिताएँ तथा विधि-निषेध भिन्न-भिन्न हैं, किंतु सभी के भीतर जो प्रसुप्त अध्यात्म और ऐश्वर्य ईश्वरत्व है, वह एक है। भीतर का अध्यात्म जब बाहर निकल आता है और आचार-संहिताओं में बँध जाता है, तब वह धर्म बन जाता है। यही धर्म जब समाज के समक्ष भिन्न-भिन्न रूप-रंगों में प्रस्तुत किया जाता है तो वह संप्रदाय बन जाता है, जिसमें सुपाच्यता और सुग्राह्यता होती है। 'संप्रदाय' शब्द का निर्वचन ही देखिए। दाय का अर्थ है दातव्य, धरोहर, सर्वलोक-हितैषिता। इसमें दो उपसर्ग लगे हैं - सम् तथा प्र। 'सम्' उपसर्ग का अर्थ है सम्यक्, समुचित तथा हितकारी। 'प्र' उपसर्ग का अर्थ है प्रकृष्ट (उत्कृष्ट), प्राचीन परंपरा से चला आता हुआ (सनातन)। फिर 'संप्रदाय' शब्द बनता है। तो इसका मूलार्थ हुआ आध्यात्मिक ऐश्वर्य अथवा ऐश्वर्यपूर्ण अध्यात्म की सूक्ष्मता को जब हम प्रकट करना चाहते हैं, तब वह धर्म की स्थूलता का रूप धारण कर लेता है। जब इस धर्म को हम व्यक्ति की रुचि, आवश्यकता, संस्कार और कल्याण के लिए सहजग्राह्य एवं सुपाच्य बनाकर उसके सामने उपस्थित कर देते हैं तो वह संप्रदाय बन जाता है। कारकों में संप्रदान-कारक दान और त्याग का प्रतीक है। यही संप्रदान जब सनातन-मूल्य पर धरोहर के रूप में अथवा रिक्थ के रूप में बन जाता है तो वह संप्रदाय हो जाता है। 'वाद' एक सिद्धांत तथा धारा है। अतः संप्रदायवाद सर्वथा शुद्ध एवं सात्त्विक परंपरा है। एक धर्म अनेक संप्रदायों में विभाजित होकर लोकोपगम्य बनता है।

संप्रदायवाद को जहर तब कहा गया, जब उसमें कट्टरपन आने लगा और उसके आचरणकर्ता अपने को सर्वश्रेष्ठ मानकर अहंकार-पीड़ित ही नहीं, दूसरे संप्रदायों से टकराने भी लगे। तो दोष किसका हुआ, संप्रदाय का अथवा संप्रदाय के संवाहक या प्रयोक्ता का? निश्चय ही इस कट्टरपन अहंकार तथा सर्वोत्कृष्ट-भाव की भर्त्सना होनी चाहिए न कि संप्रदायवाद की।❑

–9811096352

समाज में हमारी भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए

– डॉ सुधांशु त्रिवेदी, राज्यसभा सांसद

विगत कुछ दशकों में जिस प्रकार भारतीय समाज की समन्वयवादी विचारधारा का ह्रास हुआ है, जातियों-उपजातियों, वर्गों-उपवर्गों तथा विभिन्न समुदायों से सुसज्जित भारतीय समाज को और उसके इतिहास को जिस प्रकार तोड़ा-मरोड़ा गया है, साथ ही स्वार्थ की राजनीति के चलते अभी भी प्रचार-दुष्प्रचार का सिलसिला जारी है, ऐसे समय में ब्राह्मणों को अपनी भूमिका कैसे निर्धारित करनी है? यह स्पष्ट होना चाहिए। क्या हमें भी वही हिस्सा चाहिए जिसके लिए समाज को विखण्डित करने के प्रयास हो रहे हैं?

ब्राह्मणों के पास आदिकाल से अब तक समाज को दिशानिर्देश करने वाली शक्ति रही है। हमने समाज में जो स्थान बनाया है, वह राजनीति या सत्ता की शक्ति के बलबूते नहीं, बल्कि नैतिकता और आदर्श जीवन-मूल्यों के बल पर बनाया है। दो क्षेत्रों- भूपति और पूंजीपति को छोड़ दीजिए, तो इतिहास, कला, धर्म, विज्ञान लगभग सभी क्षेत्रों में जनसंख्या केअनुपात में ब्राह्मणों का योगदान कहीं अधिक रहा है। ब्राह्मण कभी धनपति, भूपति नहीं रहा, फिर भी समाज में हमारे शोषक होने का दुष्प्रचार होता है। सन्त कवि नरोत्तम दास के 'सुदामा-चरित' में - ***'सीस पगा न झगा तन में प्रभु, जानै को आहि बसै केहि ग्रामा। धोति फटी सी लटी दुपटी अरु, पायँ ऊपानह की नहिं सामा। द्वार खड्यो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसौं वसुधा अभिरामा।'*** वाले सुदामा पाण्डे से अति निर्धनतावश उनकी पत्नी ***'या घरतें न गयो कबहुँ, पिय! टूटो तवा औ फूटी कठौती।'*** कहकर सखा श्रीकृष्ण के पास भेजने की जिद करती हैं, सुदामाजी कहते हैं- ***'सिच्छक हौं सिगरे जग को तिय, ताको कहां अब देति है सिच्छा। जे तप कै परलोक सुधारत, संपति की तिनके नहि इच्छा। मेरे हिये हरि के पद-पंकज, बार हजार लै देखि परिच्छा। औरन को धन चाहिये बावरि, ब्राह्मन को धन केवल भिच्छा।'***

अगर अध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो सुदामा जी बहुत धनवान थे। जितना धन उनके पास था, किसी के पास नही था। लेकिन अगर भौतिकदृष्टि से देखा जाये तो सुदामाजी बहुत निर्धन थे।

कौरव-पांडवों के राजकुमारों को शस्त्र - शास्त्र की शिक्षा तथा दिव्यास्त्रों का ज्ञान देने वाले गुरु द्रोणाचार्य की इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि अपने पुत्र को गाय का दूध पिला सकें। अश्वस्थामा को दूध की जगह आटा घोलकर पीना पड़ा। क्रोन्ध और रघु की कथा ले लीजिए या विश्वामित्र और सुनाक्षेप की कथा, इतिहास भरा पड़ा है, ब्राह्मण ने स्वयं को, अपने शरीर, अपने परिवारों को भी न्योछावर कर दिया है- समाज, मानवता तथा धर्म-संस्कृति की रक्षा केलिए।

यह तो रहा पौराणिक-काल। अब ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो आज से 2400 वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य केसमय में यूनान से आये मेगस्थनीज़ ने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में भारत के सामाजिक, राजनीतिक स्वरूप पर दृष्टि डालते हुए भारतीय समाज के सात वर्गों का जिक्र किया है। साथ ही यहां की समन्वयवादी, सौहाद्रपूर्ण संरचना को विश्व के लिए अनुकरणीय बताया। सातवीं शताब्दी महाराज हर्षवर्धन के शासनकाल में चीनी यात्री व्हेनसांग ने अपनी पुस्तक 'सी-यू-की' में भारत केसामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिकऔर प्रशासकीय पक्ष का उल्लेख करते हुए ब्राह्मण जाति को

सर्वाधिक पवित्र और सम्मानित जाति के रूप में बताया है। भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था को सामाजिक व प्रशासकीय तौर पर उपयुक्त कहा गया। दसवीं शताब्दी में मुहम्मद गजनवीं के साथ भारत आये अलबरूनी की पुस्तक 'ताहीक-ए-हिन्द' में समकालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक जानकारियों का अमूल्य स्रोत है। अलबरूनी ने भारत की सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित हो संस्कृत का अध्ययन किया और पुराणों तथा भगवतगीता का अनुवाद किया। अलबरूनी ने लिखा हैं कि, ''महमूद ने भारत की समृद्धि समाप्त कर दी और इतनी क्रूर रूप से शोषण किया और लोगों को दंडित किया कि हिंदू धूल के कणों की तरह असंतुष्ट हो गए हैं। हिंदू धर्म इतिहास का विषय बन गया।''

माना जा सकता है कि भारतभूमि सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक व चारित्रिक रूप से समृद्ध थी। इस सोने की चिड़िया को लूटने-खसोटने के अनेक प्रयास हुए लेकिन हमारी जड़ें इतनी मजबूत थीं कि हमारी हस्ती को जल्दी कोई मिटा नहीं सका। सामाजिक-संरचना में सेंध लगाने का काम शुरू हुआ मुगल और ब्रिटिश काल में। ❑

(ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के सम्मेलन में दिये गये भाषण का सम्पादित

जानते है तो भी जानिये

- द्वितीय शती ई.पू. में हमारे इतिहास में एक नये भारत का नक्शा खड़ा हो गया जो ब्राह्मण साम्राज्यों का था। एक ही समय में भारत वर्ष के तीन ब्राह्मण साम्राज्य श्रुवा फेंक, अस्त्र हस्त हुए। वे थे मगध के शुंग, कलिंग के चेदि और दक्षिण के सात वाहन।
- पुराण सात वाहनों को 'अन्ध्र' कहते है। अंध्र लोग गोदावरी और कृष्ण नदियों के बीच के भू भाग 'तेलगू' के रहने वाले थे।
- गुर्जर प्रतीहार, ब्राह्मण और आभीरों के रक्त मिश्रण के परिणाम है।
- शक रुद्रदामा का जामाता ब्राह्मण सात वाहन वासिष्ठि पुत्र श्री शातकर्णि था। इस प्रकार के अन्य अनेक संबन्ध ब्राह्मण धर्मियों और विदेशियों के स्थापित हो गये थे और होते जा रहे थे।
- पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में राजपूतों ने इतना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है कि ऊँचे ब्राह्मण भी उनकी नकल करने लगे। यहां तक कि वे अपने नाम के साथ सम्मान सूचक शब्द 'सिंह' भी लगाते हैं।
- दिल्ली के आसपास कुछ मील के क्षेत्र में रहने वाले ब्राह्मणों का रहन सहन स्थानीय रूप से प्रभावशाली जाटो से मिलता जुलता है।
- शुग वंश के पुण्य मित्र तथा कन्नौज के हर्ष वर्द्धन के बीच के युग (185 ई. पू से 649 ई.) को वैदिक पुनरुत्थान का युग कहा जा सकता है।
- सांस्कृतिक स्तर पातंजलि से (150 ई. पू.) इस युग का आरम्भ होता है और शंकराचार्य से (800 ई.) इसका अंत होता है।
- विद्वान सच्चरित्र ब्राह्मणों को दान में गांव दिये जाते थे। मध्यकाल के ताम्र पत्रों में ऐसे ग्राम की संज्ञा 'अग्रहरि' दी है।

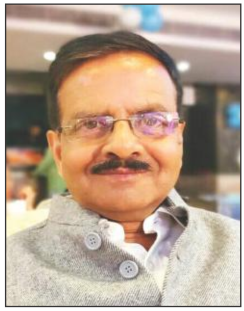

- महाकवि अश्व घोष, नागार्जुन, असंग, वसुवंधु, दिगनाग, धर्म कीर्ति, बोध रुचि बौद्ध दर्शन को इनका योगदान, अविस्मरणीय है। ये सभी ब्राह्मण कुल में जन्में विद्वान थे। और बुद्ध के सिद्धांतों से प्रभावित हो, इन सबने उनकी विशद व्याख्या की।
- जो चतुर्वर्ण की गुण दोष परक वात करते हैं। उन्होंने कभी ईमानदारी से इसका शोध अनुसंधान नहीं किया कि प्रत्येक वर्ण अपनी लक्ष्मण रेखा के सदैव वंदिनी 'सीता' बनकर नहीं रहा।
- हमने हूणों, कुषाणों, मंगोलों, शकों आदि को अपने में समाहित का दिया था।
- मनु ने यज्ञ की दीक्षा लेने वाले ब्राह्मणों के नाम न लेने का विधान किया था। अतः जो ब्राह्मण यज्ञ की दीक्षा लेते थे उन्हें दीक्षित कहा जाता था। पुराणों से विदित होता है कि किसी आश्रम प्रतिष्ठान या संस्था के संस्थापक का नाम ही उसकी परम्परा का द्योतक नाम बन जाता था। वसिष्ठ विश्वामित्र, कश्यप, परशुराम आदिनाम ऐसी ही परम्पराओं के द्योतक थे वर्तमान काल में भी एक परम्परा के लिए शंकराचार्य नाम का प्रयोग भी इसी तथ्य को उजागर करता है। ❑

सं.- राजेश दीक्षित, एडवोकेट (9453933660)

हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी

–प्रो. संजय द्विवेदी

हमारे सामाजिक विमर्श में इन दिनों भारतीयता और उसकी पहचान को लेकर बहुत बातचीत हो रही है। वर्तमान समय 'भारतीय अस्मिता' के जागरण का समय है। साथ ही यह 'भारतीयता के पुर्नजागरण' का भी समय है। 'हिंदु' कहते ही उसे दूसरे पंथों के समकक्ष रख दिए जाने के खतरे के नाते, मैं 'हिंदु' के स्थान पर 'भारतीय' शब्दपद का उपयोग कर रहा हूं। इसका सच तब खुलकर सामने आ जाता है, जब हिंदुत्व विरोधी ताकतें ही कई अर्थों में भारतीयता विरोधी एजेंडा भी चलाते हुए दिखती हैं। वे हिंदुत्व को अलग-अलग नामों से लांछित करती हैं। डा. राधाकृष्णन की किताब 'द हिंदु व्यू आफ लाइफ' कई अंधेरों को चीरकर हमें सच के करीब ले जाती है। इस दिशा में स्वातंत्र्य वीर सावरकर की 'हिंदुत्व' भी महत्त्वपूर्ण बातें बताती है।

हिंदुत्व शब्द को लेकर समाज के कुछ बुद्धिजीवियों में जिस तरह के नकारात्मक भाव हैं कि उसके पार जाना कठिन है। हिंदुत्व की तरह ही हमारे बौद्धिक विमर्श में एक दूसरा सबसे लांछित शब्द है- 'राष्ट्रवाद'। इसलिए राष्ट्रवाद के बजाए राष्ट्र, राष्ट्रीयता, भारतीयता और राष्ट्रत्व जैसे शब्दों का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि 'राष्ट्रवाद' की पश्चिमी पहचान और उसके व्याख्यायित करने के पश्चिमी पैमानों ने इस शब्द को कहीं का नहीं छोड़ा है। इसलिए नेशनलिज्म या राष्ट्रवाद शब्द छोड़कर ही हम भारतीयता के वैचारिक अधिष्ठान की सही व्याख्या कर सकते हैं।

वर्णव्यवस्था और जातिवाद

भारतीय समाज को लांछित करने के लिए उस पर सबसे बड़ा आरोप वर्ण व्यवस्था का है। जबकि वर्ण व्यवस्था एक वृत्ति थी, टेंपरामेंट थी। आपके स्वभाव, मन और इच्छा के अनुसार आप उसमें स्थापित होते थे। व्यावसायिक वृत्ति का व्यक्ति वहां क्षत्रिय बना रहने को मजबूर नहीं था, न ही किसी को अंतिम वर्ण में रहने की मजबूरी थी। अब ये चीजें काल बाह्य हैं। वर्ण व्यवस्था समाप्त है। जाति भी आज रूढ़ि बन गयी किंतु एक समय तक यह हमारे व्यवसाय से संबंधित थी। हमारे परिवार से हमें जातिगत संस्कार मिलते थे-जिनसे हम विशेषज्ञता प्राप्त कर 'जाब गारंटी' भी पाते थे। इसमें सामाजिक सुरक्षा थी और इसका सपोर्ट सिस्टम भी था। बढ़ई, लुहार, सोनार, केवट, माली ये जातियां भर नहीं है। इनमें एक व्यावसायिक हुनर और दक्षता जुड़ी थी। गांवों की अर्थव्यवस्था इनके आधार पर चली और मजबूत रही। आज यह सारा कुछ उजड़ चुका है। हुनरमंद जातियां आज रोजगार कार्यालय में रोजगार के लिए पंजीयन करा रही हैं। जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था दोनों ही अब अपने मूल स्वरूप में काल बाह्य हो चुके हैं। अप्रासंगिक हो चुके हैं। ऐसे में जाति के गुण के बजाए, जाति की पहचान खास हो गयी है। इसमें भी कुछ गलत नहीं है। हर जाति का अपना इतिहास है, गौरव है और महापुरुष हैं। ऐसे में जाति भी ठीक है, जाति की पहचान भी ठीक है, पर जातिभेद ठीक नहीं है। जाति के आधार पर भेदभाव हमारी संस्कृति नहीं। यह मानवीय भी नहीं और सभ्य समाज के लिए जातिभेद कलंक ही है।

राजनीतिक नहीं, सांस्कृतिक अवधारणा से बना राष्ट्र

हमारा राष्ट्र राजनीतिक नहीं, सांस्कृतिक अवधारणा से बना है। सत्य,अहिंसा, परोपकार, क्षमा जैसे गुणों के साथ यह राष्ट्र ज्ञान में रत रहा है, इसलिए यह 'भा-रत' है। डा. रामविलास शर्मा इस भारत की पहचान कराते हैं। इसके साथ ही इस भारत को पहचानने में महात्मा गांधी, धर्मपाल,अविनाश चंद्र दास, डा.राममनोहर लोहिया,वासुदेव शरण अग्रवाल, डा. विद्यानिवास मिश्र,निर्मल वर्मा हमारी मदद कर सकते हैं। डा. रामविलास शर्मा की पुस्तक 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश' हमारा दृष्टिदोष दूर कर सकती है। आर्य शब्द के मायने ही हैं श्रेष्ठ और राष्ट्र मतलब है समाज और लोग। शायद इसीलिए इस दौर में तारिक फतेह कह पाते हैं, 'मैं हिंदु हूं, मेरा जन्म पाकिस्तान में हुआ है।' यानी भारतीयता या भारत राष्ट्र का पर्याय हिंदुत्व और हिंदु राष्ट्र भी है। क्योंकि यह भौगोलिक संज्ञा है, कोई पांथिक संज्ञा नहीं है। इन अर्थों में हिंदु और भारतीय तथा हिंदुत्व और भारतीयता पर्याय ही हैं।

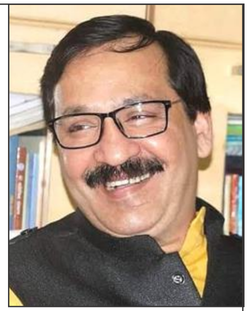

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विवि, भोपाल के रजिस्ट्रार तथा कुलपति रहे प्रो. संजय द्विवेदी को भारत सरकार के कार्मिक मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय जनसंचार व पत्रकार संस्थान का महानिदेशक नियुक्त किया गया है। दो दशक से भी अधिक समय से पत्रकारिता से जुड़े रायपुर (छग) के प्रो. द्विवेदी की प्रिंट, वेब व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सामाजिक व सांसारिक विषयों पर लेखन की विस्तृत श्रृंखला है।

हालांकि इस दौर में इसे स्वीकारना कठिन ही नहीं, असंभव भी है।

विविधता ही विशेषता

'भारतीयता' भाववाचक शब्द है। यह हर उस आदमी की जमीन है जो इसे अपनी मातृभूमि और पुण्यभूमि मानता है, जो इसके इतिहास से अपना रिश्ता जोड़ता है, जो इसके सुख-दुख और आशा-निराशा को अपने साथ जोड़ता है, जो इसकी जय में खुश और पराजय में दुखी होता है। समान संवेदना और समान अनुभूति से जुड़ने वाला हर भारतवासी अपने को भारतीय कहने का हक स्वतः पा जाता है। भारत किसी के विरुद्ध नहीं है। विविधता में एकता इस देश की प्रकृति है, यही प्रकृति इसकी विशेषता भी है। भारत एक साथ नया और पुराना दोनों है। विविध सभ्यताओं के साथ संवाद, अवगाहन ,समभाव और सर्वभाव इसकी मूलवृत्ति है। समय के साथ हर समाज में कुछ विकृतियां आती हैं। भारतीय समाज भी उन विकृतियों से मुक्त नहीं है। लेकिन प्रायः ये संकट उसकी लंबी गुलामी से उपजे हैं। स्त्रियों, दलितों के साथ हमारा व्यवहार भारतीय स्वभाव और उसके दर्शन के अनुकूल नहीं है। किंतु गुलामी के कालखंड में समाज में आई विकृतियों को त्यागकर आगे बढ़ना हमारी जिम्मेदारी है और हम बढ़े भी हैं।

सुख का मूल है धर्म

भारतीय दर्शन संपूर्ण जीव सृष्टि का विचार करने वाला दर्शन है। संपूर्ण समष्टि का ऐसा शाश्वत् चिंतन किसी भूमि में नहीं है। यहां आनंद ही हमारा मूल है। परिवार की उत्पादकीय संपत्ति ही पूंजी थी। चाणक्य खुद कहते हैं, 'मनुष्यानां वृत्ति अर्थं।' इसलिए भारतीय दर्शन योगक्षेम की बात करता है। योग का मतलब है-अप्राप्ति की प्राप्ति और क्षेम का मतलब है-प्राप्त की सुरक्षा। इसलिए चाणक्य कह पाए, *'सुखस्य मूलं धर्मः/धर्मस्य मूलं अर्थः/अर्थस्य मूलं राज्यं।'*

वर्तमान चुनौतियां और समाधान

प्रख्यात विचारक ग्राम्सी कहते हैं, 'गुलामी आर्थिक नहीं सांस्कृतिक होती है।' भारतीय समाज भी लंबे समय से सांस्कृतिक गुलामी से घिरा हुआ है। जिसके कारण हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को कहना पड़ा, 'हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी, आओ विचारें मिलकर, यह समस्याएं सभी।' किंतु दुखद यह है कि आजादी के बाद भी हमारा बौद्धिक, राजनीतिक और प्रभु वर्ग समाज में वह चेतना नहीं जागृत कर सका, जिसके आधार पर भारतीय समाज का खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आता। क्योंकि वह अभी अंग्रेजों द्वारा कराए गए हीनताबोध से मुक्त नहीं हुआ है। भारतीय ज्ञान परंपरा को अंग्रेजों ने तुच्छ बताकर खारिज किया ताकि वे भारतीयों की चेतना को मार सकें और उन्हें गुलाम बनाए रख सकें। गुलामी की लंबी छाया इतनी गहरी है कि उसका अंधेरा आज भी हमारे बौद्धिक जगत को पश्चिमी विचारों की गुलामी के लिए मजबूर करता है। भारत को समझने की आंखें और दिल दोनों हमारे पास नहीं थे। स्वामी दयानंद, महर्षि अरविंद, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, बाबा साहब आंबेडकर द्वारा दी गयी दृष्टि से भारत को समझने के बजाए हम विदेशी विचारकों द्वारा आरोपित दृष्टियों से भारत को देख रहे थे। भारत को नवसाम्यवादी विचारकों द्वारा आरोपित किए जा रहे मुद्दों को समझना जरूरी है। माओवाद, खालिस्तान,रोहिंग्या को संरक्षण देने की मांग, जनजातियों और विविध जातियों की कृत्रिम अस्मिता के नित नए संघर्ष खड़े करने में लगे ये लोग भारत को कमजोर करने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते। इसमें उनका सहयोग अनेक उदार वाममार्गी बौद्धिक और दिशाहीन बौद्धिक भी कर रहे हैं। आर्थिक तौर पर मजबूत ये ताकतें 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के विचार के सामने चुनौती की तरह हैं। हमारे समाज की कमजोरियों को लक्ष्य कर अपने हित साधने में लगी ये ताकतें भारत में तरह-तरह की बेचैनियों का कारक और कारण भी हैं।

भारत के सामने अपनी एकता को बचाने का एक ही मंत्र है,'सबसे पहले भारत'। इसके साथ ही हमें अपने समाज में जोड़ने के सूत्र खोजने होगें। भारत विरोधी ताकतें तोड़ने के सूत्र खोज रही हैं, हमें जोड़ने के सूत्र खोजने होगें। किन कारणों से हमें साथ रहना है, वे क्या ऐतिहासिक और सामाजिक कारण हैं जिनके कारण भारत का होना जरूरी है। इन सवालों पर सोचना जरूरी है। अगर वे हमारे समाज को तोड़ने, विखंडित करने और जाति, पंथ के नाम पर लड़ाने के लिए सचेतन कोशिशें चला सकते हैं, तो हमें भी इस साजिश को समझकर सामने आना होगा। भारत का भला और बुरा भारत के लोग ही करेंगें। इसका भला वे लोग ही करेंगें जिनकी मातृभूमि और पुण्यभूमि भारत है। वैचारिक गुलामी से मुक्त होकर, नई आंखों से दुनिया को देखना। अपने संकटों के हल तलाशना और विश्व मानवता को सुख के सूत्र देना हमारी जिम्मेदारी है । स्वामी विवेकानंद हमें इस कठिन दायित्वबोध की याद दिलाते हैं। वे हमें बताते हैं कि हमारा दायित्व क्या है। विश्व के लिए, मानवता के लिए, सुख और शांति के लिए भारत और उसके दर्शन की विशेषताएं हमें सामने रखनी होगीं। कोई भी समाज श्रेष्ठतम का ही चयन करता है। विश्व भी श्रेष्ठतम का ही चयन करेगा। हमारे पास एक ऐसी वैश्विक पूंजी है जो समावेशी है,सुख और आनंद का सृजन करने वाली है। अपने को पहचानकर भारत अगर इस ओर आगे आ रहा है तो उसे आने दीजिए। भारत का भारत से परिचय हो जाने दीजिए।❑

– 9893598888

हम धरती पर कुछ वर्ष बिताने आए हैं

– नीरजा माधव , वाराणसी

वर्ष 2020 कोरोना के कारण विश्व में हुई करोड़ों मासूम मौतों के लिए जाना जायेगा तो वहीं स्वच्छ पर्यावरण के एक जरूरी पाठ के लिए भी याद किया जायेगा। कोरोना संकट काल में जहाँ एक ओर दुश्चिन्ताओं और अनिश्चितता के काले बादल छाये रहे, वहीं हल्की ही सही, एक आश्वस्त करने वाली बयार भी चली। कोरोना संक्रमण से बचने के लिए पूरे विश्व में लॉकडाउन किया गया। लोग अपने अपने घरों में बन्द रहे। रेलें, हवाई जहाज, बसें, या परिवहन के अन्य साधनों के पहिए रुके रहे। कारखानें, दुकानें सब बन्द। इस लॉकडाउन का पर्यावरण पर एक बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा। सैकड़ों वर्षों में शायद पहली बार आसमान तमाम विषैली गैसों, धुएँ, गुबार से मुक्त होकर एकदम साफ और नीला दिखाई पड़ा। खबर आई कि यमुना नदी की कालिमा अपने पुराने नीले रंग में लौट आई है। गंगा नदी का जल इतना साफ हो गया है कि वह पीने योग्य हो गया। बढ़ गई आवाजाही तितलियों और मधुमक्खियों की। भरने लगीं उड़ान चिड़ियाँ खुले आसमान में। फूलों पत्तियों की रंगत कुछ और निखर गई। पेड़ों की फुनगियों पर तोता और मैना ने एक दूसरे को अनलिखा सन्देश भेजना शुरू कर दिया। लताओं में, घने कुंजों में चिड़ियों की चहचहाहट कुछ ज्यादा ही भर गई। वैज्ञानिक बताने लगे हैं कि प्रदूषण के कारण जो ओजोन पर्त में छिद्र हुआ था और मानवता के लिए तथा धरती के लिए भी घातक था, वह ओजोन छिद्र बहुत हद तक इस साफ पर्यावरण और हानिकारक गैसों के अभाव में भरने लगा है जो एक शुभ संकेत है पृथ्वीवासियों के लिए। मौसम वैज्ञानिक और पर्यावरणविद बता रहे हैं कि महानगरों में हवा की गुणवत्ता में एकाएक इस कोरोना काल में व्यापक सुधार हुआ है। पर्यावरण के साफहोने की स्थिति लगभग पूरे विश्व में हुई है, क्योंकि कोरोना के कारण सम्पूर्ण विश्व में गाड़ियों, हवाई जहाजों का परिचालन बहुत कम हुआ है। फैक्टरियों में उत्पादन ठप्प है। दुकानें बन्द है। लोग डर से घरों में बन्द हैं। जो काम बड़े बड़े देश अपनी बैठकों और पर्यावरण संरक्षण के लिए उठाए जा रहे अनेक फैसलों से आज तक नहीं कर पाए, वही पर्यावरण स्वच्छ हो गया जब हमने प्रकृति को प्रकृति के हवाले कर दिया। जीव जन्तु साँस लेने लगे। नदियों का प्रवाह निर्मल और अविरल हो गया। यानी प्रकृति पर बलात् अपना मशीनी विकास थोपने से जो पर्यावरणीय अस्थिरता दिखाई पड़ रही थी, वह समाप्त हो गई। प्राचीन भारतीय वाङ्मय कहते हैं- 'नदी वेगेन शुद्धयति'। अर्थात नदियाँ अपने वेग से स्वयं शुद्ध होती रहती हैं। परन्तु हमने विकास के चक्कर में उनका अविरल प्रवाह रोका। बहुमंजिली अट्टालिकाओं और अर्थ के फेर में हमने छोटी छोटी नदियों का अस्तित्व ही मिटा दिया जबकि नदियाँ हमारे लिए रक्तशिराओं की तरह फैली थीं जो

जीवन के लिए जरूरी होती हैं। हमें याद होगा कि कोरोना संकट से पहले भारत में गंगा प्रदूषण को खत्म करने के लिए कितनी गंगा सेवी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ सेवा का पत्र-पुष्प हाथ में लिए आगे आई थीं। सबकी चिन्ता में गंगा शामिल थीं, प्रदूषण शामिल था। गंगा ज्ञान कुन्तल भर तो कर्म छँटाक भर। छँटाक-छँटाक भर प्रदूषण दूर हो रहा था। कोई पॉलिथिन बीन रहा था तो कोई मिट्टी साफकर रहा था। फोटो खिंच रही थी छप रही थी, और अनुदान की राशि बढ़ रही थी। गंगा दिनोंदिन सिकुड़ती जा रही थीं और उसके सिकड़ते अस्तित्व पर चिन्तन, मनन, गोष्ठियाँ और सेमिनार आयोजित हो रहे थे। इस लॉकडाउन की अवधि में सूचना मिली कि गंगा का जल पहले से बहुत निर्मल हो गया है और उसमें डाल्फिन भी दिखाई पड़ी। यह एक उत्तर है गंगा से जुड़े तमाम प्रश्नों का। ऋग्वेद और अथर्ववेद में लगभग नब्बे से निन्यानबे नदियों का उल्लेख है जिनमें गंगा, यमुना, सरस्वती, सिन्धु, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, शिप्रा आदि प्रमुख है और अत्यन्त पवित्र मानी गई हैं। गंगा यदि आर्यावर्त्त की सभ्यता और संस्कृति का प्रमाण है तो दूसरी ओर एक पूरी की पूरी सभ्यता ही सिन्धु के नाम हो जाती है। ये तमाम नदियाँ वृहत्तर भारत की जीवन रेखा की तरह हैं। प्रकृति की गोद में तमाम वे पशु पक्षी लॉकडाउन के दिनों में निर्द्वन्द्व विचरते देखे गये जो हमारे तथाकथित मशीनी विकास के कोलाहल और गुबार से सहमकर कहीं दुबके-छिपे रहते थे। यह कोरोना काल का एक सकारात्मक पर्यावरणीय पक्ष है। स्पष्ट सी बात है कि जब हम पर्यावरण की बातें कर रहे होते हैं उस समय हम कम से कम सात सौ से अधिक विलुप्त होती चिड़यों की प्रजाति की बातें कर रहे होते है, पाँच हजार से अधिक वृक्षों की प्रजातियों की रक्षा की बात कर रहे होते हैं और सैकड़ों प्रकार के खनिजों के धरती के गर्भ से दोहन तथा करोड़ों लोगों के प्यास की बात कर रहे होते हैं, जो बुझती है इन नदियों के मीठे जल से। जब हम पृथ्वीवासियों से जंगलों को बचा लेने की गुहार कर रहे होते हैं, वास्तव में उस समय हम अरबों, करोड़ों लोगो की प्राणवायु की रक्षा की बातें कर रहे होते हैं जो इन जंगलों, पेड़ों से निःसृत होती है गन्धवाही हवा के रूप में। प्रकृति और पर्यावरण की आजादी का मतलब है धरती पर मौसमों और जलवायु की आजादी और इस प्रकार मनुष्य को खुलकर साँस ले पाने की आजादी। आज कोरोना संकट का यह काल शेष बचे रहे मनुष्यों की आने वाली नई दुनिया और बीते समय की दुनिया के बीच प्रवेश द्वार की तरह तन कर खड़ा है। जो बचेगा, वह इसमें से

निकल कर नई दुनिया देखेगा। निःसंदेह मानव बचेगा अपनी संकल्प शक्ति के बलबूते। कुछ संकल्पों और विकल्पों के साथ, कुछ आचरण और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तनों के साथ या फिर कोरोना को अपने वैज्ञानिक औषधीय शोधों से पराजित कर मानव फिर रचेगा अपनी नई दुनियां। पहले भी महामारियाँ आती थी, उनका समाधान निकाला गया। कुछ जीवन के साथ बच बचाकर चलती रहीं। कोरोना का स्वरूप कुछ अलग ढंग का रहा। इससे भी बचने का उपाय मनुष्य ढूँढ ही लेगा। पर इस कोरोना ने हम सभी को आत्मसाक्षात्कार का एक अवसर तो दे ही दिया है। विश्व के तमाम देशों को मिल बैठकर इस पर विचार करना चाहिए कि क्या आने वाले समय में भी हम धरती का दोहन करके उसे खोखला करते रहेंगे या अपनी दानवी महत्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाकर आवश्यकता भर ही धरती माँ से माँगेंगे ? क्या मृत नदियों की लाशें लेकर हम नई दुनिया में प्रवेश करेंगे या दोनों किनारों पर वन प्रान्तरों के बीच कल-कल का मधुर संगीत बिखेरती नदियों और साफ नीले आकाश को छूने की प्रतिस्पर्धा करते गर्वोन्नत पहाड़ों तथा उन्मुक्त विचरते पक्षियों के कलरव गान के साथ प्रकृति की गोद में हम अपना आने वाला समय बितायेंगे। यही समय है जब विश्व को यह तय करना है कि आर्थिक वर्चस्व और हथियारों की होड़ की मनुजता-विरोधी राजनीति छोड़ हम धरती के अपने अपने भूखण्ड पर सह-अस्तित्व के साथ जीते हुए अपना समय शान्ति में बितायेंगे। यही वह समय भी है जब इन सबके विरुद्ध जाने वाले देश को पूरे विश्व को मिलकर सबक सिखाना पड़ेगा ताकि मानवता के विरुद्ध कभी कोई कोई कदम इस धरती पर न उठ सके, क्योंकि हम इस धरती पर कुछ वर्ष बिताने आए हैं, उसका चिर स्वामी बनने नहीं। ❑

– 9792411451

कविता

हे करूणामय
करूणाकर
हे ओढरदानी !
लोग कह रहे हैं
बंद थे तुम ।
तो लो , अब खोलने का
उपक्रम करते हैं
किंतु मैंने
गर्भ गृह की दरवाजों की
दरारों में झांक कर
देखने की कोशिश की ,
वहां कभी नहीं दिखे तुम ।
हे पिता !
तुम हो भी कैसे सकते थे वहां?
जब तुम्हारे अंशधर
विकल होकर मृत्यु के भय को
जीतने का यत्न करने के लिए
तुम्हें पुकार रहे थे
तब तुम गर्भ गृह के भीतर
एकांकी कैसे हो सकते थे?
हे अनन्त !
तुम्हें देखा मैंने
यत्न की अनगिनत अकुलाहटों में ।
तुम्हें देखा मैंने सफ़ेद चादरों के बीच
रोगियों आतप को हरते हुए
गंभीर मुद्राओं में
मृत्यु के भय को जीते हुए
मनस्वी चिकित्सकों के प्रयासों में ।
तुम्हें देखा मैंने
दिगंत व्यापी सन्नाटे को
चीरते हुए आह्वानों में ,
जो सिखा रहे थे
मृत्यु को कैसे जीता जाता है ?
कैसे हम भय को भगा सकेंगे ?
हे अभ्यंकर !
तुम लगातार सुबह शाम
विथियों में चक्कर लगा रहे थे
कि कहीं कोई कोना
अस्वच्छ ना छूट जाए।
तुम तो उन अनगिनत
भोले प्रयासों में थे,
जो कह रहे थे
जीत जाएंगे हम
उस अदृश्य देहविहीन काल से।
हे महाकाल !
गर्भ गृह की दीवारें
कैसे रोक लेती तुम्हें ?
तुम ओंकार ,
अनहद नाद की तरह
गूंज रहे थे जन मन में ।
हे अजन्मा !
तुम सिखा रहे थे
कि मृत्यु ,
जीवन से बड़ी नहीं है ।
तुम अचिंत्य
नर्तन कर रहे थे
प्रकृति की
उस अनसुनी ताल पर
जो समय रहते
सुन नहीं सका कोई ।
हे नटराज !
उस घर के द्वार
खोलने का बड़प्पन
दिखा रहे हैं हम ,
जिसे हमने तुम्हारा कह दिया
और समझ लिया जैसे कि
बाकी सब घर या घट
तुम्हारे ना हों ....

– मिता शुक्ला , इंदौर

कानपुर में शक्ति-साधना नवपीठ

- अनूप कुमार शुक्ल, सचिव,कानपुर इतिहास समिति

जगतजननी माँ भगवती विश्व में अनेकानेक या असंख्य नामो व रूपों से अर्चित है। यही कारण है कि भगवती माँ अपने भक्तों के प्रति करुणा , ममता और वात्सल्यमयी दया से कृपा दृष्टि बनाये रखती हैं । कानपुर जनपद भगवती की अर्चना व उपासना के केंद्र बहुत से शक्तिपीठ हैं उनमे से नव शक्तिपीठों का वर्णन प्रस्तुत हैं ।

1. माँ तपेश्वरी देवी

आनन्दकन्दां भुवनेश्वरीं तां, ओंकाररूपां तरलायताक्षीम् ।
पाशांकुशाभीति वर प्रदात्रीं, तपेश्वरीं वंशधरां नमामि ।।

रामायण कालीन इतिहास को समेटे भगवती तपेश्वरी देवी का मन्दिर कनपुरियों की श्रद्धा व आस्था के प्रमुख शक्तिपीठों मे उर्ध्व स्थान पर है । मान्यता है कि त्रेतायुग मे भगवती सीता नेअयोध्या से निर्वासित हो कर ब्रह्मावर्त (बिठूर) मे महर्षि बाल्मीकि के आश्रम मे प्रवास किया था। उसी समय अरण्यविहार के दौरान भगवती सीता ने जिन ईश्वरी देवी को प्रतिष्ठित कर तप व साधना की थी उन्हें ही बाद मे माँ तपेश्वरी देवी की संज्ञा भक्तों द्वारा दी गयी । एक अन्य मान्यता के अनुसार भगवती पार्वती जब अपने कठोर तप से ईश्वर (शिव) को प्राप्त किया तब उन्हें भी भगवती तपेश्वरी नाम मिला।

एक श्रुति आख्यान भी प्रचलित है कि बर्रा गांव के लठुआ बाबा की बारह कन्यायें थी । जिसमे सबसे बड़ी जुही की बारा देवी थी उनके विवाह के समय पिता के अनुचित व्योहार से अप्रसन्न हो सभी बहिनें पाषाण हो गयी । उनमे से तपेश्वरी देवी , माँ बुद्धा व जंगली देवी है ।

भगवती तपेश्वरी देवी की मुख्य प्रतिमा त्रय पिण्ड रूप मे विद्यमान है । कानपुर का इतिहास, भाग-1 (1950 ई) के मुताबिक 'पटकापुर की ग्राम देवी तपेश्वरी देवी है जिनके मन्दिर की गणना शहर के प्रसिद्ध देवस्थानों मे है। तपेश्वरी देवी के मंदिर मे पहले प्रतिमा के स्थान पर चक्की के पाट के टूटे हुए भाग रक्खे रहते थे और लोग उन्ही का पूजन करते थे। इन पाटो की पूजा से यह प्रकट होता है कि यह मन्दिर एक गांव का मन्दिर था और बहुत प्राचीन है । पहले इसमें बकरों की बलि भी चढ़ाई जाती थी और सम्भव है कि इसके माली पुजारी को ठाकुर गजराज सिंह ने या उनके किसी पूर्वज ने जमीन दे दी हो और वह चक्की का पाट रखकर पूजा करवाने लगा हो और वहीं पर बकरों की बलि भी चढ़ाने लगा हो और प्रसाद के रूप मे ठाकुर साहब को भी एकआध सिरी भेज देता रहा हो'।

2. भगवती बारा देवी

उत्सार्य भीम-कनकाक्ष-मलं विदार्य ,
दंष्ट्रोदघृतावनि तलां दधतीं हसन्तीम ।
रक्षापरां जल जलोदय- नेत्र-लीलाम,
वाराहनीलिम-मणिं प्रणमामि दुर्गाम ।।

कानपुर के दक्षिण भाग मे जुही मोहल्ले मे भगवती बारा देवी का मन्दिर भक्तों की श्रद्धा का केन्द्र है । आचार्य सोमदत्त बाजपेयी के श्री वाराहीदेवी स्तोत्रम के मुताबिक वाराही देवी भगवान वाराह की अधिष्ठात्री शक्ति है । सम्भव है कि श्री वाराही देवी का अपभ्रंश बारा देवी नाम से है । जनमान्यता के मुताबिक बर्रा गाँव के लठुआ बाबा के बारह कन्याएं थी और उनमे से यह सबसे बड़ी थी । पिता ने इनका विवाह अर्रा गांव मे तय कर दिया और बारात भी बड़े धूमधाम से आई, मंगलगीत भी गाये गये। भाँवरो के समय पिता के अनुचित व्यवहार से कुपित हो अपनी तपश्चर्या से पाषाण की हो गई । मान्यता है कि जुही मे सात बहनें पूजित है ।

कानपुर का इतिहास,भाग-1 (1950) के मुताबिक 'पहले बाराह देवी खटिकों की देवी थी और इन पर सुअरों का बलिदान होता था । अब तो सभी जातियों मे इनकी महिमा खूब बढ़ गई है।' वर्तमान मे मन्दिर परिसर मे कई अन्य देव मन्दिर भी है । नवरात्रि पर्व मे जवाँरा भी चढ़ते है और भारी मेला भी लगता है।

Dr. Alok Dikshit
MBBS, MD, FRHS
Pathologist

Dr. Archana Dikshit
MBBS, MD, DMRE
Radiologist Ultrasonologist

QCI Quality Council of India ACCREDITED 2018-0911
NABL ACCREDITED ISO 15189 : 2012 MC-2826
ACCREDITTED WITH U A S L
BIR The British Institute of Radiology MEMBER
NORWEGIAN ACCREDITATION

Panel Companies

AEGON LIFE	CIMAP	PUNJAB NATIONAL BANK
ALLAHABAD BANK	COLGATE	RAILWAY HOSPITAL
APPC	DR REDDY'S LABORATORY	RAYMOND
ASIAN PAINTS	EASY DAY	RELIANCE
BAJAJ ALLIANZ LIFE	FUTURE GROUP	RESERVE BANK OF INDIA
BASF	GRAMIN BANK	ROYAL SUNDERAM LIFE
BIG CITY	GREAVES COTTON	RPG-KEC INTERNATIONAL
BIRLA SUNLIFE	HDFC LIFE	SASHASTRA SEEMA BAL
BSNL	HPCL	SBI LIFE
CDRI	ICICI LOMBARD	SLEEK INTERNATIONAL
CEAT	LIBERTY	SMBC
CENTRAL WAREHOUSING CORP.	LIC OF INDIA	VIDEOCON
CGHS	NFL	

DIKSHIT
DIAGNOSTIC CENTRE

8/5, Vikas Nagar, Lucknow - 226022
http://www.visitddc.com

26.888038N.80.965751E Phone : (0522) 2320036, 4043111, 2335673 Home Collection : 94535 12755, 99354 81325, 9919959779, 77839 57120

Timings: Mon-Sat : 8.30 am to 8.30 pm Sun : 8.30 am to 2.30 pm Ambulance Available

3. भगवती जंगली देवी

भगवती जंगली देवी अर्थात वनश्री देवी को भगवती सीता (वनदेवी) ने ब्रह्मावर्त क्षेत्र प्रवास मे पूजित व अर्चित किया,यह श्रद्धालुओ का मत है । एम ब्लॉक किदवई नगर मे स्थित जंगली देवी मन्दिर भक्तो की आस्था का प्रमुख केंद्र है । वर्तमान मन्दिर अयोध्या के लब्धप्रतिष्ठ सन्त बाबा राममंगलदास ने ध्यानशक्ति की प्रेरणा से जाग्रत विग्रह की स्थापना की गई।

बगाही, बाकरगंज के मो बाकर द्वारा भवन निर्माण के दौरान खुदाई मे एक ताम्रपट्ट वर्ष 1925 मे प्राप्त हुआ जो पुरातत्व विभाग लखनऊ मे संरक्षित है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के डा बुद्धिरश्मि मणि व इन्दुधर द्विवेदी के मुताबिक सन 1925 मे कानपुर के निकट बराह नामक गांव से नागभट्ट के पौत्र भोजदेव प्रथम (मिहिरसेन) का एक ताम्रपत्र लेख प्राप्त हुआ था जिस पर तिथि संवत् 893 दी हुई है। (एपिग्राफिया इंडिका,खण्ड-19).

अभिलिखित ताम्रपट्ट के मुताबिक देवी भक्त महोदय (कन्नौज) के महाराजा भोजदेव कभी इस भूभाग से निकले और वनश्री देवी की मनमोहक मूर्ति को देख मन्दिर बनवाया और मन्दिर के संचालन के लिए दान व ताम्रपट्ट पुजारी को प्रदान किया । जो कालान्तर मे उत्खनन मे मिला।

जंगली देवी मन्दिर मे नवरात्रि मे भारी भीड़ उमड़ती है, परिसर मे कई अन्य देव मन्दिर है । मन्दिर की व्यवस्थाओं का संचालन एक समिति करती है ।

4. भगवती बुद्धा देवी

कवित्वविद्या-सरसा-मुदारां, धनंजयां लब्धसुमेरुकूटाम्।
प्रभान्जनीं बाहुवलेन दुर्गा, प्रसन्न बुद्धां धवलां नमामि।।

कानपुर के खोयाबाज़ार/छप्पर मोहाल मे स्थित भगवती बुद्धा देवी का मन्दिर, ज्ञानदायिनी माँ के साधकों व भक्तों के लिए विशेष महत्त्व का है । मन्दिर की प्रधान प्रतिमा के स्थान पर कुछ प्रस्तर खंडितावशेष व एक द्वारशाखा है। दीवार पर भी एक प्रतिमा धात्विक पट्ट पर उत्कीर्णित है। मन्दिर परिसर मे कई अन्य देव मन्दिर भी है ।

मन्दिर के संदर्भ मे कहा जाता है कि इसकी स्थापना जनरलगंज के लाला बद्रीप्रसाद अग्रवाल ने कराया । पहले उस स्थान पर एक बगीचा व तालाब था जिसे लाला बद्रीप्रसाद ने खरीद लिया और बुद्धू माली को देखभाल की जिम्मेदारी सौंप दी। बुद्धू माली कही से यह मूर्तियाँ लाकर बगीचे मे रख पूजने लगा । बाद मे लाला बद्रीप्रसाद भी नियमित पूजन करने लगे। लाला जी के कोई सन्तान नही थी , इसी बीच उन्हें सन्तान प्राप्ति हुई। बस फिर क्या था लाला जी की देवी जी के प्रति और अधिक श्रद्धा बढ़ गयी,बाद मे भगवती ने स्वप्न देकर मन्दिर बनवाने का निर्देश दिया। लाला जी ने सन 1936 मे बगीचे देवी जी का मन्दिर बनवा दिया। लेकिन बुद्धू माली द्वारा स्थापित देवी प्रतिमा के कारण वह बुद्धा देवी के नाम से ख्यात हुआ। मन्दिर मे पूजन व कर्ताधर्ता आज भी बुद्धू माली के वंशज ही है। वर्तमान मे मन्दिर की देखभाल श्री बुद्धा देवी महारानी ट्रस्ट करता है जिसके संचालक लाला जी के वंशज हैं ।

मान्यता है कि भगवती बुद्धा देवी अपनी पाँच बहनो के साथ विराजमान है । बुधवार को ब्रत व पूजन के साथ सब्जियों को चढ़ाने से मनोकामना पूर्ण होने की जन-मान्यता है। नवरात्रि व बुधवार को भक्तों की भारी भीड़ रहती है।

5. भगवती काली देवी

भगवती परमाम्बा के विविध नाम व रूप साधकों के मध्य प्रचलित हैं । उनमें से भगवती का एक रूप काली का भी है, इस रूप मे उपासना सर्वाधिक बंग समाज मे प्रचलित हैं । कानपुर मे बंग समाज का पहला परिवार 1783 मे चन्द्रनगर से श्रीकृष्णचन्द्र मजूमदार का आया और जहाँ बसा वह बंगाली मोहाल व 1857 मे बंगाली किला कहलाया।

मान्यता है कि सैकड़ो वर्ष पूर्व कोलकाता के एक भक्त मुखर्जी परिवार को देवी जी का स्वप्न आया कि वह अब कानपुर जा रही हैं। भक्त मुखर्जी महाशय व्याकुलता मे कोलकाता से कानपुर को पैदल चल दिये और कई माह बाद कानपुर आ पाए। यहाँ पर उन्हें एक

महात्मा जी से भेंट हुई। महात्मा जी ने स्नान कर भगवती काली के पूजन का निर्देश दिया। भक्त मुखर्जी महाशय ने कहा मै पूजन विधि नही जानता हूँ । तो महात्मा जी ने कहा '-एइतो माएर पूजो कुर्ते पारिस एमोन भाबेई मायर पूजो कोर्बी'(जैसे माँ की पूजा करते हो, इसी तरह ही माँ की पूजा करना) इसके बाद जब मुखर्जी महाशय गंगा स्नान कर लौटे तो उन महात्मा जी की काफी खोज की लेकिन वह नही मिले ।

यहाँ पर भगवती काली की दक्षिणाभिमुख विशाल मूर्ति है। तन्त्र साधकों का आकर्षण का केन्द्र इस मन्दिर मे बलिप्रथा प्रचलित रही और बलिवेदी भी बनी है । कालीबाड़ी मे लोग मनौती के लिए ताला लगाते है और पूर्ण होने पर उसे खोलते है , परिसर में सैकड़ों ताले टंगे है ।

इसी प्रकार एक काली मठिया शास्त्रीनगर मे भी प्रसिद्ध हैं। मान्यता है कि मतइयापुरवा के ग्रामीणों ने नीम व पीपल पेड़ के नीचे छोटे से चबूतरे पर काली जी की मूर्ति स्थापित कर पूजन करते थे। आजादी के बाद जब वहाँ श्रमिक कालोनियाँ बनी तो भगवती काली के साधको मे ख्याति अधिक बढी । सन 1968 मे मन्दिर विस्तार की योजना से कार्य शुरू हुआ और फ़रवरी 1971 मे काली जी की प्रतिमा स्थापित हुई। मन्दिर का संचालन एक समिति के हाथो में है ।

6. भगवती आशा देवी

कानपुर के पश्चिमी भाग मे कल्याणपुर उपनगर मे अधिष्ठात्री शक्ति आशा माई जी का शक्तिपीठ विद्यमान है। यहाँ पर आशा माई खुले आसमान के नीचे प्रवास करती है। मन्दिर की छत डालने के कई प्रयास हुए लेकिन छत नही पड़ने दी। भगवती आशा देवी के नाम पर बहुत से मूर्तियों के खंडितवशेष पूजित व अर्चित हैं । आशा माई के नाम से एक लगभग पाँच फिट लम्बी शिला का पूजन होता है। परिसर मे दसवीं से पंद्रहवीं शती तक के मूर्ति खण्ड रखे हुए हैं । वर्तमान मे अब अन्य देव प्रतिमाएँ भी स्थापित है मन्दिर के कई वाह्य द्वार भी बनाये गये है । नवरात्रि मे भारी संख्यां मे श्रद्धालू दर्शन को आते हैं। परिसर मे ही रामलीला का मंचन भी 1968 से हो रहा है।

7. भगवती मुक्ता देवी

शालग्रामे महादेवी, शिवलिंगे जलप्रिया।
महालिंगे च कपिला, मकोटे मुकुटेश्वरी।।
(देवीभागवत 7/30/25)

भगवती सती द्वारा देहत्याग करने पर भावावेश मे भगवान शिव जी सती का पार्थिव शरीर कन्धे पर लेकर भटकने लगे । चिन्तित देवो के कहने पर भगवान विष्णु ने चक्र छोड़ कर अंगो का वेधन किया और वो अंग जहाँ गिरे वह शक्तिपीठ कहलाए । प्राचीन मकोट आज का मूसानगर है जहाँ पर भगवती मुक्ता देवी विराजमान है। कानपुर का इतिहास भाग 1 के अनुसार 'मूसानगर का पुराना नाम अवश्य मुक्तापुर रहा होगा क्योंकि यहाँ मुक्ता-देवी का एक अत्यन्त प्राचीन मन्दिर है। जनश्रुति के अनुसार इसका निर्माण त्रेतायुग में राजा बलि ने किया था। पर मन्दिर की शैली अवश्य मुसलमानों के भारत मे आने के पहले की है। मराठों के समय में पेशवाओं के पारिवारिक पुरोहित श्री पंडित गंगाधर ने मन्दिर का जीर्णोद्धार किया और कुछ नई इमारत बनवाई ।'

मन्दिर मे छोटे से द्वार से प्रवेश करने पर गर्भगृह मे मुक्ता देवी की प्रतिमा विराजमान है मन्दिर के पीछे एक यक्ष की प्रतिमा है। परिसर मे पैंथल साहब के संग्रह की बहुत सारी प्रतिमाएँ व खंडितावशेष रखे हैं जो शुंग, कुषाण, शक, गुप्त व मध्यकाल की है । यहाँ से नवपाषाण युग के आयुध व अभिलिखित इष्टिका व प्राचीन मृदभांड मिले है। यहाँ पर शुक्राचार्य जी की पुत्री की स्मृति लिए देवयानी सरोवर है।

8. भगवती कूष्माण्डा देवी

दुर्गासप्तशती मे आदि शक्ति के जिन रूपों व नामों का वर्णन है उनमे '**कूष्माण्डेति चतुर्थकम्**' अर्थात शक्तिस्वरूपा माँ का चौथा स्वरूप कूष्माण्डा है। कानपुर जनपद के घाटमपुर कस्बे के पूर्वी भाग मे भगवती कूष्माण्डा देवी का मन्दिर है। कानपुर का इतिहास भाग- 1 मे इस मन्दिर का उल्लेख कुड़हा देवी मन्दिर के रूप मे

मिलता है। भगवती के चौथे रूप कूष्माण्डा की प्रधान प्रतिमा लेटी हुई है जिसमे दोनो ओर सिर है और उदर एक है जिसके केन्द्र मे नाभि भाग उत्कीर्णित है।

मान्यता है कि इस स्थान पर सघन अरण्य था और कुड़हा नामक ग्वाला रोज गायों को चराने आता था। एक गाय जब शाम को दूध नही देने लगी तो कुड़हा ने पड़ताल की और पाया कि गाय एक स्थान पर दूध छोड़ देती हैं। कुड़हा ने उस स्थान को साफ कर खुदाई की तो भगवती कूष्माण्डा की प्रतिमा मिली। कुड़हा ने उसी स्थान पर चबूतरा बना कर देवी प्रतिमा को स्थापित कर दिया और इस प्रकार कुड़हा द्वारा स्थापित होने के कारण लोक मे कुड़हा देवी के नाम से वह प्रसिद्ध हुई । घाटमपुर के संस्थापक घाटमदेव जी भगवती कूष्माण्डा के परम भक्त थे और उन्होने उन्हे अपनी कुलदेवी के रूप मे स्वीकार किया । कालान्तर मे बंजरो ने एक छोटा मठ बनवा दिया बाद के मन्दिर का निर्माण चन्दीदीन भुर्जी ने संवत 1947 मे कराया। वर्तमान मे माँ कूष्माण्डा ज्योति समिति व नवयुवक संघ आरती व सौंदर्यीकरण के कार्यो का सम्पादन कराया। मन्दिर से सटा हुआ कूष्माण्डा सरोवर है। देवी कूष्माण्डा के चरणोद्क से नेत्रविकार दूर होने की भी मान्यता है । मन्दिर के पास ही भदरस मे भद्रकाली का मन्दिर है ।

9. भगवती सम्बहा देवी

लघुकाशी नाम से ख्यात ग्राम- मैथा, कानपुर जो पूर्व मे मातृस्थान फिर माईथान और मैथान के क्रम से मैथा बना। इस गांव की अधिष्ठात्री देवी भगवती सम्बहा देवी है। पौराणिक सन्दर्भो के मुताबिक शुम्भ-निशुम्भ नामक दैत्यो का बध करने के कारण देवी

शुम्भहा कहलाई इसी प्रकार भगवती शम्भुप्रिया व शाम्भवी का अपभ्रंश भी सम्बहा व शुम्भहा नाम माना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब व भक्तराज ध्रुव के पौत्र शम्भु की अधिष्ठात्री व पूजित व स्थापित सम्बहा व शुम्भहा के शक्तिपीठ की मान्यता है। उन्नीसवीं शती मे बने सम्बहा देवी मन्दिर की प्रतिमा बारहवीं शती की है । पुरातत्वविद डा एल एम वहल ने सम्बहा देवी प्रतिमा को संकर्षण की प्रतिमा माना था। मन्दिर मैथा के पश्चिमी भाग मे उँचे टीले पर है । नवरात्रि मे जवारों के साथ ही भक्तो की भारी भीड़ उमड़ती है और मेला भी लगता है। वर्तमान मन्दिर अवस्थी लोगो द्वारा बनवाया गया है। पंडित हरिहर दत्त मिश्र 'मित्र' की सन 1929 मे प्रकाशित कृति 'सुस्मृति-गान' मे सम्बहा देवी मन्दिर का वर्णन निम्नोक्त है।

यहाँ अवस्थी लोगों की जो अटल कीर्ति का द्योतक है ।
वह शुम्भहा शक्ति का मन्दिर उन्नत मस्तक अब तक है।।
क्वांर चैत्र के नवदुर्गो में लगता हैं मेला भारी ।
प्रिय प्रतिमा है देवी जी की है प्राकृतिक छटा प्यारी।। ❑

मातृस्वरूपा लक्ष्मी

- वैदिक साहित्य में 'श्री' अथवा 'लक्ष्मी' शब्द प्रयुक्त हुआ है ये शब्द अमूर्त ऐश्वर्य द्योतक थे। बाद में इन शब्दों का सम्बन्ध पूजित देवी से जोड़ दिया गया।
- कालिदास के रघुवंश में लक्ष्मी पद्महस्ता के रूप में वर्णित है। लक्ष्मी ऐश्वर्य से परिपूर्ण ही नहीं सौंदर्य की अधिष्ठात्री भी थी इसीलिए रूपवती नायिकाओं की तुलना लक्ष्मी से की जाती थी। पुराणों में नारायण को पुरुष तथा लक्ष्मी को प्रकृति का प्रतीक माना है विष्णु पुराण (1-8-143) में लक्ष्मी को विष्णु की सहायिका कहा गया है और उन्हीं की सहायता से विष्णु कोई भी कार्य करने में सफल होते हैं। लक्ष्मी को दत्तात्रेय की पत्नी भी कहा गया है।
- गुप्तकाल में साम्राज्य स्थापना, लोक धर्मों का समन्वय तथा व्यापार द्वारा धनोपार्जन एवं सौन्दर्य की उपासना की विशिष्टता के कारण लक्ष्मी की उपासना तथा प्रार्थना से धन प्राप्ति की आशा की जाती थी। लक्ष्मी की उपासना को बौद्ध एवं जैन धर्म ने भी ग्रहण किया है। बौद्ध बिहारों में हारीति के साथ लक्ष्मी की पूजा भी की जाती थी। भाग्य की शक्ति की तुलना नारी शक्ति से की गई और भाग्य को देवी के रूप में मान्यता मिली। यह भाग्य की देवी लक्ष्मी का ही पर्यायवाची है। ❑

भगवान विष्णु को समर्पित है अधिमास

प्रस्तुति – देवेन्द्र मिश्र, कानपुर

वशिष्ठ सिद्धांत के अनुसार भारतीय ज्योतिष सूर्य मास और चंद्र मास की गणना के अनुसार चलता है। अधिकमास चंद्र वर्ष का एक अतिरिक्त भाग है, जो हर 32 माह, 16 दिन और 8 घटी के अंतर से आता है। इसका प्राकट्य सूर्य वर्ष और चंद्र वर्ष के बीच अंतर का संतुलन बनाने के लिए होता है। भारतीय गणना पद्धति के अनुसार प्रत्येक सूर्य वर्ष 365 दिन और करीब 6 घंटे का होता है, वहीं चंद्र वर्ष 354 दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षों के बीच लगभग 11 दिनों का अंतर होता है, जो हर तीन वर्ष में लगभग 1 मास के बराबर हो जाता है। इसी अंतर को पाटने के लिए हर तीन साल में एक चंद्र मास अस्तित्व में आता है, जिसे अतिरिक्त होने के कारण अधिकमास का नाम दिया गया है।

भारतीय मनीषियों ने अपनी गणना पद्धति से हर चंद्र मास के लिए एक देवता निर्धारित किए। चूंकि अधिकमास सूर्य और चंद्र मास के बीच संतुलन बनाने के लिए प्रकट हुआ, तो इस अतिरिक्त मास का अधिपति बनने के लिए कोई देवता तैयार ना हुआ। ऐसे में ऋषि-मुनियों ने भगवान से आग्रह किया कि वे ही इस मास का भार अपने उपर लें। भगवान ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और इस तरह यह मल मास के साथ पुरूषोत्तम मास भी बन गया।

अधिकमास को पुरूषोत्तम मास कहे जाने का एक सांकेतिक अर्थ भी है। ऐसा माना जाता है कि यह मास हर व्यक्ति विशेष के लिए तन-मन से पवित्र होने का समय होता है। इस दौरान श्रद्धालुजन व्रत, उपवास, ध्यान, योग और भजन- कीर्तन- मनन में संलग्न रहते हैं और अपने आपको भगवान के प्रति समर्पित कर देते हैं। इस तरह यह समय सामान्य पुरूष से उत्तम बनने का होता है, मन के मैल धोने का होता है। यही वजह है कि इसे पुरूषोत्तम मास का नाम दिया गया है।

सनातन धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव पंचमहाभूतों जल, अग्नि, आकाश, वायु और पृथ्वी मिलकर बना है। अपनी प्रकृति के अनुरूप ये पांचों तत्व प्रत्येक जीव की प्रकृति न्यूनाधिक रूप से निश्चित करते हैं। अधिकमास में समस्त धार्मिक कृत्यों, चिंतन- मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से साधक अपने शरीर में समाहित इन पांचों तत्वों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस पूरे मास में अपने धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयासों से प्रत्येक व्यक्ति अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति और निर्मलता के लिए उद्यत होता है। इस तरह अधिकमास के दौरान किए गए प्रयासों से व्यक्ति हर तीन साल में स्वयं को बाहर से स्वच्छ कर परम निर्मलता को प्राप्त कर नई उर्जा से भर जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दौरान किए गए प्रयासों से समस्त कुंडली दोषों का भी निराकरण हो जाता है।❑

–9936160866

चतुर्भुज दर्शन

भगवान विष्णु के चार हाथों में चार अलंकरण- शंख, चक्र, गदा और पदम् हैं-

1. सुदर्शन चक्रः *'सु' का अर्थ है सुंदर। दर्शन व चक्र पूर्णता का प्रतीक है अर्थात कल्याण का पूर्ण दर्शन। सगुण रूप में अवतरित राम कृष्ण व अन्य महापुरुष स्वयं कल्याण का पूर्ण दर्शन देते हैं। (क) विवाह संबंध अर्थात वह पवित्र बंधन जिसके माध्यम से संतान की उत्पत्ति होती है। (ख) परिवार व्यवस्था अर्थात् पत्नी व बच्चों से परिवार बनता है। वह पति-पत्नी से दादा-दादी बनते हैं तथा भाई-बहन, माता-पिता, पति पत्नी के संबंध पारिवारिक संबंध है जिनमें प्रेम भावना की प्रधानता होती है। ऐसे संयुक्त परिवार में प्रेम पूर्वक रहना इस दर्शन की दूसरी व्यवस्था है। (ग) ग्राम पंचायत व्यवस्था अर्थात अनेक संयुक्त परिवारों से मिलकर एक ग्राम बनता है, जिसकी व्यवस्था के लिए ग्राम पंचायत बनाई गई। ग्राम पंचायत ने ग्रामीण कार्य-रोजगार को श्रम विभाजन के आधार पर अनेक धंधों की व्यवस्था की जो आज जाति व्यवस्था के रूप में विद्यमान है। जाति व्यवस्था ग्रामीण कार्यों का बंटवारा ही है ताकि ग्राम के सभी कार्य सुचारू रूप से आपसी सहयोग की भावना से चलते रहें। ग्राम के संसाधनों में लोगों को रोजगार देना, उत्पादित माल की व्यवस्था व उपभोग हेतु न्यायपूर्ण वितरण। भूमि, उद्योग पर व्यक्तिगत नियंत्रण नहीं होता क्योंकि व्यक्तिगत नियंत्रण के कारण अन्याय होता है। पंचायतों की ऐसी भूमिका से ही समाज की रचना होती है। वहां संपूर्ण न्याय व सुरक्षा मिलती है।*

2. शंखः *शंख विश्व जागरण का प्रतीक है। जब यह पूर्ण दर्शन विश्व के जन-जन तक पहुंच जाता है तब विश्व के लोगों के समर्थन व सहयोग से ही ऐसे कल्याणकारी विश्व व्यवस्था की धर्म रूप व्यवस्था हो जाती है।*

3. गदाः *गदा ग्लोब का प्रतीक है। विश्व एकता के बल का प्रतीक है। भगवान द्वारा दिए गए पूर्ण दर्शन के द्वारा किए गए जन जागरण से एकमतता व विश्व एकता के बल की प्राप्ति होती है। इसी बल के द्वारा हम एक कल्याणकारी व्यवस्था की स्थापना कर सकते हैं।*

4. पद्मः *पद्म का अर्थ है मुक्ति अर्थात अमृत की प्राप्ति। भगवान के चतुर्भुज दर्शन से जन जागरण विश्व एकता का बल मिल जाता है। सत्य का ज्ञान स्वयं भगवान देते हैं जिससे शिव कल्याणकारी धर्म व्यवस्था की स्थापना होती है। यही सुंदर है। ऐसे सुंदर विश्व में दूषण नहीं रहता, अन्याय, बुराइयां, पाप, हिंसा नहीं रहती। विश्व अवध, अहिंसक बन जाता है। ऐसे सुंदर विश्व में ही मोक्ष अमृत की प्राप्ति संभव है। आत्मकल्याण संभव है और यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।*❑

दीपावली विशेष :

आलोक पर्व की ज्योतिर्मयी देवी लक्ष्मी

(आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक ऐसे वांग्मय पुरुष थे, संस्कृत जिनका मुख, प्राकृत बाहु, अप्रभ्रंश जघन और हिन्दी पाद था। उक्त निबन्ध उनके ललित निबन्ध 'आलोक पर्व' में से साभार प्रस्तुत हैं। - सं:)

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार समस्त सृष्टि की मूलभूत आद्याशक्ति महालक्ष्मी है। वह सत्व, सज और तम तीनों गुणों का मूल समवाय है। वही आद्याशक्ति है। वह समस्त विश्व में व्याप्त होकर विराजमान है। वह लक्ष्य और अलक्ष्य, इन दो रूपों में रहती है। लक्ष्य रूप में यह चराचर जगत ही उसका स्वरूप है और-अलक्ष्य रूप में यह समस्त जगत् की सृष्टि का मूल कारण है। उसी से विभिन्न शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है।

दीपावली को इसी महालक्ष्मी का पूजन होता है। तामसिक रूप में वह क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कालरात्रि, महामारी के रूप में अभिव्यक्त होती है, राजसिक रूप में वह जगत् का भरण-पोषण करने वाली 'श्री' के रूप में उन लोगों के घर में आती है, जिन्होंने पूर्व-जन्म में शुभ कर्म किए होते हैं, परन्तु यदि इस जन्म में उनकी वृत्ति पाप की ओर जाती है, तो वह भयंकर अलक्ष्मी बन जाती है। सात्विक रूप में वह महाविद्या, महावाणी, भारती वाक्, सरस्वती के रूप में अभिव्यक्त होती है। मूल आद्याशक्ति ही महालक्ष्मी है।

शास्त्रों में भी ऐसे वचन मिल जाते हैं, जिनमें महाकाली या महासरस्वती को ही आद्याशक्ति कहा गया है। जो लोग हिन्दू शास्त्रों की पद्धति से परिचित नहीं होते, वे साधारणतः इस प्रकार की बातों को देखकर कह उठते हैं कि यह 'बहुदेववाद' है। यूरोपियन पंडितों ने इसके लिए 'पालिथीज़्म' शब्द का प्रयोग किया है। पालिथीज़्म या बहुदेववाद से एक ऐसे धर्म का बोध होता है, जिसमें अनेक छोटे-देवताओं की मण्डली में विश्वास किया जाता है। इन देवताओं की मर्यादा और अधिकार निश्चित होते हैं। जो लोग हिन्दू शास्त्रों की थोड़ी भी गहराई में जाना आवश्यक समझते हैं, वे इस बात को कभी नहीं स्वीकार कर सकते। मैक्समूलर ने बहुत पहले बताया था कि वेदों में पाया जानेवाला 'बहुदेववाद' वस्तुतः बहुदेववाद है ही नहीं, क्योंकि न तो वह ग्रीक-रोमन बहुदेववाद के समान है, जिसमें बहुत-से देव-देवी एक महादेवता के अधीन होते हैं और न अफ्रीका आदि देशों की आदिम जातियों में पाए जानेवाले बहुदेववाद के समान है जिसमें छोटे-मोटे अनेक देवता स्वतन्त्र होते हैं। मैक्समूलर ने इस विश्वास के लिए एक शब्द सुझाया था-हेनोथीज्म, जिसे हिन्दी में 'एकैकदेववाद' शब्द से

राष्ट्र के लिए ही लक्ष्मी का अर्जन और अर्चन हो।

धन माहुः परं धर्म धनैं प्रतिष्ठितम्।

जीवंति धनिनो लोके मृतायेत्वधना नराः।। (महा भा. 5-72-23)

धन तो सबसे बड़ा धर्म है, क्योंकि धन में ही सब कुछ है। संसार में धनवान ही जीवित है। जो निर्धन हैं उनको तो मरा हुआ ही समझो। हमारे पुराणों में लक्ष्मी केवल सौदर्य और ऐश्वर्य की ही देवी नहीं है वह मंगल की भी देवी है सौंदर्य मूर्ति ही पूर्ण मूर्ति है और मंगल मूर्ति ही सौंदर्य का पूर्ण स्वरूप है।

त्यागः संत्यश्च सौचश्च यत्र एते महागुणः।

यः प्राप्नोति गुणानेतान श्रद्धावान सच मे प्रियः।।

जो त्यागी सत्याचरण करने वाला और पवित्रता जैसे महागुणों का धनी है ऐसे श्रद्धावान पुरुष ही लक्ष्मी को प्रिय होते हैं जो धर्म शील हैं, जितेन्द्रिय है। विद्या विनीत हैं परोपकारी हैं। घमण्डी नहीं है लोगों के प्रति प्रेम भाव रखने वाला है उस पुरुष में मैं (लक्ष्मी) वास करती हूँ।

यदि आप ऐश्वर्यशली होना चाहते हैं तो अधिक निन्द्रा, तन्द्रा, भय क्रोध, ईर्ष्या एवं आलस्य और दीर्घ सूत्रता (जल्दी के कामों में देर लगाने की आदत) छोड़ दें।

लक्ष्मी की कृपा उसी पर होती है जो या भाग्यशाली हों या प्रतिभा का धनी अथवा रात-दिन एक कर देने वाला जीवट का व्यक्ति हो परन्तु ऐसे व्यक्ति विरले ही होंगे जिनमें ये तीनों विशिष्टतायें हों सतत परिश्रम अध्यवसाय और उचित व्यवसाय का चयन।

धन उसके पास नहीं है जिसके पास वह है बल्कि उसके पास है जो उसका उपयोग करता है।

जो धन जल्दी कमाया जाता है वह जल्दी समाप्त भी हो जाता है लेकिन जो धीरे-धीरे कमाया जाता है वह बढ़ता जाता है।

जो मनुष्य काम को प्यार नही करता, बल्कि पैंसे के लिए काम करता है वह न तो पैसा ही कमा पाता है और न जिन्दगी का आनन्द ले सकता है।

अज्ञानी के पास दौलत ऐसे है जैसे गोबर के ढेर पर हरियाली- मैंने आज तक कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जो प्रतिदिन जल्दी उठते ही मेहनत करता हो और ईमानदारी से रहता हो और फिर दुर्भाग्य की शिकायत करता हो। - एडिसन। ❑

कुछ-कुछ स्पष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार के धार्मिक विश्वास में अनेक देवता की उपासना होती अवश्य है, पर जिस देवता की उपासना चलती रहती है, उसे ही सारे देवताओं से श्रेष्ठ और सबका हेतुभूत माना जाता है। जैसे जब इन्द्र की उपासना का प्रसंग होगा, तो कहा जाएगा कि इन्द्र ही आदि देव हैं, वरुण, यम, सूर्य, चन्द्र, अग्नि सबका वह स्वामी है और सबका मूलभूत है। पर जब अग्नि की उपासना का प्रसंग होगा तो कहा जायेगा कि अग्नि ही मुख्य देवता है और इन्द्र, वरुण आदि का स्वामी है और सबका मूलभूत देवता है, इत्यादि।

परन्तु थोड़ी और गहराई में जाकर देखा जाये तो इसका स्पष्ट रूप अद्वैतवाद है। एक ही देवता है, जो विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है। उपासना के समय उसके जिस विशिष्ट रूप का ध्यान किया जाता है, वही समस्त अन्य रूपों में मुख्य और आदिभूत माना जाता है। इसका रहस्य यह है कि साधक सदा मूल अद्वैत सत्ता के प्रति सजग रहता है। अपनी रुचि और संस्कारों और कभी-कभी प्रयोजन के अनुसार वह उपास्य के विशिष्ट रूप की उपासना अवश्य करता है, परन्तु शास्त्र उसे कभी भूलने नहीं देना चाहता कि रूप कोई हो, है वह मूल अद्वैत सत्ता की ही अभिव्यक्ति। इस प्रकार हिन्दू शास्त्रों की इस पद्धति का रहस्य यही है कि उपास्य वस्तुतः मूल अद्वैत सत्ता का ही रूप है। इसी बात को और भी स्पष्ट करके वैदिक ऋषि ने कहा था कि जो देवता अग्नि में है, जल में है, वायु में है, औषधियों में है, वनस्पतियों में है, उसी महादेव को मैं प्रणाम करता हूँ!

आज से कोई दो हज़ार वर्ष पहले से इस देश के धार्मिक साहित्य में और शिल्प और कला में यह विश्वास मुखर हो उठा है कि उपास्य वस्तुतः देवता की शक्ति होती है। यह नहीं है कि यह विचार नया है, पहले था ही नहीं, पर उपलब्ध धार्मिक साहित्य और शिल्प और कला-सामग्री में यह बात इस समय से अधिक व्यापक रूप में और अत्यधिक मुखर भाव से प्रकट हुई दिखती है। इस विश्वास का सबसे बड़ा आवश्यक अंग यह है कि शक्ति और शक्तिमान् में कोई तात्विक भेद नहीं है, दोनों एक हैं।

चन्द्रमा और चन्द्रिका की भाँति वे अलग-अलग प्रतीत होकर भी तत्वतः एक हैं-अन्तर नैव जानी मश्चन्द्र-चन्द्रिकयोरिव। परन्तु उपास्य शक्ति ही है। जो लोग इस विश्वास को अपनी तर्कसम्मत सीमा तक खींचकर ले जाते हैं, वे शक्त कहलाते हैं। जो शक्ति और शक्तिमान् के एकत्व पर अधिक ज़ोर देते हैं, वे शाक्त नहीं कहलाते। मगर कहलाते हों या न कहलाते हों, शक्ति की उपास्यता पर विश्वास दोनों का है। जिन लोगों ने संसार की भरण-पोषण करनेवाली वैष्णवी शक्ति को मुख्य रूप से उपास्य माना है, उन्होंने उस आदिभूता शक्ति का नाम 'महालक्ष्मी' स्वीकार किया है। दीपावली के पुण्य-पर्व पर इसी आद्याशक्ति की पूजा होती है। देश के पूर्वी हिस्सों में इस दिन महाकाली की पूजा होती है। दोनों बातों में कोई विरोध नहीं है। केवल रुचि और संस्कार के अनुसार आद्याशक्ति के विशिष्ट रूपों पर बल दिया जाता है। पूजा आद्याशक्ति की ही होती है। मुझे यह ठीक-ठीक नहीं मालूम कि देश के किसी कोने में इस दिन महासरस्वती की पूजा होती है या नहीं। होती हो तो कुछ अचरज की बात नहीं होगी। दीपावली का पर्व आद्याशक्ति के विभिन्न रूपों के स्मरण का दिन है।

यह सारा दृश्यमान जगत् ज्ञान, इच्छा और क्रिया के रूप में त्रिटुपीकृत है। ब्रह्म की मूल शक्ति में इन तीनों का सूक्ष्म रूप में अवस्थान होगा। त्रिपुटीकृत जगत की मूल कारणभूता इस शक्ति को 'त्रिपुरा' भी कहा जाता है। आरम्भ में जिसे महालक्ष्मी कहा गया है उससे यह अभिन्न है। ज्ञान रूप में अभिव्यक्त होने पर सत्वगुणप्रधान सरस्वती के रूप में, इच्छा रूप में रजोगुण प्रधान लक्ष्मी के रुप में और क्रिया रुप में तमोगुण-प्रधान काली के रुप में उपास्य होती है। लक्ष्मी इच्छा रूप में अभिव्यक्त होती है। जो साधक लक्ष्मी रूप में आद्याशक्ति की उपासना करते हैं, उनके चित्त में इच्छा तत्व की प्रधानता होती है, पर बाकी दो तत्व-ज्ञान और क्रिया-भी उसमें सहायक होते हैं। इसीलिए लक्ष्मी की उपासना 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' होती है, अर्थात् वह ज्ञान द्वारा चालित और क्रिया द्वारा अनुगमित इच्छा-शक्ति की उपासना होती है। 'ज्ञानपूर्वा क्रियापरा' का मतलब है कि यद्यपि इच्छा-शक्ति ही मुख्यतया उपास्य है, पर पहले ज्ञान की सहायता और बाद में क्रिया का समर्थन इसमें आवश्यक है। यदि उल्टा हो जाये, अर्थात् इच्छा शक्ति की उपासना क्रियापूर्वा और ज्ञानपरा हो जाये, तो उपासना का रूप बदल जाता है। पहली अवस्था में उपास्या लक्ष्मी समस्त जगत् के उपकार के लिए होती है। उस लक्ष्मी का वाहन गरुड़ होता है। गरुड़ शक्ति, वेग और सेवावृत्ति का प्रतीक है। दूसरी अवस्था में उसका वाहन उल्लू होता है। उल्लू स्वार्थ, अन्धकारप्रियता और विच्छिन्नता का प्रतीक है।

लक्ष्मी तभी उपास्य होकर भक्त को ठीक-ठीक कृतकृत्य करती है। तब उसके चित्त में सबके कल्याण की कामना रहती है। यदि केवल अपना स्वार्थ ही साधक के चित्त में प्रधान हो, तो वह उलूकवाहिनी शक्ति की ही कृपा पा सकता है। फिर तो वह तमोगुण का शिकार हो जाता है। उसकी उपासना लोकल्याण-मार्ग से विच्छिन्न होकर बन्ध्या हो जाती है। दीपावली प्रकाश का पर्व है। इस दिन जिस लक्ष्मी की पूजा होती है, वह गरुड़वाहिनी है-शक्ति, सेवा और गतिशीलता उसके मुख्य गुण हैं। प्रकाश और अन्धकार का नियत विरोध है। अमावस्या की रात को प्रयत्नपूर्वक लाख-लाख प्रदीपों को जलाकर हम लक्ष्मी के उलूकवाहिनी रूप की नहीं, गरुड़वाहिनी रूप की उपासना करते हैं। हम अन्धकार का, समाज से कटकर रहने का, स्वार्थपरता का प्रयत्नपूर्वक प्रत्याख्यान करते हैं और प्रकाश का, सामाजिकता का और सेवावृत्ति का आह्वान करते हैं। हमें भूलना न चाहिए कि यह उपासना ज्ञान द्वारा चालित और क्रिया द्वारा अनुगमित होकर ही सार्थक होती है।❑

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है 'छठ' पर्व

– डॉ देवराज चौबे, ज्योतिष एवं वास्तुविद

वैश्विक महामारी की आपदा के चलते हम वैयक्तिक रूप से, पारिवारिक, सामाजिक व सामुदायिक रूप से अपनी रोजमर्रा की जीवन चर्या को पुनः परिभाषित तथा विश्लेषित करने के लिए बाध्य हुए हैं। बाजारवाद, आधुनिकतावाद एवं तथाकथित विकास की अंधी दौड़ ने हमारे पर्व, त्योहारों, अनुष्ठानों के वास्तविक सात्विक एवं वैज्ञानिक स्वरूप को लगभग निगल सा लिया है।

यदि परंपरा और पद्धति को बारीकी से देखें तो छठ पर्व पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने का सामुदायिक पर्व है। यह पूरी तरह से पर्यावरण हितैषी लोक पर्व है। सनातन धर्म में छठ एक ऐसा पर्व है जिसमें किसी प्रतिमा या मंदिर की नहीं बल्कि प्रकृति यानी सूर्य, धरती और जल की पूजा होती है।

पंच देवताओं में प्रत्यक्ष देव सूर्य को समर्पित यह पर्व हमें स्वच्छता, समानता, सौहार्द एवं सहभागिता का महत्वपूर्ण संदेश देता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हर व्यक्ति में सूर्य है, चंद्रमा है, नक्षत्र हैं, ऋतुयें हैं। वह हमारे भीतर के सामंजस्य, पवित्रता, चरित्र, स्वभाव तथा रंग को दर्शाती है। 'चंद्रमा मनसो जाताः', जिस प्रकार चंद्रमा की शीतलता को मन से जोड़ा जाता है, उसी तरह तेजस्विता को सूर्य से जोड़कर देखना चाहिए। सूर्य स्वास्थ्य का हेतु है। महापर्व 'छठ' में एक ओर जहां लोक-मन की सहजता है तो दूसरी ओर वैज्ञानिकता को सबल करने वाली आस्था भी है। तथ्य है कि इस धरा पर शाश्वत ऊर्जा का स्रोत सूर्य ही है। जिससे धरती पर वनस्पति और जीव जंतुओं को ऊर्जा मिलती है।

सूर्य देव हमें न सिर्फ ऊष्मा और जीवन में रंग प्रदान करते हैं बल्कि वह हमारे दुख-सुख के साथी भी हैं। इसलिए सूर्य को दिए जाने वाले अर्घ्य से हम अपने अंदर की जीवन अग्नि को भी प्रज्ज्वलित करते हैं।

श्रद्धा रहित जीवन भी कोई जीवन है। चढ़ते और उतरते सूर्य दोनों को प्रणाम करने का अर्थ है कि हम समभाव से किसी के उत्कर्ष व अपकर्ष में साथ बने रहते हैं। छठ का सूरज लोक मन के घर आंगन में उतर आता है। पर्यावरण संरक्षण, रोग निवारण और अनुशासन का यह पर्व हमारी संस्कृति संवेदना परंपराओं और लोकजीवन का जीवंत रूप है।

छठ चांदनी तानने और उस चांदनी के भीतर परिवार के चिरागों को नेह के आंचल की छाया देने का पर्व है। यह भी सुखद तथ्य है कि छठ पर आधुनिकता और बनावटीपन का कोई असर नहीं है। यह पर्व आज भी अपने असली स्वरूप में मौजूद है।

यह दो ऋतुओं के संक्रमण काल में शरीर को पित्त, कफ और वात की व्याधियों से निरापद रखने के लिए एक आयोजित अवसर है। बदलते मौसम में सुबह जल्दी उठना और सूर्य की पहली किरण को जलाशय से टकराकर अपने शरीर पर लेना एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सूर्य की किरणों से मिलने वाला विटामिन डी कैल्शियम को पचाने में मदद करता है। तप, व्रत से रक्तचाप नियंत्रित होता है और सतत ध्यान से नकारात्मक विचार मन मस्तिष्क से दूर रहते हैं।

नदियों से छठ का गहन रिश्ता है। जल जीवन है। पूरे विश्व में दो तिहाई जल ही है। संसार की रचना वैज्ञानिक ढंग से जल-थल-नभ के दुर्लभ संयोग से संपन्न हुई है। शरीर में जल का हिस्सा बहुतायत में है। जल को शुद्ध बनाए रखना आवश्यक है। यदि हम संवेदनशील नहीं हुए और इसी तरह जल, वायु तथा पृथ्वी प्रदूषित होती रही तो हम रहेंगे कहां? जल-निधियों की पवित्रता, स्वच्छता के संदेश को आस्था के साथ, व्यवहारिक पक्षों के साथ लोकरंग में पिरोया जाए, लोगों को अपनी जड़ों की ओर लौटने को प्रेरित किया जाए, तो यह पर्व अपने आधुनिक रंग में जीवन को बेहतर बनाने का कारगर उपाय हो सकता है।

यदि हर साल छठ पर्व पर देश भर में नए तालाब खोदने और पुराने तालाबों को संरक्षित करने का संकल्प हो, उसमें गंदगी जाने से रोकने का उपक्रम हो, नदियों के घाट पर साबुन, प्लास्टिक और अन्य गंदगी न ले जाने की शपथ हो, तो छठ के असली प्रताप और प्रभाव को देखा जा सकता है।

छठ पर्व नैसर्गिक जल-निधियों की चिंता करने और पर्यावरण को पोषित करने का अवसर भी है। जिस जल में महिलाएं पूजा के लिए खड़ी रहती हैं, वह इतना दूषित होता है कि संक्रमण की आशंका बनी रहती है।

छठ पर्व को कृषि-संस्कृति का उपहार मानना चाहिए। कृषि को बचाने का प्रयत्न भी आवश्यक है। कोरोनाकाल में हुए लॉकडाउन से प्रभावित भारत की अर्थव्यवस्था को तथा गरीब किसानों, प्रवासी श्रमिकों के लिए जीवन-रेखा बने कृषि उद्योग की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। छठ पर्व में इस्तेमाल प्रत्येक वस्तु पर्यावरण को पवित्र रखने का उपक्रम होती है। बांस का बना सूप, दौरा, टोकरी, मउनी और मिट्टी से बना दीप,पंचमुखी दिया, हाथी और कंदमूल और फल जैसे ईख, सेब, केला, संतरा, नींबू, नारियल, अदरक, हल्दी, सिंघाड़ा, चना, चावल इत्यादि।

लोक आस्था का पर्व छठ प्रकृति का पर्व है। इसे हर जाति के लोग राजा-रंक सब एक ही घाट पर इकट्ठा होकर श्रद्धा और विश्वास के साथ मनाते हैं। 'छठ' लोक का पर्व इसलिए है क्योंकि इसमें हमारी लय, हमारी संस्कृति, हमारे लोकगीत, हमारे संदर्भ, हमारी सभ्यता जुड़ी है। इसीलिए लिए यह हमारी अस्मिता भी बन गया है। कठिनतम व्रत से प्रसन्न होकर सूर्य देव कहते हैं- ***'मांगू मांगू तिरिया जेहो किछु मांगव, जे किछु हृदय में समाए'***। छठ पूजा के अनुष्ठान में गाये जाने वाले परंपरागत गीत इस बात को दर्शाते हैं कि लोग पशु पक्षियों के संरक्षण की याचना कर उनके अस्तित्व को कायम रखना चाहते हैं। ढोलक-मंजीरा बजा कर अपने पारंपरिक गीतों या मौखिक ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का उपक्रम भी होता है।❑ –9818764101

धन के स्वामी कुबेर

कुबेर को यक्षों का राजा माना गया है तथा हिमालय पर अवस्थित अलकापुरी उनकी राजधानी बतायाी गयी है। हिन्दू कुबेर को धन का स्वामी समझते है और देवता की तरह पूजते हैं। रामायण में पुलत्स्य ऋषि का पुत्र कहा गया है। महाभारत वन पर्व के अनुसार ब्रह्मा वैश्रवण पर अत्यन्त प्रसन्न थे उन्होंने उन्हें अमरत्व प्रदान किया, धन का स्वामी और लोक पाल बनाया। शिवजी से उनकी मित्रता कराई और नलकूवर नामक पुत्र दिया। इतना ही नहीं ब्रह्मा ने कुबेर को यक्षों का स्वामी भी बना दिया और 'राज राज' की उपाधि प्रदान की।

ऐसा प्रतीत होता है यक्ष एक जाति थी, जो जन मानस में देवता की भांति प्रतिष्ठित थी। आज भी वीर ब्रह्म के नाम से उनके चबूतरे मिलते हैं। स्त्रियां इनकी पूजा करती और मनौती मनाती हैं।❑

गौवर्द्धन की लोक पूजा

गोबर से मानवाकाार आकृति जिसका एक हाथ ऊपर की ओर उठा होता हैं। जो गिरिराज धारण का प्रतीक है उसके चारों ओर रुई के फाहे लगी हुई सीके गाड़ दी जाती है जो गिरिराज के वृक्षों को सूचित करती हैं। टूँढ़ी में बड़ा सा छेद बनाकर उसमें दूध दही, शहद, खील बताशे भरे जाते है। सिर की ओर दीपक जलाया जाता है। गूजरी, ग्वालिन रई, मथनिया, चूल्हा चक्की बना दिये जाते है।

'बोल श्री गिरि महाराज की जय'
गोवर्द्धन रेत आयौ गंगा पार ते और उतरयो जमुना पार।
आज रहै रे काहू गैल में और मोर सखिन के द्वार।।
गोवर्द्धन रे सबरू तू बड़ी और तो ते बड़ी न कोई।
अरे, तू तौ पुजायो श्रीकृष्ण ने, तोइ को नहि जानत होइ।।
बोल श्री गिरि राज महाराज की जय।❑

शुभकामनाओं सहित-

स्वमेव ब्राह्मणों भुक्ते, स्वंवस्ते, ददाति च।
आनुशस्याद ब्राह्मणस्य भुञ्जते ही तरे जनाः।।
ब्राह्मण अपना खाता है, अपना पहनता है, अपना ही (दूसरों का) दान करता है। दूसरे लोग उसी की कृपा से सब उपयोग करते हैं।

डॉ सुरेश चन्द्र पचौरी

अध्यक्ष : ब्रह्म-चेतना, फरीदाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : विश्व ब्राह्मण संघ
उपाध्यक्ष : कान्यकुब्ज समाज, फरीदाबाद

सम्पर्क : 9810445762

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर आंदोलन के योद्धा

सिंहपुरुष श्रीशचन्द्र दीक्षित

श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन सहस्त्रों रामभक्तों के संघर्ष, समर्पण, त्याग और बलिदान की लंबी गाथा है। अंतिम चरण में संघर्षरत अनेकों रामभक्त स्मृतिशेष हो गए। इन्हीं में से एक अविस्मरणीय नाम है उप्र के पुलिस मुखिया व 10वीं लोकसभा में वाराणसी के सांसद श्रीशचंद्र दीक्षित का, जिन्होंने सैकड़ों कारसेवकों को पुलिस की गोलियों का शिकार होने से बचाया।

जिला रायबरेली के गांव सोतवा खेड़ा में जन्में कीर्तिशेष श्रीशचंद्र दीक्षित (3/1/1926 - 8/4/2014) लखनऊ विवि से परास्नातक व कानून की डिग्री लेने के बाद भारतीय पुलिस सेवा में आ गए थे। पुलिस मेडल व राष्ट्रपति से सम्मानप्राप्त पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के सुरक्षा अधिकारी भी रहे।

श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन के अंतिम चरण की शुरुआत हो चुकी थी। अशोक सिंघल, गिरिराज किशोर, आचार्य धर्मेंद्र, महंत अवैधनाथ, बाला साहब देवरस जैसे निस्पृह रामभक्तों ने नेतृत्व सम्भाला। ऐसे समय में उप्र पुलिस महानिदेशक के पद से वर्ष 1984 में अवकाश प्राप्त करने के बाद श्रीशचंद्र दीक्षित भी विश्वहिंदू परिषद से जुड़ गए। हिन्दू संस्कृति के पोषण, संरक्षण और संवर्धन में दीक्षित जी की बेजोड़ संकल्पशीलता तथा संगठन, प्रशासन, नेतृत्व की विशिष्ट क्षमता एवं निर्दिष्ट लक्ष्य के प्रति उद्यमशीलता को परखते हुए विश्वहिंदू परिषद ने अपना उपाध्यक्ष चयनित किया। विश्वहिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल जी के अनन्य विश्वासपात्र रहे।

1989 के प्रयाग कुम्भ की धर्मसंसद में श्रीरामजन्मभूमि शिलान्यास की घोषणा का संकल्प दोहराया गया। वृन्दावन में परमपूज्य देवराहा बाबा से प्राप्त अशीर्वादस्वरूप पांच ईंटों को सिर पर रख श्री दीक्षित जी ने देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की। रामभक्तों से शिलापूजन करवाया। इस कार्य में पत्नी श्रीमती उमा दीक्षित का साथ मिला।

मुख्यमंत्री रहते हुए श्री मुलायमसिंह यादव इनकी संगठन निपुणता, नेतृत्वक्षमता तथा रणनीति कुशलता से भय खाते। अक्टूबर 1990 के श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन के कारसेवकों के नायकों में अशोक सिंघल, आचार्य धर्मेंद्र, उमा भारती के साथ आप अग्रिम पंक्ति में थे। 'अयोध्या में परिंदा भी पर नहीं मार सकता' मुख्यमंत्री की चुनौती के बावजूद कारसेवकों को निर्बाध अयोध्या लाने की जिम्मेदारी उठाई। 30 अक्टूबर 1990 को हनुमानगढ़ी जाते समय राज्यसरकार ने पुलिस से गोली चलवा दी। पांच कारसेवक बलिदान हुए। अपने पूर्व पुलिस प्रमुख को सामने देख एकबारगी तो पुलिस की बन्दूकों के स्टिगर थम गये वरना न जाने कितने कारसेवकों को अपने प्राण गवांने पड़ते।

दीक्षित जी श्रीरामजन्मभूमि न्यास में भी सक्रिय सदस्य थे। 1991 लोकसभा चुनाव में भाजपा के टिकट से चुनाव लड़कर वाराणसी की सीट को पहली बार भाजपा के खाते में डालने का गौरव प्राप्त किया था। ❑

चित्र में बायें सेः- जस्टिस देवकीनन्दन अग्रवाल, महंत नृत्यगोपालदास, परमहंस महंत रामचन्द्र दास, स्वामी चिन्मयानंद, महंत अवैद्य नाथ, अशोक सिंघल, श्रीशचन्द्र दीक्षित, दाउ दयाल खन्ना एवं के वी सुन्दरराजन

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्

– डॉ सुरेश चंद्र पचौरी, फरीदाबाद

चार्वाक कहते हैं - जीवन तो सुखपूर्वक जीने की एक धरोहर है। सुख का अर्थ है (सु+ख) - खुला हुआ आकाश। सुख से जियो यानि लोकबद्ध होकर जियो। पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन पश्चात आपका अपना वह है जो आपको अपना समझता है। जिम्मेदारियाँ पूरी करते-करते शरीर जीर्णावस्था को प्राप्त करने लगता है। धीरे-धीरे आत्मा के साथ सम्बंध स्थापित करे, उसी का प्रयास करें, उसी की साधना करें। परमसत्ता आपको अपनी तरफ खीचे, उससे पहले ही उसके नजदीक जाने का प्रयास करें। एक-एक करके स्वयम् को गार्हस्थिक कार्मों से मुक्त करते चले। शारीरिक शिथिलता को स्वीकार करने से मानसिक तनावों को कम करने में सफलता मिलेगी।

काम जल्दी करते हुए बार-बार घड़ी की ओर देखना और घबड़ाना अपना स्नायु तंतुओं को रोगों के हवाले करने के समान है। आप हर काम मध्यम गति से पूर्णतः समझदारी और आनन्द के साथ करें।

शेख सादी कहते है- 'उदार बन, खुशमिजाज बन, क्षमावान बन जिस तरह कि कुदरत की मेहरबानियाँ तुझ पर बरसी है तू औरों पर बरसा'।

छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित न हो, कुढे नहीं, सहज रहना अधिक प्रभावकारी है, जिन्दगी जीने के लिए मिली है, मर-मरकर या रो-रोकर काटने के लिए नहीं। जो जीवन में रुचि लेता है उसे जीने का अधिकार नहीं है वह तो जिन्दगी के बोझ को ढोने वाला दयनीय पशु है।

जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है आकांक्षाओं और क्षमता में समन्वय आवश्यक है। प्रकृति के संग रहने, सदा शुभ चिन्तन करने और हर परिस्थिति में अपने को उसके अनुकूल बनाने की आदत डालिए। तिल जैसी समस्या को ताड़ जैसा बनाने की भूल न करे।

बचिये अत्यधिक महत्त्वाकांक्षाओं से, कम से कम समय में अधिक से अधिक कार्य करने की अदम्य इच्छा से, अनियमित भोजन और अपूर्ण विश्राम से। कठिनाइयों की आशंका से घुल-घुलकर मत मरिये, निषेधात्मक विचारों की छाया से बचिये। मनुष्य सोचता बहुत कुछ है, मगर पाता बहुत कम है। उसके स्वप्न और उसकी उपलब्धियों के बीच बहुत बड़ी खाई बन गई है।

मानसिक तनाव, घुटन, चिड़चिड़ापन आदि खाली मस्तिष्क की देन है। उद्देश्यहीन जीवन से किसी काम में जी नही लगता, वह भीतर से टूटने लगता है और तनावों का शिकार हो जाता है। सदा रोते रहने का स्वभाव मनुष्य को दयनीय बना देता है। तनाव अनेक रोगों की जड़ है। रक्तचाप इसका जुड़वां भाई है। हृदय रोग, गुर्दों की खराबी की आशंका भी रहती है मानसिक विक्षिप्तता तनाव की अगली सीढ़ी है। ❑

–9510445762

सभा संगठन

- समाज का हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहे तो किसी को भी अपने अधिकार के लिए लड़ने झगड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा किसी और के कर्तव्यों के कारण अपने आप ही हो जाएगी।
- घृणा को घृणा से नहीं जीता जा सकता। या तो आपकी गुणवत्ता क्षीण होती जा रही है या आप उसे व्यक्तिगत भोगना चाहते हैं। समाज को कुछ दिए बगैर समाज से सम्मान की अपेक्षा रखना छलावा है।
- हमारी सोच में कहीं न कहीं संतुलन का अभाव है। हमारे तर्कों में कहीं न कहीं ओचित्य का अभाव है। जब सोच आधुनिक होगी, विचार प्रगतिशील होंगे तथा दृष्टिकोण वैज्ञानिक होगा तो व्यक्ति और समाज में संकीर्णता की अपेक्षा धैर्य, सहनशीलता और स्वीकार्यता जैसे गुणों का ही विकास होगा।
- मतभेद और विवाद तो होते ही रहेंगे। यह कोई अनहोनी, आश्चर्य की या अभद्रता की बात नहीं है। हमें अपना पक्ष प्रबल प्रमाणों और युक्तियों के साथ रखने का पूरा हक है और यह हमारा कर्तव्य भी है। परंतु प्रतिपक्षी को तुच्छतापूर्वक संबोधन करना, उसका क्षुद्रता के साथ उपहास करना, अपमानजनक या अपशब्दों का प्रयोग करना न तो हमारे पक्ष की प्रबलता का ही परिचायक हो सकता है और न ही सभ्यता या सुरुचि का।
- जिस व्यक्ति के भाव शीघ्र ही उत्तेजित हो जाते हैं, वह समाज का कुछ भी भला नहीं कर सकता। क्योंकि ऐसे वक्त में अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत करने की आध्यात्मिक शक्ति नहीं रहती। ऐसे मनुष्यों के विचारों का प्रभाव भी दूसरे व्यक्तियों पर कम पड़ता है
- देश, प्रदेश, जिला स्तर पर अनेकों ब्राह्मण संगठनों की बाढ़ सी आ गयी है। लेकिन किसी लोकनेतृत्व के अभाव में एवं लक्ष्य-उद्देश्यों में एकरूपता की कमी के चलते सफलता नहीं मिल पा रही है।❑

– दुर्गानारायण तिवारी, इंदौर (9827791616)

वी कैन - वी विल

– शाश्वत पाण्डेय, नोएडा

'अह मिन्द्रो न परा जिग्ये' (ऋग्वेद 10/48/5)।

'मैं शक्ति केन्द्र हूँ, जीवन में कहीं भी मेरी पराजय नहीं हो सकती। मैं ब्रह्म-स्वरूप हूँ। मैं ईश्वर का शक्तिशाली पुत्र हूँ - अपना उच्च स्थान लेकर रहूँगा। महान होने के लिए ऊँचे विचार, नयी योजनायें शतत उद्योग की आवश्यकता है। कोशिश न करने वाले, अपनी दृष्टि चारों ओर न दौड़ाने वाले मूर्ख सदा सड़ते ही रहते है। मतभूलें कि आपका जन्म बड़े बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने के लिए हुआ है।

छोटे-छोटे कष्टों से उद्विग्न होना बचपने की निशानी है। अपने को बालक मत मानिये, विकसित मानव की पारिवारिक, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ सम्भालने के लिए तैयार रहिए। जो चरित्र का दुर्बल है, दीन-हीन डरपोक है, कायर और कलुषित है, उसे आत्म हत्यारा कहना चाहिए। कड़वे घूट तो जीवन में पीने ही पड़ते है - कठिनाई ही जीवन का सबसे बड़ा शिक्षक है। आप उन्नति के अभिलाषी है उसका मूल्य है कठिनाई। आपका आत्मबल दृढ़ होना चाहिए। संकट के समय मन को शांत और चित्त को ठंडा रखना लाभदायक होता है। स्वभाव का छुई मुई पन जीवन के लिए हानिकारक है जीवन के किसी भी क्षेत्र में शिथिलता और अनुत्साह ठीक नहीं। अधूरे मन से किया हुआ काम असफल होकर आपके आत्मविश्वास को तोड़ डालता है। अकर्मण्यता और निराशा सब प्रकार की नास्तिकता है। मन में तनाव रखना, तुच्छ विषयों को लेकर व्यर्थ ही सोचते रहना, मास्तिष्क का संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व से भरे रहना जीवन को अत्यन्त अशान्त और अस्थिर बना देता है।

यदि आप कमजोरी की बात सोचेगे तो आपके गुप्त मन में वैसा ही विषैला और दूषित वातावरण बनता जायेगा। दीनता और दुर्बलता दिखाकर या अपने का कमजोर मानकर जो दूसरों की सहानूभूति की आशा रखते है, वे भ्रम में है। अपना दृष्टिकोण पौरुष पूर्ण बनायें, ईश्वरीय सहायता अंदर से मिला करती है।❑

–7020240704

परिवार एक लघुतम लोकतंत्र है

–अजीत शुक्ल, एडवोकेट

व्यक्ति और समाज के बीच संयोजक श्रंखला 'परिवार' ही है। परिवार कालांतर में विकसित एक परंपरागत सामाजिक संस्था है, जहां व्यक्ति अपने प्रच्छन्न व्यक्तित्व को विकसित करता है।

पशुओं का परिवार नहीं होता। वहां झुंड या समूह होता है। पशुओं में परिवार या परिवारवत जो समूहन दिखता है, वह स्थाई नहीं होता। मानव वंश परिवार की संरचना तक इसलिए पहुंचा कि मानव-शिशु जन्म के बाद स्वावलंबी नहीं होता। प्रत्येक पशु का बच्चा जन्म के बाद से ही स्वतः चलने, बोलने, खाने-पीने लगता है।

मानव-शिशु शरीरतः स्वावलंबी होने में 7 साल लगाता है और सामाजिक रूप से स्वावलंबी होने में 18 से 22 साल लगाता है। इस लंबी अवधि तक बालक को सुरक्षा चाहिए, जो परिवार से उपलब्ध होती है। परिवार के बिना बच्चा जीवित नहीं बचेगा। उस के विकास और उत्कर्ष का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए परिवार एक अपरिहार्य प्राकृतिक व्यवस्था का उत्तर-परिणाम है। मानव के पास बुद्धि और विवेक भी होता है इसलिए उसमें उचित औचित्य-बोध उतरता है। इन्हीं सूत्रों का समुच्चय और उत्तर परिणाम है परिवार।

परिवार का अर्थ है जहां परिवार के सभी सदस्यों की रक्षा चारों ओर की कठिनाइयों से हो। **परिव्रियते अनेन इति (परि+इति+घंज)**। 1995 में राष्ट्र संघ की घोषणा के आधार पर संपूर्ण विश्व में परिवार वर्ष मनाया गया। पूरे साल तक समस्त विश्व में जो चिंतन हुआ उनमें सर्वोत्तम चिंतन-वाक्य था- 'परिवार एक लघुतम लोकतंत्र है'। (Family is the smallest democracy)। अर्थात परिवार किसी अभिभावक के अधिनायकवाद के सूत्रों पर नहीं बल्कि लोकतंत्र के आधार पर चलता है। यहां सबों के सम्यक एवं समान विकास की चिंता रखी जाती है। लोकतंत्र में दोष भी हैं, पर यह अभी तक के सभी तंत्रों में सर्वोत्तम है।❑

–9415474584

नृत्य

–शिप्रा पाण्डेय, लखनऊ

- कला वह ही उत्तम मानी जाती है जो सत्यम् शिवम्, सुन्दरम् पर आधारित हो। इसलिए आदि कलाकारों ने कला को देवार्चन का उत्तम साधन मानकर इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। नर्तन कला का विकास मंदिरों और उपासना-ग्रहों में हुआ।
- नर्तन को अभिव्यक्ति का प्रभावपूर्ण माध्यम मानते हुए कई ऋषि-मुनि आगे आये और इन्होंने इसके मानसशास्त्र, देहशास्त्र और सौन्दर्य शास्त्र की ओर सूक्ष्मता से ध्यान दिया और नियमों के बंधन में ढालकर इसे शास्त्रीय देह दे दी।
- नृत्य संगीत की तरह शाश्वत है और आदिकाल से इन दोनों के ताने-बाने पर मानव का जीवन आधरित है।
- शिव का ताण्डव नृत्य, रति-मदन नृत्य, पार्वती का कास्य तो आदि पौराणिक युग के है। नर्तन का सहोदर संगीत हमारी संस्कृति का अविभाज्य अंग है। हमारे आदि ज्ञान के स्रोत वेदों में चौथा सामवेद संगीतशास्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं। भरतमुनि कृत 'भरतनाट्यम्', नन्दिकेश्वर कृत 'अभिनयदपर्ण', सारंगदेव कृत 'संगीतरत्नाकर', धनंजय कृत 'दशकरूपक' आदि प्राचीनग्रन्थों की कथावस्तु नृत्य और संगीत है। शास्त्रों में नर्तन को तीन भागों में बांटा गया है- नाट्य, नृत्यं और नृत्तं। **'नाट्यं नृत्य तथा नृत्त त्रघा तदिति कीर्तितम्'**। (संगीत रत्नाकर) शरीर के अंगों का सुन्दर विक्षेप (अंग- परिचालन) बगैर किसी अभिनय के नृत्त की श्रेणी में आता है।

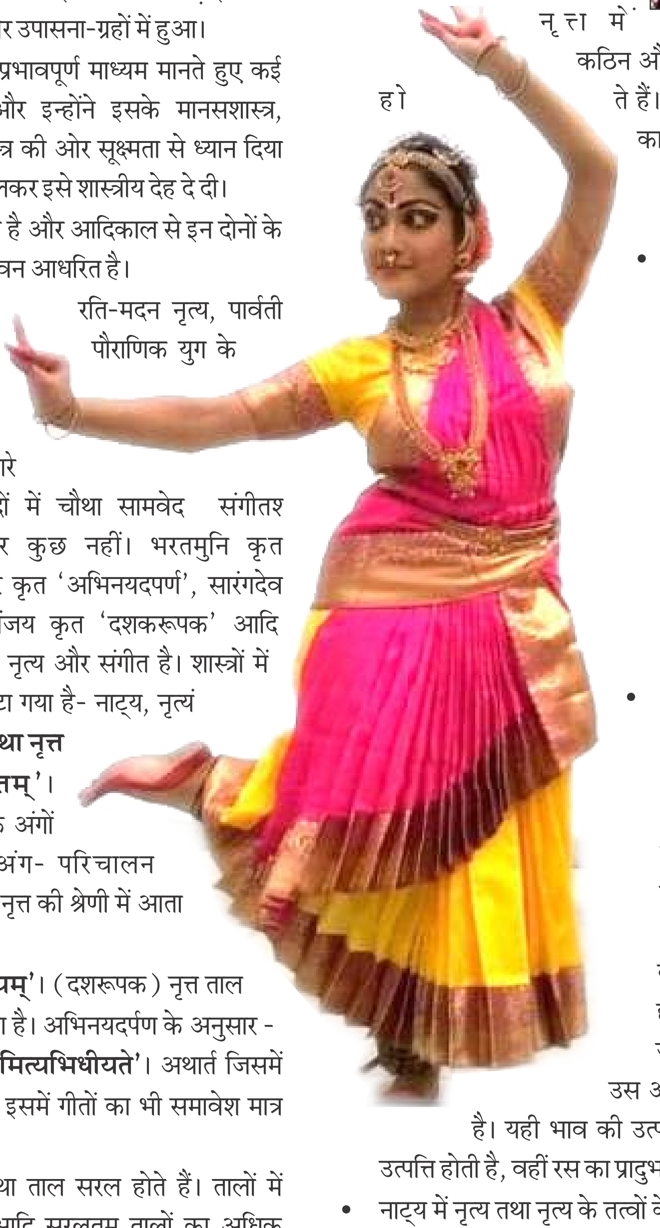

- अर्थात् **'नृत्तं तालालयाश्रयम्'**। (दशरूपक) नृत्त ताल और लय पर आधारित होता है। अभिनयदर्पण के अनुसार - **'भावाभिनयहीनं तु नृत्तमित्यभिधीयते'**। अथार्त जिसमें भाव और अभिनय न हो। इसमें गीतों का भी समावेश मात्र सौन्दर्य के लिए होता है।
- लोकनृत्त में अंगचलन तथा ताल सरल होते हैं। तालों में दादरा, खेमटा, कहरवा आदि सरलतम तालों का अधिक उपयोग होता है। इसलिए सामान्य जन् इसमें अधिक रस ले सकते हैं। भील, नाग आदि आदिवासियों के नृत्यों के अलावा, गरबा, रास, गिद्धा आदि से क्षेत्रीय लोकनृत्यों की प्रसिद्धि का कारण यही है।
- शास्त्रीय नृत्त में कठिन और विविधतापूर्ण अगंचलन होते हैं। उनमें अनेक कठिन तालों का उपयोग होता है। जैसे ब्रह्मताल, विष्णुताल, लक्ष्मीताल इत्यादि।
- संगीत पर आश्रित अभिनययुक्त और सम्पूर्ण अर्थ दर्शाने वाले अंगविक्षेप को नृत्य कहते हैं। नृत्य में गीतों में निहित भावों का प्रदर्शन होता है। **'रसभाव व्यंगादियुक्तम् नृत्यमितीर्यते।'** अर्थात जिसमें रस, भाव, व्यजंन संयुक्त में विद्यमान हो वह नृत्य है।
- नृत्य में ताल के साथ गीत, अभिनय और भाव का प्रदर्शन होना चाहिये। मुख से गीत फूटे, हस्तमुद्रा द्वारा गीत का अर्थ-प्रदर्शन हो, नयनों के भाव की अभिव्यक्ति हो, पाद से ताल की रक्षा हो। क्योंकि जहाँ हाथ जाता है, वहीं दृष्टि जाती है, जहाँ दृष्टि जाती है, उस ओर मन भी आकर्षित होता है। यही भाव की उत्पत्ति है और जहाँ भाव की उत्पत्ति होती है, वहीं रस का प्रादुर्भाव हो जाता है।
- नाट्य में नृत्य तथा नृत्य के तत्वों के अतिरिक्त संवाद होता है। **'नाट्यं तन्नाटकञ्चैव पूज्यं पूर्वकथायुतम्'** (अभिनव दर्षण)। नाटक नाट्य का पर्यायवाची शब्द है। ❑

असनी के काष्ठजिव्ह स्वामी

प्रस्तुति - अनूप शुक्ल

असनी के कवि समान आन कोऊ कवि नहीं ।
काऊ मान्य सभा चतुर बातन में दबि नहीं ।।
चँवर ढरन कविता असजलधि उमे फबि नही ।
सुधा आदि मधुर वस्तु उनमा अस चबि नही ।।
इनकी गति अगम तल पहुँच सकत रबि नहीं ।
देवन को भाग आन पाय सकत हबि नहीं ।।

श्री देवतीर्थ स्वामी (लब्धप्रतिष्ठ नाम-काष्ठजिह्व स्वामी) का जन्म लघु काशी से ख्यात हिन्दी कवियो की तीर्थ रेणु असनी, फतेहपुर मे हुआ था। कान्यकुब्ज ब्राह्मण स्वामी जी का गृहस्थाश्रम नाम विश्वेश्वर दत्त मिश्र था। काशिस्थ स्वामी विद्यारण्य तीर्थ से सन्यास दीक्षोपरांत श्री देवतीर्थ सुनाम ग्रहण किया। स्वामी जी के गुरु के दो ग्रन्थ चर्चित हैं-

1- विष्णुसहस्त्रनाम परिचर्या 2-श्यामसुधा।

प्रचलित हैं कि काष्ठजिह्व स्वामी जी ने एक बार किसी गुरुतुल्य व्यक्ति को अपशब्द का प्रयोग कर दिया था, इसके कारण उन्हे घोर दुःख व आत्मग्लानि हुई, फलस्वरूप स्वामी जी ने अपनी जीभ में काठ का खोल चढ़ा लिया जिससे कभी अपशब्द न कह सके। इसी कारण भक्तो ने उन्हे काष्ठजिह्व स्वामी सुनाम दे दिया।

काशीनरेश महाराजा ईश्वरीप्रसाद सिंह (1821 - 1889) ने उन्हे अपने गुरू के रूप मे प्रतिष्ठित किया और रामनगर मे स्वामी जी को आदरपूर्वक रखा। काष्ठजिह्व स्वामी जी के हिन्दी व संस्कृत भाषा मे बहुत से ग्रंथ हैं :-

संस्कृत ग्रंथः- 1- शिवचरण परिचर्या 2-रामचरण परिचर्या 3-कृष्णचरण परिचर्या तथा विवृति 4- महाभाष्य परिचर्या 5-रामानुज परिचर्या 6-सहस्त्रनाम परिचर्या 7-रामरक्षा परिचर्या 8-पद्वति परिचर्या 9-नीति तरंग 10-धर्म तरंग 11- योग तरंग 12-सांख्य तरंग 13- कला तरंग 14- छन्द तरंग 15 - शब्दशक्ति तरंग 16- उपपत्ति तरंग 17- उपनिषद तरंग 18-शिक्षाव्याख्या 19 -शांडिल्यसूत्र व्याख्या 20 - गायत्री व्याख्या 21- उदासीन साधु स्तोत्र .... **(सभी हस्तलिखित ग्रंथ काशीनरेश के रामनगर दुर्ग पुस्तकालय मे संरक्षित हैं)**

हिन्दी ग्रंथ :- (क) देव सुधा (पदावली) इसके अंतर्गत 1- गणेश बिन्दु 2- राम सुधा 3 - श्याम सुधा 4 - पंचकोश सुधा आदि ग्रंथ हैं।

(ख) देव बिन्दु (पदावली) इसके अंतर्गत 5- जानकी बिन्दु 6 - अयोध्या बिन्दु 7 - मथुरा बिन्दु 8 - काशी बिन्दु 9- कांति बिन्दु 10 - बैजनाथ बिन्दु 11- गया बिन्दु 12- प्रयाग बिन्दु 13- अश्विनीकुमार बिन्दु 14- जैन बिन्दु 15- हनुमद् बिन्दु आदि ग्रंथ आते हैं।

(ग) देव सर्वस्व (पदावली) इसके अंतर्गत 16 - उपासना सर्वस्व 17- विनयामृत 18- रामलगन 19 - श्यामलगन 20-रामरंग 21- श्यामरंग 22- भूषणरहस्य 23 - आनापुर के पद (बनौधा) 24- बुन्देलखण्ड के पद 25-बन्दिन के जगावै के पद आते हैं।

इनमे से रामायण परिचर्या बहुत अद्भुत ग्रंथ हैं

श्री काशिराजोज्वलगौरवेश्वरी-
प्रसादभूभृद्गुरुवर्यसत्कथः।
श्री काष्ठजिह्वापर-नाम-विश्रुतः
श्रीदेवतीर्थो यतिराड् विराजते ।।❑

यह भी सच था

हमारे पूर्वजों ने कान्यकुब्ज समाज का विभाजन तीन श्रेणियों में कर दिया था। और सम्बन्ध के लिए व्यवहार भी निर्धारित थे।

(1) खोरि के पाण्डेय, खाले वाले लखनऊ के बाजपेयी, माँझ गाँव के मिश्र, फतूहावादी नभेल के शुक्ल, हीरा के वाजपेयी, चत्तु के तिवारी, परसू के मिश्र, बाला के शुक्ल, माघो के अवस्थी, श्रीकान्त के दीक्षित उत्तम प्रतिष्ठा और व्यवहार वाले महत्तर घराने माने जाते थे। इन परिवारों में 501 दक्षिणा निश्चित थी।

(2) गेंगासों के पाण्डेय, ऊँचे वाले लखनऊ के वाजपेयी, बीसा के वाजपेयी, वीर के मिश्र, प्रभाकर के अवस्थी, आँकिन के मिश्र, कन्नौज के मिश्र, सोठियायें के मिश्र, कंगू के दीक्षित, छगे के शुक्ल महत्तर घराने मध्यम व्यवहार वाले थे - जिनमें 451) दक्षिणा निश्चित थी। कुछ में 401) था।

(3) धन्नी के वाजपेयी, गोपीनाथी धोबिहा मिश्र, न्याय वागीश के शुक्ल, भवदत्त के शुक्ल, लखनऊ के पाण्डेय, बड़े के अवस्थी, दमा के तिवारी, बाबू के दीक्षित आदि गोहिया घरानों में 351) का उत्तम। 301) का मध्यम और 251) का निकृष्ट व्यवहार निश्चित था।

इन बंधे हुए व्यवहारों के ही अन्तर्गत वरिच्छा और फलदान से लेकर मण्डप विदाई तक के सभी नेगों की सीमा निर्धारित थी। वरिच्छा में 1) फलदान में 7, 8, या 11 वरतावन में 2 व 3 खोरवा 41 - 51 या 101 इस प्रकार सभी व्यवहार की सीमा बाँध दी गई थी। जिसके लिए न किसी को कहना पड़ता था और न जानना - प्रसन्नता से सभी इन नियमों का पालन करते थे।❑

#कोरोना उपन्यास में पारिवारिक-मूल्य

– रोली अवस्थी, गुरुग्राम

वैश्विक आपदा बन चुकी महामारी के फलस्वरूप 25 मार्च, 2020 को शुरू हुए लॉकडाउन से 29 मई, 2020 कोरोनकाल की घटनाओं को संदर्भित करता हुआ साहित्यकार डॉ नीरजा माधव का सद्यःप्रकाशित उपन्यास 'कोरोना' प्रकृति, पर्यावरण तथा वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं मानवीय सम्बन्धों में आये बदलावों तथा चुनौतियों का सम्यक खाका खींचता है। एबीएस पब्लिकेशन, वाराणसी से प्रकाशित 207 पृष्ठों के उपन्यास ने अल्पसमय में ही खासी लोकप्रियता अर्जित कर ली है। कर्नाटक प्रदेश ने स्नातक के पाठ्यक्रम में शामिल कर 'कोरोना' का उचित मूल्यांकन किया है। प्रकृति, पर्यावरण, चिकित्साशास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिक-पारिवारिक परिवेश, श्रमिक, किसान, वैश्विक परिस्थितियां, घर की उपयोगिता, पति-पत्नी के गार्हस्थिक सम्बन्ध, मनोविज्ञान, आध्यात्म आदि के साथ पिछले समय हुई वैश्विक आपदाओं-त्रासदियों, तब्लीगी जमात के पूर्वाग्रहों, कोविडकर्मियों की विवशताओं, डॉक्टर-नर्स-पुलिस-प्रशासन-मीडिया-सफाईकर्मियों एवं रोजमर्रा की जिंदगी जीने वाले रेहड़ी-खोमचे वालों से लेकर घरेलू सहायिकाओं के जीवन में आये बदलावों, बाध्यताओं, उपेक्षाओं, विवशताओं व मनोभावों को समग्रता से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है।

उपन्यास की नायिका एक टीवी एंकर-रिपोर्टर है। निःसन्देह नायिका का इससे इतर प्रोफेशन कोरोनकाल के हर बारीक पहलुओं की सम्यक पड़ताल करने में बेमानी साबित होता। यह उपन्यासकार की गहन-दृष्टि ही तो है। नायिका के रूप में एक व्यवसायिक, कामगार महिला को घर-परिवार तथा गार्हस्थिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपनी प्रोफेशनल लाइफ में किस तरह दो-चार होना पड़ता है, उस पर महामारी का प्रकोप। घर में रहने की बोरियत, पति-पत्नी सम्बन्धों का रूखापन, बच्चों के प्रति वात्सल्य, घरेलू नॉकरानियों की उपयोगिता, धराशायी होते सामाजिक-पारिवारिक-सांस्कृतिक मूल्यों को रचनाकार ने सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है।

पारिवारिक मूल्यों की बात करें तो *'नारी ने स्वयं को सशक्त और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के चक्कर में बहुत कुछ नैसर्गिक सुख खो भी दिया है। अपने बच्चों का बचपन देखने की फुर्सत नहीं है उसके पास। जिसके पास सहयोग करने के लिए अपना परिवार है, वहां तो बच्चे ठीक से पल भी जाते हैं, पर जहां स्त्री -पुरुष दोनों नौकरी पेशा हैं, और अकेले हैं, वहां नन्हे बच्चों की मुसीबत है। दाई के भरोसे या शिशु गृह में पढ़ने वाले बच्चों का मन कितना कुम्हला जाता है, शायद इसकी कल्पना भी हम नहीं कर पाते क्योंकि अबोले और अबोध बच्चे अपनी मां के प्यार की कमी को अभिव्यक्त भी तो नहीं कर पाते। परिणाम धीरे-धीरे सामने आ रहा है। बच्चे कम उम्र में ही उग्र, जिद्दी या परिपक्व बनने का आचरण करने लगे हैं। बचपना खो रहा है उनका। समय रहते यदि भारत की स्त्री ने भी ध्यान नहीं दिया तो एक भयावह भविष्य का सामना करना पड़ेगा। लोग कर भी रहे हैं। बच्चों का माता-पिता से आत्मिक लगाव कम हो रहा है। रही सही कसर अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रणाली पूरी कर दे रही है। बच्चे दूसरी भाषा के दबाव में उचित तरीके से विषय को पढ़ नहीं पा रहे। परिणाम- कुंठा हताशा और हीनता ग्रंथि।'*

युवाओं की सोच में आये बदलावों पर भी रचनाकार ने दृष्टि डाली है- 'आजकल की पीढ़ी बहुत प्रैक्टिकल हो गई है। अब कुंडली मिलाने की जगह पर वह पर्सनल मैच को महत्व देने लगी है यह पीढ़ी। कंपनी के लिए दिन-रात काम करके थके इन युवाओं में सरस जीवन जीने के प्रति कोई भाव ही नहीं बचता। उनका भविष्य बिल्कुल किसी रेगिस्तान की तरह साफ-सपाट दिखाई पड़ता है। सुबह पति-पत्नी का अपने अपने ऑफिस के लिए भागना। देर रात तक अपने अपने लैपटॉप या कंप्यूटर पर कंपनी द्वारा दिए गए कार्य संपादित करना और होटल से या रसोईं में हीं कुछ रूखा सूखा पका कर खा लेना। बच्चे एक से अधिक पैदा नहीं करना। घर के बड़े बूढ़ों के समझाने पर कि ये बच्चे अकेलेपन का शिकार हो रहे हैं या रिश्तो के नाम भूल जाएंगे यह बच्चे। तो इनका एक शुष्क सा उत्तर होता है- एक ही की परवरिश और शिक्षा दीक्षा हो जाए इस महंगाई के जमाने में, बहुत बड़ी बात है।'

सच है, 25 मार्च से पहले का जीवन कहानी सा लगने लगा है। नकारात्मकता हर दिलोदिमाग पर हावी है। सामाजिक, पारिवारिक सामुदायिक मूल्यों में किसी बहुत बड़े परिवर्तन की आहट देता है यह उपन्यास। काफी-कुछ सकारात्मक भी हुआ है और हो रहा है इस कालखण्ड में। चिकित्साशास्त्र अर्थशास्त्र पर हावी है। उपयोगितावाद व उपभोक्तावाद की परिभाषाओं का पुनर्मूल्यांकन हो रहा है। कृषि और पारंपरिक व्यवसाय-उद्योगों का महत्व समझ आने लगा है। भय, अनिश्चितता, अभावों के बीच कुछ आशाएं भी उभरकर सामने आई हैं- *'महामारीयां पुरानी दुनिया और भविष्य की दुनिया के बीच का प्रवेश द्वार हैं। कोरोना संक्रमण जिसे वैश्विक महामारी घोषित किया जा चुका है, भी आने वाली नई दुनिया का प्रवेश द्वार है। अब हम धरती पर बचे-खुचे मनुष्यों को सोचना है कि नई दुनिया, जिसमें हम इस संकट से उबर कर प्रवेश करने वाले हैं, वह कैसी होगी? क्या वहां भी हम अपनी स्वार्थलिप्सा, वर्चस्व की जंग, परमाणु बमों का जखीरा, कमजोर राष्ट्रों को हड़पने की कुत्सित नीति, कंधे पर लादे मृत नदियों की लाशें, विषैली हवाओं से बोझिल सांसें और धुआं-धुआं आसमान, मुद्राओं की मादक खनक, विनाशकारी मशीनों, बाजारों के स्वार्थी कोलाहल को पोटली की तरह बगल में दबाए इस नई दुनिया में प्रवेश करेंगे या करोना संक्रमण से पहले की इस दुनिया के सभी बदनुमा दाग धब्बों को पीछे छोड़ते हुए हम नई दुनिया के लिए अभी से प्रयास करेंगे ?'* ❑

आरक्षण का भस्मासुर

– सरस त्रिपाठी, बंगलुरु

आधुनिक भारत में आरक्षण देने का सबसे पहला विचार और प्रस्ताव 1890 में मैसूर के महाराजा चामराज (कामराजा) वाडियार दशम ने किया था। उन्होंने ब्राह्मणों को छोड़कर अन्य सभी जातियों को आरक्षण देने का विचार किया और प्रस्ताव को दरबार में रखा तो सभी स्तब्ध रह गये और संभवतः भयवश कोई सहमति नहीं हुई। राजा ने अकेले में अपने दीवान (प्रधानमंत्री) से सलाह ली। उनके प्रधानमंत्री के. शेषाद्री अय्यर एक बहुत ही विद्वान और दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने राजा को सलाह देते हुए कहा, 'किसी भी प्रकार का आरक्षण या विशेषाधिकार समाज के विखंडन का कारण बनेगा। आज जिन्हें हम यह खैरात (विशेषाधिकार) दे रहे हैं कल उसे वह अपना जन्म सिद्धअधिकार मान लेंगे। एक बार देने के बाद आप इसे खत्म नहीं पाएंगे क्योंकि इससे विद्रोह होगा। राज्य में विद्रोह और विघटन होगा। परंतु फिर भी यदि आप आरक्षण देना ही चाहते हैं तो मेरी सिर्फ एक सलाह है कि आप तीन विभागों में आरक्षण कदापि न दें। इनको छोड़कर बाकी सब जगह आरक्षण दे सकते हैं और यह विषय हैं - 'न्यायपालिका, शिक्षा और प्रशासन'। क्योंकि यह तीनों अंग ऐसे हैं जो अगर योग्यता पर नहीं चलाए गए तो राज्य के विनाश का कारण बनते हैं'। सलाह का यह परिणाम हुआ कि मैसूर के महाराजा ने आरक्षण देने का विचार समूल त्याग दिया।

राज्य के बुद्धिमान लोगों की सलाह के विरुद्ध 1902 में कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति शाहूजी महाराज (जिनके नाम पर तथाकथित दलित नेताओं ने स्मारक बनवाया है) ने 50 प्रतिशत आरक्षण अपने राज्य में लागू किया । इस 50 प्रतिशत आरक्षण में सिर्फ ब्राह्मणों को छोड़कर सभी वर्ग के लोग शामिल थे ।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के मन में आरक्षण प्राप्त करने की अभिलाषा छत्रपति शाहूजी महाराज के कार्यों से ही प्रेरित थी । इसलिए जो लोग सिर्फ अंग्रेजों को 'डिवाइड एंड रूल' के लिए दोषी ठहराते हैं उन्हें इतिहास की जानकारी नहीं है । सच्चाई यह है कि अंग्रेजों ने छत्रपति शाहूजी महाराज से ही आरक्षण जैसी दुर्व्यवस्था को सीखा था ।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियों को जो आरक्षण दिया गया है, उसको देने या पाने में इन जातियों का कोई हाथ नहीं है । आरक्षण की व्यवस्था के सारे कर्ता-धर्ता सिर्फ दो जातियों के लोग रहे हैः सबसे अधिक ब्राह्मण और उसके बाद क्षत्रिय। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि आरक्षण मांगने के लिए कभी भी जन आंदोलन नहीं हुआ।

आरक्षण की सारी व्यवस्था ब्राह्मण और क्षत्रियों ने की लेकिन उनको इसका कोई श्रेय नहीं मिलता बल्कि बदले में उन्हें अनवरत गालियां दी जाती हैं। उन्हें अत्याचारी, भेदभाव करने वाला, शोषक इत्यादि से नवाजा जाता है।

देश के आजाद होने के बाद 26 जनवरी 1950 जो संविधान लागू हुआ उसमें किसी तरह के आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं था। 1932 में महात्मा गांधी और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के बीच जो पूना पैक्ट साइन किया गया था, संविधान बनने के बाद उसका कोई संवैधानिक अस्तित्व नहीं रह गया था बल्कि वह एक नैतिक जिम्मेदारी रह गया था। परंतु इस बात का ध्यान रखा गया था कि संविधान में कुछ ऐसे प्रावधान किए जाएं जिससे तथाकथित दलित और सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को कुछ सहूलियत प्रदान की जा सके । वैसे भी गांधी-अम्बेडकर समझौते में तथाकथित दलितों को केवल जनप्रतिनिधित्व के लिए ही सहूलियत दी जानी थी (लोकसभा एवं विधानसभा में सीटें सुरक्षित करके)। जब संविधान लिखा गया तो उसमें कहीं भी नौकरी या शिक्षा संस्थानों में आरक्षण की कोई व्यवस्था नहीं की गई।

संविधान के अनुच्छेद 14 में कानून के समक्ष समानता का अधिकार दिया गया है । अनुच्छेद 15 में धर्म, जाति, जन्मस्थान इत्यादि के आधार पर भेदभाव का निषेध किया गया है। अनुच्छेद 16 में भी सरकारी सेवाओं में बराबरी का अधिकार का प्रावधान है । आरक्षण प्रदान करने के लिए इसी अनुच्छेद के साथ छेड़छाड़ की और इसमें उप-अनुच्छेद (4) घुसा दिया। इसी के तहत यानी 16 (4) के अंतर्गत आरक्षण के प्रावधान की व्यवस्था की गई । आरक्षण का यह सारा प्रावधान सिर्फ अगले10 वर्षों तक के लिए (1961 तक) ही था।

बिना मांगे दिए जाने वाले आरक्षण की कहानी शुरू होती है 18 जून 1951 को। एक संवैधानिक संशोधन कर संविधान के अनुच्छेद 16 में उप-अनुच्छेद 4 डालकर आरक्षण की व्यवस्था की गई और इसके अंतर्गत अनुच्छेद 341 और 342 में अनुसूचित की गई जातियों को कुल 23 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया। अनुच्छेद 16 (4) के अंतर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति को 23 प्रतिशत आरक्षण सिर्फ नौकरियों में दिया गया था । शिक्षा संस्थानों में आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं था। 1982 में आरक्षण की इस 23प्रतिशत की व्यवस्था को सभी शिक्षा संस्थानों में भी लागू किया गया।

आरक्षण के बड़े बदलाव की आधारशिला 1978 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में रखी गई । मोरारजी देसाई भी एक ब्राह्मण (गुजराती) ही थे। बी पी मंडल, जो कि बिहार के रहने वाले थे, की अध्यक्षता में मंडल आयोग गठित किया गया और बिना किसी प्रकार के अध्ययन और अनुसंधान के आयोग ने 1980 में अपनी रिपोर्ट भी प्रस्तुत कर दी । इसके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कायस्थ को छोड़कर लगभग सभी जातियों को आरक्षण की श्रेणी में रखने की संस्तुति की गई। क्योंकि देश में जाति पर आधारित आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। इसलिए 1931 की जनगणना, जो कि विभाजन के पूर्व हुई थी और जो लगभग 50 वर्ष पुरानी थी, को आधार बनाकर 27 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने की संस्तुति की गई।❑

– 9717494674

राकेश मिश्र की कविताएं

तुम्हारा साहस ही तुम्हारा कृष्ण है

मत कहना कि
अब कृष्ण नही आते
द्रौपदियों की लाज रखने..।
अब भी कृष्ण आते हैं..
द्रुपदसुताओं..!
साहस तो दिखाओ
धिक्कारने की...
कापुरुषों की छद्म नरप्रभुता को...
साहस तो दिखाओ
थूकने की..
उन राजधर्मभीरु महापुरुषों की
उस मिथ्या
कर्तव्यपरायणता पर,
जो उन्हें शीलवान धर्मरक्षक
के स्थान पर
शासक का दास बना देती है..।
जिजीविषा अक्षुण्ण रखो ...
अपमान के घाव को
रक्त से धोने की.!
भले ही महाभारत हो जाये..।
अब कृष्ण बहिर्जगत से नहीं आते,
अपितु देह में ही वास करते हैं...
साहस के रूप में...!
इसलिए तो आजकल की
द्रौपदियाँ,
कर देती हैं शिश्नविच्छेदन...
दुःशासनों के..।

इसलिए
जब वे नहीं रह जाती
अर्धांगिनी..
तो बहुधा पूर्णता को
प्राप्त कर लेती हैं..।
जगाती हैं अपने
अन्तः के कृष्ण को..।
पालकर स्वजातकों को
भी बना देती हैं कृष्णा....।
जग जाते हैं जब
अन्तरकृष्ण
तो कुसुम सदृश उठाती हैं
अपनीं किशोरवय सन्तति को,
बीमार पड़ने पर...।
कृष्ण की कृष्णा बनो!
तुम्हारा साहस ही तुम्हारा कृष्ण है।

जड़ और चेतन

श्रांत/क्लांत/निश्चल
दरवाजे के चौखट पर बैठीं
अम्मा!
निर्निमेष भाव से
एकटक
देखे जा रही थीं
कड़क/तपती/खड़ी दुपहरी में तपते
किन्तु, छाया प्रदान करते
टिकोरों से लदे हुए
अमोले को।
निश्चय किया था
उन्होंने और पिताजी ने
रोपेंगे एक वृक्ष
अपने पुत्र के जन्म के मौके पर;
और रोपा था इस अमोले को
अपने एकमात्र पुत्र के जन्म के समय।
इस तरह
जन्म दिया था दो पुत्रों को
एक जड़;
एक चेतन!
दोनों बढ़े
विकसित हुए
स्वावलम्बी हुए।
जड़ अभी भी वहीं खड़ा है
चुपचाप
तपती/चिलमिलाती धूप में
शीतल छाया प्रदान करता;
अम्मा-पिताजी के परिश्रम का/
प्रेम और वात्सल्य का/
त्याग का
प्रतिफल प्रदान करता।
और चेतन...?
खो गया है कहीं
दुनिया की भीड़ में
उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर
आधुनिकता का हाथ थामे हुए
पुरातन सोच/
पुरातन परम्पराओं से
पीछा छुड़ाकर,
विवश बुढ़ापे को
अकेलापन/घुटन देकर
खो गया है कहीं
हमारा चेतन!❑

– 8076415804

- 'कान्यकुब्ज मंच' एक सोच है, संकल्प है, भावनात्मक उद्देश्य, एक समर्पित प्रयास है, एक मिशन है।
- पत्रिका प्रकाशन एक अनुष्ठान है, इसमें निहित है – समाज के प्रति एक सच्चे और अच्छे मित्र की भूमिका।
- आप भी इससे जुडें औरों को भी प्रेरित करें। – संपादक

पाण्डे बच्छराज सम

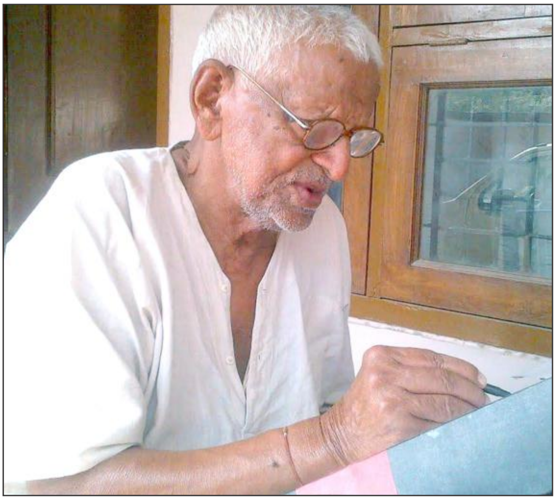

पंडित बालकृष्ण पाण्डेय या किसी भी 'पाण्डेय बंधु' का नाम सामने आता है तो 60 वर्ष पहले पढ़ा असनी के किसी कवि का लिखा वह छंद स्मरण आता है जो अब स्मृति में नहीं है। उस में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के सभी आस्पदों पर कवि ने वक्रोक्ति के आश्रय से उनके स्वभाव की व्याख्या की थी। विनोद कारी छंद तो याद नहीं किन्तु उसकी एक पंक्ति अक्सर अंतर्मन में उठ कर जिस स्मृति का बोध कराती है, उसे शब्दों में तो व्यक्त करना कठिन है। पर वह एक पंक्ति जो अभी तक मेरे 'मानसिक संग्रहालय' में संरक्षित है, उसे पढ़कर आपभी अज्ञात कवि के मृदुल व्यंग का आनंद ले सकते हैं -

'बाज सम बाजपेयी, पांडे बच्छराज सम,
मुर्रा सम मिसिर जे झुकैया नहीं माथ के '

बाजपेयियों और वो भी असनी के यहाँ तो मेरी ससुराल ही है और मिसरों के यहाँ मेरा मामना। मेरे बाबा का मामना जरूर पाण्डेय लोगों के यहाँ था। वैसे दो एक पाण्डेय लोग आज भी मित्र मंडली में हैं पर बच्छराजी उनमें प्रकट तो नहीं दिखी, हाँ तुनक मिज़ाजी से भेंट तो सहज ही हो सकती है। पंडित बालकृष्ण जी से जब मेरी निकटता किदवईनगर, कानपुर के निवासी होने के नाते बढ़ी, तो उनमें बच्छराजी के दर्शन नहीं हुए. लेकिन ये छंद तो आज का है नहीं. ये उस काल का है जब उत्तर प्रदेश के कान्यकुब्ज ब्राह्मण जमीन पर पर कम, अपने 'बिस्वा' के घोड़े पर बैठ कर अधिक चलते दिखाई देते थे। उस काल के पाण्डेय ऐसे होते होंगे तभी कवि ने लिखा। लेकिन बालकृष्ण जी तो इस के विपरीत दीखते थे।

वो अत्यंत विनम्र, पर अपने उसूलों पर दृढ। सम्मान तो वो मेरे ऐसे आयु में अपने से कम लोगो का भी करते थे। यह उनका विनम्र किन्तु अपने लक्ष के प्रति दृढ़ स्वभाव का ही परिणाम है कि आज 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका अपने पूर्ण यौवन पर है। मैंने उनको इस पत्रिका के निकालने पर बहुत हतोत्साहित किया पर न उन्हीने मुझे छोड़ा और न पत्रिका के प्रकाशन के संकल्प से ही पीछे हटे. वो इतनी विनम्रता से, आहत होते हुए भी, अपनेको मनवाने की कला में निष्णात थे। यही कारण है कि मैं उनको नकारते हुए भी उनके साथ रहा।

मैं वैसे इन जाति की सीमाओं में बँधा व्यक्ति नहीं हूँ फिर भी मैं उनको सहयोग देने से कभी पीछे नहीं हटा। मेरे अधिकांश सुझावों को उन्होंने क्रियान्वित भी किया। उनमें सबसे महत्वपूर्ण सुझाव था उन स्थानों के नाम पर पत्रिका के विशेषांक निकालना जो कान्यकुब्ज समाज के लोगो के निवास करने के कारण इतने प्रसिद्ध हो गये कि उनके आगे की पीढ़ियां उसी गाँव के नाम से जाने जाने लगी। जैसे असनी के बजपेयी, ऊगू के शुक्ल, गेगांसव के पांडे या खजुहा के शुक्ल आदि. उन्होने कहा सबसे पहले 'खजुहा विशेषांक' निकलेगा और मुझे ही उसका अतिथि संम्पादक भी बनाया।

पाण्डेय जी ने 'कान्यकुब्ज मंच' के नाम से अपनी ही पहचान नहीं बनाई बल्कि अपने पुत्रों को भी अपने खानदान से अलग एक पहचान समाज में देकर गये। ❑

-जीवन शुक्ल, कन्नौज

परिचयः

सरिगवां के पं. हरेराम वाजपेयी

लगभग ढ़ाई शताब्दी पूर्व ठा. सारंगसिंह ने सरिगवां, ठा. अनेसिंह ने अनेई एवम् ठा. फत्तेसिंह ने फत्तेपुर गांव बसाया था। कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन से 60 किमी. पश्चिम सरिगवां कानपुर देहात की बिल्हौर तहसील का गांव है। गंगा तट स्थित गांव काकूपुर से यहां आकर से वाजपेयी परिवार की 500 बीघा की जमींदारी थी। पं. गौरी शंकर के आत्मज पं. मुन्नीलाल वाजपेयी (पौत्र - पं. आछेलाल वाजपेयी) के नाम से मुन्नीलाल मोहाल आबाद है।

इसी परिवार के पं. कालीचरण वाजपेयी लम्बे कद के नम्बरदार हुआ करते थे। सुरुचिपूर्ण भोजन के पारखी, धोती-कुर्ता, पैरों में खड़ाऊ उनका आदेश बैठक में पड़े पलंग से ही चलता था। आसपास के गावं में खासा रुतबा था। पं. कालीचरण के पौत्र 78 वर्षीय पं. हरेराम वाजपेयी (आत्मज पं. बाबूराम वाजपेयी) अपनी आधी-अधूरी शिक्षा छोड़ 1957 में चचेरे भाई भगवानदास के पास इन्दौर आ गये। 1965 इन्दौर विवि से परास्नातक किया। ताऊ पं. सरजू प्रसाद इन्दौर में ही शिक्षा अधिकारी थे। शिक्षा व अध्यापन कार्य करते हुए 1967 में यूनाइटेड कामर्शियल बैंक में सेवारत हुए। समाज, साहित्य और हिन्दी भाषा की उन्नति में स्वयम् को खपा देने वाले पं. हरेराम वाजपेयी का हर दिन रचनात्मक है।

भारतीय रेलवे से अवकाश प्राप्त पं. विशम्भर दयाल तिवारी की आत्यजा श्रीमती पद्मजा उच्चशिक्षा प्राप्त आपकी सहधर्मिणी एक बिदुषी महिला है। इस दम्पति को दो सुयोग्य संतानों का गौरव प्राप्त है। मीडियाकर्मी व श्रेष्ठ बांसुरी वादक के पुत्रद्वव चि. आलोक जूनी इंदौर के स्मृतिशेष पं. ओम तिवारी की आत्मजा श्रीमती सपना से विवाहित पुत्र चि. अभ्युदय व चि. अभिप्राय का छात्र जीवन है। खण्डवा राजकीय पॉलिटेक्निक के उपप्रधानाचार्य डॉ. नीरज दीक्षित से विवाहित आत्मजा श्रीमती नीति अपनी दो पुत्रियों निहारिका व नीराजंना के साथ सफल पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रही है। वाजपेयी जी के पुरुषार्थ का प्रतीक निज भवन 'श्री अभिनन्दन' इन्दौर ही नहीं, उत्तरभारत के हिन्दी सेवियों की साहित्यिक तीर्थस्थली है।

साहित्य सर्जन में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं के साथ काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। बाल काव्य संग्रह 'को पलवाणी' वर्ष 2014 में मप्र साहित्य अकादमी से सम्मानित है। प्राइमरी व जूनियर कक्षाओं की के बैनर तले नये रचनाकारों को प्रकाश में लाने व सम्मानित करने का शौक है। मांरीशस में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन (2018) में 'हिन्दी-परिवार' के प्रतिनिधित्व में कई साहित्यिक कृतियों के विमोचन का श्रेय प्राप्त है। 'पांच से पचहत्तर' आपकी आत्मकथा पारिवारिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर है।

सत्य, साहित्य और संस्कृति के समर्पित साधक वाजपेयीजी की सक्रियता उम्र के इस पड़ाव में भी बेजोड़ है। श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के साहित्यमंत्री एवम् साहित्यिक हिन्दी मासिक 'वीणा' के प्रबंध सम्पादक रहते हुए वाजपेयी जी की कलम प्रवाहमान है। साहित्यिक गौष्ठियों में आपके मंच संचालन एवम् वक्तव्य कला में गजब का सम्मोहन तथा चुम्बकीय आकर्षण है। ज्ञान, अनुभव, नवीन विचारों से ओतप्रोत भाषा उच्चारण की स्पष्टता श्रोता समूह को बांधे रखती है। 'सरल स्वभाव सबहिं सन प्रीती' वाले महानुभाव हैं। ऋग्वेद के मंत्र 'मन्द्रः मधुवाचाः अग्निः परिएति' (आनन्द देने वाला और मधुर भाषण करने वाला अपने यश से चारों ओर जाना जाता है।) की वे प्रतिमूर्ति हैं। ❑

R.D. Tiwari
Mob. : 9871413500

SHANKAR LAL RISHI KUMAR
85, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
Phone : 011-23287415

Shawl Merchants
RAJ EMPORIUM
81/7, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6
All kinds of Showl, Kashumiri Dushala & Dhussas
are available here at reasonable price

सहृदय डॉ रामकुमार तिवारी

उन्नाव जनपद के ग्राम बेहटा भवानी निवासी कीर्तिशेष पं. बैजनाथ तिवारी एवं स्मृतिशेष श्रीमती राजरानी तिवारी के आत्मज डॉ रामकुमार तिवारी पिछले दो दशकों से दक्षिण भारत कान्यकुब्ज समाज, हैदराबाद के अध्यक्ष पद का सफल निर्वहन कर रहे हैं। मुख्यतः बैंकिंग व्यवसाय से संबंधित डॉ रामकुमार जी समाज सेवा के क्षेत्र में हैदराबाद के चंदूलाल बरादरी निवासी स्मृतिशेष पं. तेज बहादुर दुबे एवं सुल्तान शाही निवासी स्मृतिशेष पं. शिव प्रसाद तिवारी को अपना प्रेरणास्रोत मानते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शैक्षणिक विभाग श्री सरस्वती पीठम् के नाम से आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में लगभग 500 शिक्षण संस्थाएं संचालित हैं। हैदराबाद में इसके 50 शिशु मंदिर हैं। डॉ तिवारी श्री सरस्वती विद्यापीठम् के उपाध्यक्ष मनोनीत किए गए। अखिल भारतीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का 8 वर्षों तक दायित्वपूर्ण पद संभाला। आपके द्वारा स्थापित द डेक्कन कोऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड पिछले 22 वर्षों से हैदराबाद में समस्त बैंकिंग सेवाओं के लिए प्रतिष्ठित है। जिसका कार्यभार इस समय डॉ तिवारी के युवा पुत्र चिरंजीव सौरभ कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। डॉक्टर तिवारी की सहधर्मिणी श्रीमती कंचन तिवारी इतिहास और समाजशास्त्र से परास्नातक हैं एवं 'सहयोग' नाम की संस्था की अध्यक्षा हैं। तिवारी परिवार राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्राकृतिक आपदाओं, महामारी, दुर्घटनाओं आदि में उदारता पूर्वक सहयोग करने में अग्रणी रहता है। समाज सेवी संस्था निर्दोष के अंतर्गत 1996 में आंध्र प्रदेश की बाढ़, 1999 में उड़ीसा में आए भीषण तूफान, 2000 के कारगिल युद्ध, 2005 के सुनामी आदि में पीड़ित परिवारों को वस्त्र, खाद्यान्न एवं चिकित्सा सुविधा जैसे जनहित कामों की लंबी श्रृंखला है। पिछले वर्षों दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में हुई भीषण पानी की किल्लत में निर्दोष संस्था के द्वारा भेजे गए पानी के टैंकरों ने लोगों के प्यास बुझाने का पुण्य अर्जित किया था।

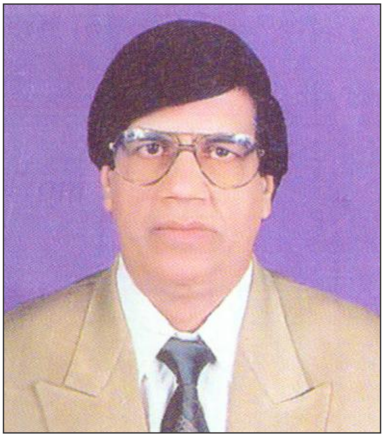

डॉक्टर तिवारी को ब्राह्मण होने का गर्व है। उनका कहना है कि 'सच्चा ब्राह्मण किसी से अपने लिए कुछ नहीं मांगता। परमार्थ के लिए, देश के लिए वह किसी के आगे भी हाथ फैला सकता है।' तिवारी जी का जीवन जिस संघर्ष, श्रम, प्रयोग और विलक्षणता से भरा मिला, वह किसी भी युवक के लिए प्रेरणास्रोत है। ऐसे सत्पुरुष समाज की शोभा, शक्ति और संपदा होते हैं। निराभिमानिता, संकल्पशीलता, लक्ष्य प्राप्ति की दीवानगी, सकारात्मक सोच, निस्वार्थ सेवा उनके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है। तिवारी जी का आतिथ्य सत्कार स्तुत्य है। डॉ तिवारी के व्यक्तित्व और व्यवहार में जो गर्मजोशी, सहृदयता और दूसरे के लिए हमेशा मदद करने का भाव है,, उसके पीछे उनकी सामाजिक, मानवीय-संवेदना छिपी है। समाजहित के कार्यों के लिए अपने व्यस्ततम जीवन से समय चुरा लेना उनकी कला है। वे कहते हैं-

'कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं, मन चाहिए।
साधन सभी जुट जाएंगे, संकल्प का धन चाहिए।।' ❑

With best compliments from

TEDCO Exports Private Limited

A global trade development company engaged in exports and imports of commodities, equipments and technology

M-72, Connaught Circus, New Delh 110001, Phone 23-416001/ 41517367 (EPABX)
Telefax: 011-23416002, E-mail: tedcogroup_del@airtelbroadband.in

दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा, हैदराबाद

उत्साही, संकल्पशील एवं जातीयता के सकारात्मक भाव से अनुरंजित अध्यक्ष डॉ रामकुमार तिवारी के नेतृत्व में दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा, हैदराबाद आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में विस्थापित कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवारों को संगठित करने, ब्राह्मण संस्कृति के उन्नयन में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने तथा समाज के युवा, महिला एवं उपेक्षित वर्ग को अपेक्षित सहायता उपलब्ध कराने के सद्उद्देश्य से पिछले सात दशकों से निरंतर क्रियाशील है। हैदराबाद में कान्यकुब्ज संगठन के प्रणेता रहे स्वतंत्रता सेनानी एडवोकेट स्मृतिशेष पं. केशव प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में वर्ष 1960 में संस्था का विधिवत पंजीकरण हुआ। बाद के वर्षों में स्व. पं. गया प्रसाद शास्त्री, स्व. पं. नरसिंह प्रसाद सिंह (डीएसपी), स्व. पं. विष्णु देव जी शास्त्री, स्व. डॉ कृष्ण प्रसाद पाठक, स्व. पं. सत्यनारायण प्रसाद वाजपेई, स्व. पं. हीरालाल अवस्थी, स्व. पं. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, स्व. पं. मणि प्रसाद तिवारी, स्व. पं. प्रकाश नारायण जी शुक्ल भट्टाचार्य आदि की अध्यक्षता में कान्यकुब्ज संगठन को गति मिलती रही। संविधान निर्माण में स्व. पं. शंकरप्रसाद दुबे का परिश्रम स्तुत्य था।

कन्नौज के उद्योगपति स्मृतिशेष पं. सुंदरलाल दुबे का इत्र व्यवसाय तथा कोल्ड स्टोरेज का खासा कारोबार था। इनके पुत्रों में डॉ शिवस्वरूप दुबे, पं. तेजबहादुर दुबे एवं पं. मदनमोहन दुबे ने क्रमशः कानपुर व कोलकाता, हैदराबाद, नागपुर में ही नहीं, पूरे भारतवर्ष में इत्र व्यवसाय का साम्राज्य खड़ा कर लिया। विदेशों में भी दुबे परिवार के परफ्यूम उत्पाद की हवा है। स्मृतिशेष पं. सुन्दरलाल दुबे परिवार का समाजसेवा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान रहा है। देश के पूर्वी व दक्षिणी क्षेत्रों में कान्यकुब्ज संगठन खड़ा करने तथा उसको मजबूती प्रदान करने में इस परिवार की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। कीर्तिशेष पं. तेजबहादुर दुबे दक्षिण भारत कान्यकुब्ज सभा के आजीवन चेयरमैन रहे। उनके पुत्र निशीथ दुबे का संरक्षण आज भी संस्था को सुलभ है।

नवम्बर 2001 में डॉ रामकुमार तिवारी द्वारा अध्यक्ष पद संभालने के बाद से संस्था अनवरत समाजहित कार्यों में आगे बढ़ती जा रही है। सुलतानशाही (हैदराबाद) के स्व पं. शिवप्रसाद तिवारी ने भवन निर्माण के लिए 400 वर्ग गज भूमि संस्था को दान में दी। अक्टूबर, 2003 में शुरू हुआ भवन निर्माण का स्वप्न उदारमनाओं के सहयोग से मई, 2005 में साकार हुआ। 14 मई, 2005 को संस्था भवन लोकार्पण में तिवारी ब्रदर्स के पं. रविकांत तिवारी की गौरवपूर्ण उपस्थिति स्मरणीय है।

संस्था के महत्वपूर्ण कार्यों में वर्ष 2007 से छात्रवृत्ति कोष, वर्ष 2015 से कन्या विवाह सहायता कोष, वैवाहिक प्रकोष्ठ, चिकित्सा पैनल, शिक्षा परामर्श एवं मार्गदर्शक मंडल, पारिवारिक सलाहकार परिषद एवं कानूनी सलाह समिति आदि का लाभ समाज के अपेक्षित परिवारों को सुलभ है। छात्रवृत्ति कोष में 15 लाख तथा कन्या विवाह सहायता कोष में 21 लाख रुपये की धनराशि सुरक्षित है। समाज के ही प्रतिष्ठ चिकित्सक डॉ विजय दीक्षित, डॉ वेदप्रकाश शुक्ल, डॉ रीता शुक्ला एवं डॉ संजीवन प्रसाद दुबे तथा कानूनी सलाह में समाज के अनुभवी कानूनविदों का निःशुल्क सहयोग मिलता है।

बसन्त पंचमी को सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार व वैवाहिक परिचय सम्मेलनों में ब्राह्मण परिवारों का उत्साह देखते बनता है। पारिवारिक मिलन के साथ प्रतिमाह के दूसरे शनिवार सायं 5 बजे संस्था कार्यालय में सदस्यों की बैठक कोरोनाकाल के पहले तक नियमित होती रहीं।

हैदराबाद नगरनिगम के पूर्व मुख्य अभियंता प्रभातकुमार दुबे (उपाध्यक्ष), विजयपाल पाण्डेय (महामंत्री), भवानीप्रसाद तिवारी (सहमंत्री), गोपाल प्रसाद शुक्ला (कोषाध्यक्ष), राजेंद्र प्रसाद तिवारी (प्रचारमंत्री), विनोद प्रसाद तिवारी (जनसंपर्क मंत्री), श्रीमती शोभा रमेश दुबे (महिला विभाग मंत्री), आचार्य रत्न कला मिश्रा (सांस्कृतिक मंत्री), श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी (युवा विभाग मंत्री), श्री बाला प्रसाद तिवारी (संगठन मंत्री) एवं कार्यकारिणी सदस्यों में दुर्गा प्रसाद मिश्र, राहुल मिश्र, जागेश दत्त शुक्ल एवं विजय प्रकाश शुक्ल आदि की टीम अध्यक्ष डॉ रामकुमार तिवारी के नेतृत्व एवं निर्देशन में दक्षिण भारत में ब्राह्मणों को एकजुट करने व संस्कारित करने में प्राणपण से संलग्न है।❑

सिरदर्द व दिमागी कमज़ोरी में लाभकारी
भूत मार्का चार तेल
भूत निवास, गांधी नगर, कानपुर

नए संरक्षक

हृदयरोग व शल्य चिकित्सक डॉ विजय दीक्षित

जिला रायबरेली, गाँव सोतवा खेड़ा निवासी उप्र पुलिस के पूर्व महानिदेशक एवं श्री रामजन्मभूमि आंदोलन के योद्धा कीर्तिशेष श्रीशचंद्र दीक्षित के ज्येष्ठ पुत्र डॉ विजय दीक्षित पिछले तीन दशक से हैदराबाद अपोलो हॉस्पिटल में हृदयरोग विशेषज्ञ हैं। श्रीशचंद्र जी की छोटे पुत्र अनुपम दीक्षित जकार्ता में अपने परिवार के साथ निवासित हैं, तीन पुत्रियां श्रीमती बेला, श्रीमती वंदना व श्रीमती अर्चना अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

के जी मेडिकल कॉलेज, लखनऊ से एमबीबीएस व एमएस करने के बाद वर्ष 1980 में मेडिकल कॉलेज में लेक्चरर रहते हुए अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले डॉ विजय दीक्षित 1981-83 रेलवे हॉस्पिटल, चेन्नई में चिकित्साधिकारी रहे। वर्ष 1984-91 अपोलो अस्पताल, चेन्नई में अपनी सेवाएं दीं। 1991 से हैदराबाद अपोलो हॉस्पिटल में हृदयरोग विभाग के प्रमुख हैं।

अनन्य आत्मीयता व परिवारबोध से संपृक्त डॉ दीक्षित ने आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु व तेलंगाना के चिकित्सा-जगत में खासा नाम कमाया। लखनऊ मेडिकल कॉलेज की जूनियर डॉ रीता से विवाहित इस दम्पति की संतान शिवांगी एक एनजीओ चलाती हैं। एमबीबीएस, एमएस (सर्जरी) डॉ रीता दीक्षित भी अपोलो अस्पताल, हैदराबाद में कंसलटेंट हैं। जातीयता की भावना से ओतप्रोत डॉ दम्पति दक्षिण भारतीय कान्यकुब्ज समाज के संरक्षक सदस्यों में हैं।

कहना ना होगा डॉ विजय दीक्षित का मस्तिष्क अंधश्रद्धा, रूढ़ नैतिकता और अर्थहीन कुसंस्कारों तथा कट्टरता की श्रंखला से मुक्त है। उत्साह तथा स्फूर्ति की मूर्ति उदारमना, ध्येय के प्रति निष्ठावान दीक्षित जी कान्यकुब्ज समाज को संगठित, विकसित और प्रगतिशील देखने के प्रबल पक्षधर हैं। समाज को आप से अनेक आशाएं हैं।❑

स्मृतिशेष पं. लक्ष्मी नारायण मिश्र व श्रीमती कमला मिश्रा की सुपौत्री

आयुष्मती धरिणी (आत्मजा - अरुण - स्नेह मिश्रा) का शुभविवाह 9 फरवरी, 2020 को फतेहपुर के श्री राजेश - नीलम तिवारी के आत्मज चि. अभिषेक के साथ सिविल लाइंस, कानपुर के लिटिल सैफ में गरिमामय वातावरण के साथ सम्पन्न। विवाह समारोह में नाते- रिश्तेदारों, सगे-सम्बन्धियों तथा समाज के प्रबुद्ध महानुभावों के साथ उपस्थित कानपुर शहर के सांसद पं. सत्यदेव पचौरी, विधायक श्री सुरेश मैथानी, विधायक श्री सलिल विश्नोई आदि ने नवदम्पति को सुखमय जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया। ॐ स्वस्ति।

मांगलिक

सैवसू (कानपुर देहात) के स्मृतिशेष पं. कौशल किशोर शुक्ल के सुपौत्र चि. सिद्धार्थ (आत्मज - सुशील-नम्रता शुक्ला) एवं सौभाग्यकांक्षिणि आकांक्षा का पाणिग्रहण संस्कार 15 फरवरी, 2020 को फरीदाबाद स्थित जन्नत-महल में सोल्लास सम्पन्न। स्वजनों सहित बैंकिंग सेवा तथा प्रशासनिक क्षेत्र की उपस्थिति में सुरुचिपूर्ण भोज में वर-बधू के सार्थक और यशस्वी दाम्पत्य-जीवन की मंगलकामनायें की गईं। ॐ स्वस्ति।

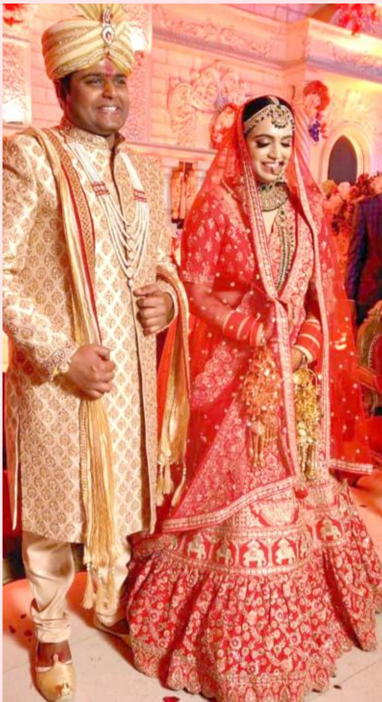

Stay Like Home

Eat Like Home Taste

रहने में घर जैसा आराम
खाने में घर जैसा स्वाद

Hotel Adarsh Niwas

483, 1st Floor, Haider Kuli Corner, Chandni Chowk, Delhi-110006
Telephone: +91-11-23987576, 23929139, 23961667, +91-9013002160
E-mail: info@hoteladarshniwas.com

प्रो. पंडित रामदेव शर्मा

वैवाहिक विवरण

युवा वर्ग

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Aayansh	Upmanyu		28.07.93	5'7"	MBBS	Indian Army		C K Agnihotri	Jaipur	9829251065
2	Aayush			28.07.93	5'7"	MBBS	Indian Army Capt.	Jaipur	C Agnihotri	Jaipur	9829251065
3	Abhay	Katyan		07.07.89	5'1"	B Tech	Working		Atul Mishra	Kanpur	9415734174
4	Abhijeet	Upmanyu		34 Yrs.	5'9"	M.B.A(IIM)	MNC	Mumbai	Y.K.Bajpai	Kanpur	9616423242
5	Abhijeet	Bharadwaj	Divorcee	14.08.79	5'10"	B.Com, MBA	Working	New Delhi	Vijay Trivedi	Lucknow	9026844909
6	Abhinav	Kashyap	Aadi	15.08.81	5'9"	B.Com,M.B.A.	Working	Lucknow	J N Mishra	Lucknow	9453005857
7	Abhinav	Katyan	Madhya	13.03.88	6'	B.Tech	TCL	Pune	A.K.Dwivedi	Lucknow	9936452439
8	Abhinav	Kashyap		03.03.92	6'1"	B Tech	Sofft. Engg.	Noida	M Tiwari	Kanpur	8840387856
9	Abhishek	Bharadwaj	Madhya	10.10.86	5'7"	BCA MBA	Sofft. Engg.	Delhi	A. K Pandey	Lucknow	9450018055
10	Abhishek	Upmanyu	Madhya	18.11.90	5'8"	B Tech	MNC	Banglore	Girish Bajpai	Kanpur	9313340042
11	Abhishek	Upmanyu		16.02.93		B Tech MBA	Business		Mr Awasthi	Kolkata	9830082587
12	Abhishek	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'10"	MBA LLB	Working	Kanpur	A N Dwivedi	Kanpur	9450146099
13	Abhishek	Kashyap		12.11.89	5'6"	B Tech	Working		S N Tiwari	Bareli	9759574811
14	Abhishek	Upmanyu	Madhya	02.11.87	5'9"	B Tech	IBM	Hyderabad	K G Bajpai	Banda	8115892903
15	Abhishek	Shandilya	Madhya	24.08.91	5'7"	B Tech	Bank P O	Fatehpur	R Mishra	Lucknow	8840372358
16	Adarsh	Upmanyu	Antya	05.08.92	5'6"	B Tech	MNC	Noida	S Dubey	Orai	9455784846
17	Aditya			24.07.93	5'9"	LLB	Advocate	Delhi	A Tiwari	New Delhi	9711158848
18	Aditya	Bharadwaj	Antya	21.10.92	5'7"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	A Shukla	Fatehpur	7985450956
19	Aishvarya	Kashyap	Antya	06.11.88	5'5"	MA,BED.	Working	Delhi	Rajesh Tripathi	Kanpur	9415569546
20	Ajay	Kashyap	Antya	12.06.88	5'9"	B Tech NIT	Tab Steel	Tata Nagar	M Mishra	Kanpur	9532377914
21	Akanksh	Upmanyu	Antya	29.09.90	5'5"	MBBS,MS(Ortho)	Doctor	Hyderabad	R. Dubey	Hyderabad	9676331222
22	Akash	Upmanyu	Aadi	11.07.90	5'11"	B.Tech	MNC		N Bajpai	Kanpur	7376299046
23	Akhil	Upmanyu	Madhya	28.06.93	5'8"	M.TECH(MNIT)	Cisco	Chennai	M.K Bajpai	Gwalior	9926518418
24	Akhilesh	Bharadwaj	Manglik	17.12.87	6'	B.TECH	TCS	Kolkata	Pawan Shukla	Kolkata	9836067192
25	Akshat	Kashyap	Madhya	21.06.84	5'10"	B Tech PGDM	SBI Bank		S Tiwari	Mirzapur	8948461866
26	Akshat	Upmanyu	Aadi	23.05.85	5'11"	M Com	Asst. Manager		G P Bajpai	Sadar	9422807561
27	Akshay	Katyan	Aadi	18.11.88	5'8"	BBA, CCNA	MNC	Gurugram	U.N.Mishra	Lucknow	9897452185
28	Aman	Bharadwaj	Antya	08.10.91	6'	BE	Manager	Ambicapur	G Trivedi	Kanpur	8085783341
29	Amar	Upmanyu	Antya	25.12.85	5'5"	M.Tech.	MNC	Pune	R.C.Awasthi	Delhi	8527395603
30	Amit	Upmanyu	Antya	07.09.91	5'9"	BBA,LL.B	Manager	Noida	B.P Dwivedi	Kanpur	8604700313
31	Amit	Kashyap	Madhya	03.02.88	5'7"	B.E	Quality	Udaipur	G Tiwari	Udaipur	9414238854
32	Amit	Shandilya		15.08.84	5'8"	MCA,BED.	Teacher	Orai	A.K.Mishra	Orai	9889225623
33	Amit	Kashyap		29.03.84	5'	B.Tech	CCI	H P	Uma Dixit	Lucknow	9455508989
34	Amit	Kashyap	Aadi	17.10.90	5'9"	BBA MBA	Business		R Tiwari	Nagpur	7875911631
35	Amul	Shandilya		22.04.92	5'11"	B Tech M Tech	Civil Engg.		Mishra	Kanpur	9453041636
36	Anand	Garg		15.05.85	6'2"	B E	Service	Gujrat	Pratibha Shukla	Kanpur	9329955405
37	Anant	Katyan		19.04.89	5'9"	LLM (DU)	OWN Biz.	New Delhi	A Mishra	Agra	9411922924
38	Anirudh	Kashyap	Antya	30.04.87	5'4"	M.SC	Working	Himanchal	B Tiwari	Himanchal	8800422667
39	Ankan	Shandilya	Antya	16.09.92	6'1"	B.Tech	Infosys	Mysore	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
40	Ankesh	Bharadwaj	Madhya	29.07.85	5'8"	B.Tech.,MBA	MNC	Banglore	A.K.Pandey	Bhopal	9425682050
41	Ankit	Shandilya	Antya	22.08.85	6'2"	B.Tech MBA	AVP	Kanpur	A Mishra	Kanpur	9936483912
42	Ankit	Bharadwaj		11.03.87	6'	B Tech	Service	Banglore	R Trivedi	Kanpur	9450125732
43	Ankit	Bharadwaj		14.05.85	5'7"	M Com, MBA	Working	Noida	K K Pandey	Kanpur	9336998383
44	Ankit	Kashyap		20.12.90	5'8"	M Pharma MBA	Working	Vadoda	C P Tiwari	Lucknow	9450840265
45	Ankit	Bharadwaj		24.04.91	5'9"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	S K Shukla	Kanpur	9839303507

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Ankit	Shandilya		08.05.90	6'	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	A K Mishra	Orai	9889225623
47	Ankur	Kashyap	Madhya	29.06.88	6'1"	B.Tech	Soft Engg	Pune	R S tiwari	Bilaspur	7000649784
48	Ankur	Bharadwaj		22.08.85	5'8"	MBBS	Doctor	Lucknow	Vinod Shukla	Lucknow	9005716002
49	Ankur	Bharadwaj		13.12.83	5'3"		Officer		S K Pandey		9557049492
50	Ankur	Bharadwaj	Madhya	25.09.90	6'	MCA	Sofft. Engg.	Banglore	A K Shukla	Kanpur	9415169529
51	Ankush	Bharadwaj		16.11.92	5'11"	Graduate	Sofft. Engg.	USA	AK Pandey	Delhi	9899784632
52	Ankush	Bharadwaj		16.11.92	5'11"	B Tech MSC	Working		A K Pandey	Delhi	9811424632
53	Anshuman	Kashyap	Aadi	25.01.88	5'8"	M COM	Manager	Etawah	A Tripathi	Etawah	9411993442
54	Antariksh	Katyan	Aadi	23.11.89	5'7"	B-Tech,	MNC	Gurugram	K.K. Mishra	Kanpur	9415431600
55	Anu	Kashyap		13.06.89	5'9"	MBBS	Metro Hospital	Delhi	S.G Dixit	Farukhabad	7974621202
56	Anuj	Upmanyu	Antya	15.08.74	5'5"	BA	Service	Mumbai	AK Dwivedi	Jalaun UP	9322141455
57	Anupam	Bharadwaj		29.06.84	5'5"	B Tech	Sofft. Engg.	Banglore	A Shukla	Kanpur	9450496109
58	Anupam	Kashyap	Antya	15.07.88	5'5"	M.Com,MBA	Moody's	Gurgaon	N.S Tripathi	Lucknow	8299654731
59	Anuraag	Bharadwaj		27.05.87	5'9"	B.Tech	SAIL	West Bangal	Anil Pandey	Sitapur	9839717959
60	Anuraag	Kashyap		04.11.88	5'5"	B Tech	Sofft. Engg.	Canada	R K Tiwari	Kanpur	9862487293
61	Arihant	Bharadwaj		01.08.88	6'2"	MBA	MNC	Hyderabad	A Shukla	Hyderabad	9704916421
62	Arpit	Upmanyu	Madhya	15.11.87	6'	B. Tech	Branch Manager	New Delhi	Rawasthi	Rewa	9399628312
63	Arvind	Upmanyu	Antya	25.08.88	5'4"	BA	Self Employ	Lucknow	S.N Dwivedi	Haidergarh	9455871884
64	Ashish	Upmanyu	Aadi	01.06.86	5'8"	BE	TCS	USA	R.S Dubey	Muzaffarpur	9430933254
65	Ashish	Upmanyu		09.09.88	5'9"	B.A.	Business	Lucknow	R.N.Trivdi	Lucknow	9454242424
66	Ashish	Upmanyu	Aadi	07.11.81	5'7"	B Tech, MBA	MNC	Lucknow	A K Awasthi	Lucknow	9936400675
67	Ashish	Katyan		24.06.88	5'8"	BA. B Ed	Reliance	Kanpur	S K Mishra	Hardoi	9369265810
68	Ashish	Bharadwaj	Madhya	21.11.87	5'7"	B Tech	MNC	Pune	S K Shukla	Kanpur	9450336902
69	Ashish	Katyan	Madhya	27.07.85	5'10"	MBA	IBM	Banglore	A Mishra	Kanpur	9450635424
70	Ashish	Bharadwaj	Antya	25.09.89	5'7"	BE,MTech	Service	Kuwait City	Y.S Shukla	Unnao	8369492792
71	Ashish	Bharadwaj		33 Yrs.	5'6"	High school	Business	Kanpur	S K Shukla	Kanpur	7752944773
72	Ashish	Bharadwaj	Antya	11.04.88	5'8"	BE Engg.	Service	Bhopal	A K Trivedi	Bhopal	9425600600
73	Ashish	Bharadwaj	Aadi	17.11.89	5'9"	B.Tech	Working	Singrauli	U Shukla	Gaya	8544310205
74	Ashish	Bharadwaj		29.07.89	5'8"	MBA MICA	Asst. Manager	Mumbai	B K Shukla	Kanpur	9450130799
75	Ashish	Upmanyu	Madhya	26.10.88	5'8"	B Tech	Wipro	Noida	R Awasthi	Kanpur	9839188266
76	Ashu	Shandilya		24.12.88	5'2"	MCA	Working	Patna	S K Dixit	Delhi	9811235591
77	Ashutosh	Upmanyu	Madhya	01.10.88	5'8"	BSC	Merchant Navy		G N Bajpai	Kanpur	9453815215
78	Ashutosh	Katyan		04.03.92	5'10"	B.com M.com	Working	Dehradun	A K Mishra	Rishikesh	9837089868
79	Ashutosh	Upmanyu		27.02.89	6'	Working	LIC		A Dwivedi	Kanpur	9451427339
80	Ashwani	Bharadwaj		31.07.83	5'6"	BA	Business	Kanpur	S Shukla	Kanpur	9657666327
81	Atul	Kashyap		21.08.88	5'4"	Mcom	Business	Hamirpur	S Tiwari	Kanpur	9335762954
82	Arun	Bharadwaj		02.04.84	5'5"		Railways	Ahemdabad	S K Shukla	Kanpur	7275180752
83	Aryan	Shandilya		18.06.86	5'10"	B Tech	Business	Delhi	S M Tripathi	Delhi	9810295454
84	Avinash	Shandilya		1995	5'7"	B Tech	Web Designer	Lucknow	K R Mishra	Lucknow	9453890107
85	Ayush	Katyan		21.09.94	5'8"	B Tech	Business	Lucknow	A Mishra	Lucknow	7007785496
86	Bhasker	Katyan	Aadi	11.01.87	5'10"	M.com LLB	Practice Court	Kanpur	G D Mishra	Kanpur	9452496423
87	Brahmendra	Kashyap	Madhya	19.02.80	5'7"	BCom	Photographer	Jabalpur	B. Tiwari	Jabalpur	9907286364
88	Chakrapadi	Katyan		01.12.89	5'9"	B Tech(NITN)	PCS Officer	Utrakhand	R J Mishra	Lucknow	9415752075
89	Chandan	Upmanyu		25.12.86	5'9"	B.A	Business	Lucknow	J.P.Awasthi	Lucknow	9936530032
90	Chandra Prakash	Kashyap	Antya	31.01.84	5'6"	M.Com	Business	Kanpur	B.S. Tripathi	Kanpur	9044512978
91	Chandrasekhar	Bharadwaj	Madhya	09.01.87	5'6"	MAC, BAD	Teacher	Jhabua	Azad Sharma	Jhabua	9714709819
92	Chinmay	Kashyap		19.01.89	6'	MA	Working	Indore	S Dixit	Indore	9425400847
93	Deepak	Bharadwaj		16.09.85	5'11"	IIT M.Tech	Bank Manager	Mumbai	Manju Trivedi	Kanpur	9415727581
94	Deepankar	Upmanyu	Antya	03.06.88	5'8"	B Tech	Sofft. Engg.	Pune	D Dwivedi	Kanpur	9415479269
95	Devas	Bharadwaj		08.02.87	5'9"	BE	Working	Delhi	D K Shukla	Kota	9414189670

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV LOCN.	PARENT NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Devesh	Bharadwaj		27.07.81	5'9"	B.Sc, MBA	Officer PSU	Gandhinagar	S.C. Shukla	Gandhinagar	9737877705
97	Divyanshu	Katyan	Madhya	13.12.87	5'9"	MBA	Astt Mngr	Delhi	A.K. Mishra	Lucknow	9838792102
98	Dr Dharmes	Kashyap	Aadi	13.11.83	5'9"	B.D.S	Practice	Dubai	Mrs P Tewari	Lucknow	9554477880
99	Gajendra	Kashyap		31.08.89	5'8"	B.com	Business	Jabalpur	K P Tiwari	Jabalpur	9907286364
100	Ganesh	Upmanyu		33 YRS.	5'8"	IIT,ISB	Service	Gurugram	O.P.Awasthi	Kanpur	9935317848
101	Gaurav	Upmanyu	Madhya	27.04.88	5'10"	B.TECH, MBA	Regional Mngr	Lucknow	S.C Bajpai	Lucknow	9452735770
102	Gaurav	Shandilya		24.02.87	5'6"	MA	PNB	Kanpur	R.S Mishra	Kanpur	9918475086
103	Gaurav	Katyan		24.10.90	5'7"	BE	Project Engg	Pune	S.K Mishra	Lucknow	8840284768
104	Gaurav	Bharadwaj	Madhya	23.10.88	6'	B TECH	DELL	Noida	D.K Pandey	Kanpur	7599101722
105	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.12.87	5'11"	B Tech(NIT), PGDM	ICICI Bank	NCR	O.S.Mishra	Kanpur	9935616625
106	Gaurav	Shandilya	Aadi	16.01.84	6'	B.Tech	TATA Power	Orissa	S.Mishra	Lucknow	9415794058
107	Gaurav	Kashyap	Antya	12.06.85	5'5"	B.TECH, MBA	Business	Orai	S.R Dwivedi	Jalaun	8382947554
108	Gaurav	Shandilya	Aadi	02.11.91	5'6"	B.Tech	Soft.Engineer	Delhi	S.D Mishra	Hardoi	9811733294
109	Gaurav	Upmanyu		27.04.88	5'9"	B Tech MBA	Working	Lucknow	S C Bajpai	Lucknow	9452735770
110	Hariom	Bharadwaj	Madhya	07.03.88	6'2"	B Tech NIT	MNC	Delhi	R Shukla	Bhopal	9849158318
111	Haritabh	Sankrit		30.09.86	5'7"	M B A	Self Employed	Kanpur	Ajay Shukla	Kanpur	9415050280
112	Harsh	Bharadwaj		29.01.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Jayant Shukla	Kanpur	9919333014
113	Harshal	Kashyap	Aadi	19.12.88	5'9"	BA MSHW	Business	Maharastra	R.S Tiwari	Risod	9921260143
114	Harshit	Shandilya		09.06.91	5'8"	B Tech	DELL	Banglore	S C Dixit	Kanpur	9670782776
115	Hemant	Bharadwaj	Aadi	30 yrs	5'5"	LLB	Advocate	Lucknow	S N Pandey	Lucknow	9044421708
116	Himanshu	Katyan	Antya	08.11.86	5'8"	B.Tech, MBA	Mercedez	Bengaluru	P.K. Mishra	Varanasi	9451938889
117	Himanshu	Shandilya		22.09.88	5'7"	B.Tech	TCS	Pune	A.N. Dixit	Gorakhpur	8588071087
118	Himanshu	Bharadwaj	Aadi	06.02.88	5'5"	BBA,MBA	CITI	Mumbai	S.C.Shukla	Lucknow	9839014905
119	Himanshu	Katyan		05.06.90	5'7"	B.Tech	Civil Engg.	Sultanpur	R.N Mishra	Kanpur	9415727238
120	Himanshu	Katyan		05.06.90	5'7"	B Sc B Tech	Civil Engg.	Ranchi	R N Mishra	Kanpur	9415727238
121	Ishan	Upmanyu	Antya	16.6.89	5'7"	B.Sc	Indian Army Capt.	J&K	Mahesh Dixit	Bhopal	7587598015
122	Jayant	Upmanyu		10.09.87	5'7"	B.Tech.,MBA	MNC	Gurugram	P.K.Agnihotri	Kanpur	9936150917
123	Jaypraksh	Shandilya	Madhya	22.08.84	5'7"	com. hard .eng.	Engineer	aurangabad	Vijay Mishra	Aurangabad	8482824522
124	Kanhaiya	Upmanyu	Aadi	19.11.90	5'6"	B. Com,	Working	Andheri	K Dubey	Jhansi	8007256328
125	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6'	BE M tech	Working	Gurgaon	G Awasthi	Ghaziabad	9924292224
126	Kartik	Upmanyu		02.01.90	6'	M Tech	Engineer	Gurgaon	K Awasthi	Gujrat	9824233659
127	Kartikeya	Katyan	Madhya	25.11.88	6'	B.Com LL.B	Practicing	Noida	Suman Mishra	Delhi	9818678011
128	Kartikeya	Katyan	Madhya	25.11.88	6'	B Com LLB CS	Business	Delhi	D Mishra	Delhi	9818678011
129	Kshitij	Upmanyu	Madhya	05.06.88	5'10"	B.Tech	MNC	Noida	V.K.Agnihotri	Gahziabad	8130743430
130	Kshitij	Kashyap		24.03.91	5'10"	BE (BITS)	Working	Mumbai	P Tripathi	Unnao	9804242502
131	Kshitij	Kashyap	Antya	01.03.93	5'8"	B Tech it	ONGC	Chennai	B Tripathi	Jabalpur	9415000201
132	Kunaal	Shandilya	Antya	03.06.85	5'8"	B.Tech.,	S.W Engg	Mumbai	R.K.Mishra	Lucknow	9918383464
133	Kunal	Bharadwaj	Aadi	22.01.84	6'1"	MBA	Working	Lucknow	Kunal Shukla	Lakhimpur	8808089152
134	Kush	Sankrit	Antya	02.09.88	5'9"	B.Tech	Bharti Airtel	Mumbai	S.P. Shukla	Kanpur	9889553612
135	Madhvedra	Katyan		21.06.91	5'11"	B Tech	Service	Pune	R K Shukla	Lucknow	9450672302
136	Mahesh	Sankrit	Antya	14.12.89	5'9"	MBA	Bank	Jagdalpur	R K Pandey	Reewa	9109711683
137	Maj. Ram	Upmanyu		27.03.89	5'8"	B.Tech	Indian Army		R.K. Dubey	Jabalpur	9424357435
138	Malay	Kashyap	Aadi	19.09.90	5'8"	B.TECH	Bajaj	Lakhimpur	P.N Tiwari	Kanpur	9452364432
139	Manish	Kashyap	Madhya	27.09.78	5'6"	M.Com, MBA, LLB	Advocate	Bhopal	G.M.Tripathi	Kanpur	9753416001
140	Manish	Upmanyu		10.08.82	5'10"	M Tech	L&T	Vadodara	Y N Bajpai	Kanpur	9336123644
141	Manu	Katyan	Aadi	06.07.84	5'8"	MCA MS	Working	Cikago	A.K.Mishra	Bareili	9410431399
142	Manu	Upmanyu	Antya	24.06.87	6'	B.Tech.,	P.O.Bank		R K Awasthi	Lucknow	9936213811
143	Mayank	Bharadwaj	Aadi	22.12.83	5'10"	B.Tech.,	R Jio	Kanpur	P.Shukla	Kanpur	9807147903
144	Mayank	Katyan	Aadi	17.10.85	5'8"	B.Des(NIFT)	Lifestyle	Bengaluru	S.K. Mishra	Kanpur	9415438164
145	Mayank	Upmanyu	Antya	30.06.87	5'6"	BBA MBA	Working	Gurgaon	A K Awasthi	Kanpur	9532098695

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Mayank	Upmanyu		11.06.89	5'10"	BE M tech	Working	Hyderabad	M K Dubey	Indore	9993912186
147	Mayank	Bharadwaj		19.08.87	6'1"	Enginering	Merchant Navy		Y Shukla	Kanpur	9935968533
148	Mohit	Bharadwaj		09.10.89	5'6"	B.COM, BED	Business	Kanpur	O.P Shukla	Kanpur	9839104819
149	Mohit	Bharadwaj	Aadi	19.08.92	5'9"	B Tech	L & T	Varodra	A Shukla	Agra	9528324823
150	Mohit	Shandilya	Aadi	04.07.88	5'11"	B Tech MBA	TCS	Mumbai	P Mishra	Kanpur	8317093609
151	Mohit	Kashyap	Aadi	29 yrs.	5'7"	M Tech	Persuing PHD		R K Tiwari	Kanpur	9910906133
152	Mridul	Kashyap		15.08.88	5'6"	B.Tech	Ericsson	Delhi	A.K.Tripathi	Jhansi	9453622253
153	Mukul	Upmanyu	Madhya	08.06.88	5'8"	BSc, MCA	Govt. Job	Lucknow	U.C. Bajpai	Lucknow	9889719019
154	Mukul	Bharadwaj	Antya	02.10.92	5'7"	M.TECH	Assistant professor	Raipur	Ravikant Trivedi	Raipur	9425201545
155	Mukund	Kashyap	Antya	30.12.89	5'11"	B Tech MBA	Asst. Manager		M S Tripathi	Unnao	9235796103
156	Narendra	Katyan		06.11.78	5'6"	B.A.	OWN Biz.	Kanpur	P.K.Mishra	Kanpur	7355717632
157	Narendra	Shandilya	Madhya	07.12.86	5'11"	B.A., PGDCA	Self Employed	Indore	S.D Dixit	Indore	9424012517
158	Nikhar	Kashyap		22.05.91	5'11"	B SC MBA	Senior Analyst	Gurugram	N Tripathi	Kanpur	8299726705
159	Nishit	Katyan	Antya	03.09.88	5'8"	B.Tech.,	TCS	Lucknow	Vinodmishra	Lucknow	9415904841
160	Nitin	Shandilya		23.04.87	5'9"	B.Com, MBA	Service	Amrawati	P Mishra	Amrawati	8600998355
161	Nitin	Shandilya	Madhya	23.01.87	6'2"	MCA	Lecturer	Bhopal	Indresh Dixit	Bhopal	7000201357
162	Nitish	Bharadwaj	Madhya	08.03.90	6'2"	B com MBA	Manager	Pune	VK Shukla	Pune	8806992260
163	Nitish	Kashyap		28.11.90	5'9"	B Tech	Infosys	Hyderabad	S Dubey	Hyderabad	9440848560
164	Nitish	Shandilya	Madhya	16.04.91	5'7"	B Tech	Working	Banglore	N Dixit	Kanpur	8840176657
165	Pawan	Upmanyu		24.04.84	5'7"	B.A.	Service	Jaunpur	O.P. Dewedi	Kannoj	9651587429
166	Prafull	Shandilya		22.07.92	5'8"	B Tech MBA	Entrepreneur	Kanpur	Y D Dixit	Kanpur	9919970101
167	Pourush	Upmanyu	Aadi	19.09.88	5'11"	BE, M.Tech	SBI	Durg	Arvind Awasthi	Bhilai	7409175092
168	Prakhar	Bharadwaj		01.11.92	5'9"	B Tech (ME)	Ex. Engg.	Mumbai	Pandey	Lucknow	7905340376
169	Pranshu	Shandilya	Madhya	14.03.90	6'	B Com	Working	Gurgaon	A Mishra	Delhi	9311601401
170	Pranjal	Kashyap	Antya	25.04.88	5'7"	B.Tech	HP	Bengaluru	Prakash Tiwari	Unnao	9450020858
171	Prashant	Upmanyu	Antya	05.01.88	5'9"	M.Sc.(BITS Pilani	Oracle	Banglore	S.K.Awasthi	Kanpur	8720053266
172	Prashant	Upmanyu		27.09.89	5'9"	B Com, MBA	Service	Delhi	A Awasthi	Lucknow	9450652296
173	Prashant	Upmanyu	Madhya	01.07.90	5'11"	M Com M sc	Company	Haryana	H S Bajpai	Haryana	8882362115
174	Prateek	Bharadwaj		31.01.95	5'6"	BE	Deffence	Haryana	Dev Raj	Haryana	9740179801
175	Prateek	Katyan	Aadi	26.10.89	5'11"	B.TECH, MBA	MNC		Beena Mishra	Kanpur	9347529454
176	Pritesh	Sankrit	Aadi	24.12.90	5'6"	B Tech	Company	Delhi	A Shukla	Kanpur	9454087264
177	Puneet	Katyan	Antya	17.11.90	6'	B Tech	MNC		S C Mishra	Lucknow	8707809137
178	Puneet	Bharadwaj		11.05.92	5'9"	M COM MBA	Business	Jaipur	D Shukla	Jaipur	9414075174
179	Pushpendr	Kashyap		02.07.91	5'11"	B Tech	Govt.itnruction	Kanpur	Rajesh Tripathi	Kanpur	7510086965
180	Raghav	Shandilya	Aadi	08.08.90	5'7"	M Tech	Analytics	Mumbai	S.K.MISHRA	Kanpur	9415590749
181	Rahul	Kaushik	Antya	06.01.86	5'11"	B.COM, MBA	Self Employed	Sagar	S.G Dubey	Sagar	8889022999
182	Rahul	Katyan	Aadi	16.07.85	5'4"		KESCO	Kanpur	B P Mishra	Kanpur	9473693278
183	Rahul	Katyan	Antya	04.09.89	5'11"	MBA	Pvt Job	Barelliy	B.K. mishra	bareilly	8126565600
184	Rahall	Katyan	Aadi	16.07.85	5'4"		Working		B P Mishra	Kanpur	9473693278
185	Rajat	Kashyap	Aadi	13.11.90	5'6"	B Tech	Officer	Mumbai	M Tripathi	Unnao	9969253892
186	Raj Kishore	Katyan	Aadi	04.05.70	5'9"	M,Com LL.B	Advocate	Hyderabad	G Mishra	Hyderabad	9848560876
187	Rajan	Bharadwaj	Antya	12.01.90	5'9"	BE	Soft. Engg.	Pune	C Chaturvedi	BHOPAL	9406903868
188	Rajiv	Katyan		19.06.90	5'10"	B Tech	MNC	Gurugram	N K Mishra	Kanpur	7275990253
189	Ram	Sankrit		08.03.77	5'10"	B.Com	INVEST. ADVO.	Kanpur	G.S.Shukla	Kanpur	9889526808
190	Ranaveer	Severn		28.08.85	5'10"	B.Tech.,	Oracle	Banglore	J.N.Tiwari	Kanpur	9415133084
191	Raval Sagar	Bharadwaj	Aadi	10.11.89	5'3"	10th, ITI	Business	Dist. Su.Nagar	Prabhasankar	Gujarat	8200989584
192	Ravi	Bharadwaj		27.11.86	5'6"	B.Tech.,	HCL	Noida	A.K.Pandey	Lucknow	9451002606
193	Rishee	Bharadwaj		07.11.88	5'11"	B.Tech	MNC	Banglore	Y.K.Pandey	Jaipur	9929115628
194	Ritam	Bharadwaj	Madhya	07.06.92	5'8"	B Tech	Amazon.com	Seattle	Pranav Shukla	Kanpur	9839212801
195	Robin	Katyan	Madhya	24.08.86	5'9"	B.Tech	Asst. Manager	Mumbai	S.C.Agnihotri	Lucknow	9451063051

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Rohan			18.04.86	5'10"	LLM MBA	Manager	Mumbai	V Sharma	Amrawati	9370930777
197	Rohit	Bharadwaj		16.06.92	5'6"	B COM	Business	Kanpur	O P Shukla	Kanpur	7860419999
198	Rohit	Upmanyu	Antya	01.05.87	5'8"	BE, MS	Working	California	D.M Dubey	Solapur	9370422380
199	Rohitash			09.05.85	5'8"	B.Sc,MBA	Working	Ghaziabad	S N Mishra	Barabanki	9451529439
200	Shakul	Kashyap	Aadi	26.08.91	5'6"	B Tech	Sofft. Engg.	Banglore	V Dubey	Oraiya	9058889841
201	Salil	Bharadwaj	Aadi	15.11.88	5'5"	B.TECH	Oracle	Chennai	A.K Dixit	Agra	9758935949
202	Sanjay	Kashyap		08.06.71	5'4"	BA	Working	Raiberely	H.S.Tiwari	Raibarelly	5352211555
203	Sarvesh	Bharadwaj		02.07.87	5'8"	BE MBA	ICICI Bank	Hyderabad	H N Dixit	Gwalior	6376315180
204	Saumitra	Katyan		12.08.89	5'5"	B Tech	Bank Manager	Kanpur	A Mishra	Lucknow	9415560808
205	Saurabh	Upmanyu	Aadi	16.09.89	6'	B Sc	Central Govt	New Delhi	A Dwivedi	Jhansi	9236923675
206	Saurabh	Katyan	Antya	24.04.88	5'6"	MBA	Working	Lucknow	Arvind Mishra	Lucknow	9120110396
207	Saurabh	Bharadwaj	Madhya	07.12.82	6'	M.Com .	Govt Service	Kota	R.K.Shukla	Kota	9414938823
208	Saurabh	Bharadwaj	Aadi	01.06.84	5'6"	Diploma	VOLTAS	Kanpur	A.P.Shukla	Kanpur	9335121850
209	Saurabh	Bharadwaj	Antya	19.12.91	5'9"	B Com PGDCA	Civil		D Shukla	Raipur	9425205383
210	SAURABH	Garg	Antya	16.06.91	5'10"	B.Tech, MBA	Colgate Palmolive	Chennai	L.K Pandey	Allahbad	9424120637
211	Saurabh	Upmanyu	Aadi	27.08.88	5'7"	B.Tech, MBA	Asst. Manager	Lucknow	T.N Dwivedi	Lucknow	9936101701
212	Saurabh	Kashyap		18.12.93	6'3"	CA	Service	Kolkata	R K Tiwari	Kolkata	9391158015
213	Somji	Bharadwaj	Antya	15.02.88	5'7"	MCA	Sofft. Engg.	Delhi	A Trivedi	Kanpur	6394355315
214	Shailendra	Shandilya	Madhya	23.07.83	6'	MBBS	Pursuing MD		R.C.Dixit	Unnao	9793261855
215	Sharad			26.10.85		BCA	Sales Officer	Mumbai	S P Tiwari	Kanpur	9628835452
216	Shashank	Kashyap		28.12.86	5'6"	B.Sc ,MBA	Working	USA	Umesh Tiwary	Delhi	9818707398
217	Shashank	Bharadwaj		04.03.91	5'6"	B Tech	Infosys	Pune	S Pandey	Kanpur	9450135061
218	Shashwat	Bharadwaj		25.09.87		B.Tech,MBA		Dubai	R Pandey	Kanpur	9415733447
219	Shashwat	Shandilya	Antya	19.10.88	5'10"	B Sc	Central Excise	Karvi	A C Dixit	Lucknow	8052691999
220	Sheel	Kashyap	Antya	28.12.78	5'8"	M.Sc, MBA	Lecturer	Lucknow	G.H.Awasthi	Lucknow	9415794589
221	Shidharth	Upmanyu		29.07.91	6'2"		Working	USA	S Trivedi	Ahmedabad	9898474922
222	Shikhar	Kashyap	Madhya	11.08.89		MBA	Own Biz.	Raipur	S Tiwari	Pune	7250011947
223	Shishir	Bharadwaj	Antya	28 YRS.	5'8"	B Tech	MNC	Bengaluru	A K Trivedi	Shuklaganj	9451548120
224	Shishir	Bharadwaj	Antya	20.08.88	5'8"	B Tech	Sofft. Engg.	Banglore	A Trivedi	Kanpur	9451548120
225	Shivam	Kashyap	Aadi	10.01.90	5'6"	MCA	TCS	Indore	VK Tripathi	Lucknow	9260969436
226	Shivam	Kashyap		28.08.90	5'6"	B Tech	Asst. Manager	Panipat	P K Tripathi	Faridabad	8447438966
227	Shivam	Garg	Aadi	10.02.92	5'8"	MBA	Business	Raipur	A Shukla	Raipur	9644699000
228	Shivam	Kashyap		28.08.90	5'6"	B Tech M Tech	Working	Panipat	R K Tripathi	Faridabad	8447438968
229	Shivankur	Sankrit		15.01.91	6'1"	LLM	Supereme Court	New Delhi	A Shukla	Kanpur	9044001828
230	Shobhit	Sankrit		04.03.93	5'8"	B Tech	Automobile Engg	Banglore	V.P Mishra	Lucknow	9454835232
231	Shobhit	Kashyap	Manglik	09.07.93	5'8"	B Tech	Job	Gurgaon	H Tripathi	Kanpur	9653076145
232	Shreesh	upmanyu	Antya	15.08.90	5'11"	MA	Working	Kanpur	A Bajpai	Kanpur	9794837727
233	Shrey	Sankrit	Madhya	23.12.82	5'9"	B Tech	TCS	Lucknow	S N Shukla	Lucknow	7846786559
234	Shreyansh	Kashyap		02.12.92	6'2"	BE	Business		S Tiwari	Kalapatha	9425193234
235	Shreyansh	Kashyap		18.05.95	6'	B Tech MS	Sofft. Engg.		R K Tiwari	Kanpur	9044019998
236	Shreyas	Kashyap	Aadi	31.10.88	5'7"	B Tech NIT	Business		A Trivedi	Maharastra	9820211630
237	Shubham	Vats	Madhya	13.02.88	5'10"	B.Tech	MNC	Ahmedabad	Anil Tiwari	Etawah	9415409967
238	Shubham	Bharadwaj	Antya	12.12.90	5'6"		HSBC	Pune	Shukla	Lakhimpur	9452513422
239	Shubham	Katyan		07.09.92	5'9"	B Tech	Working	MS Jermany	A K Mishra	Lucknow	9113694742
240	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	MS, PHD(USA)	Research Astt	Chicago	M.L.Trivedi	Pune	9096257755
241	Shubhendru	Upmanyu		09.11.86	6'	BE MS	Engineer	USA	M L Trivedi	Pune	9766914000
242	Shubrat	Kashyap	Aadi	17.06.83	5'8"	M.Com,MBA	Genpact	Gurugram	Ravi Tripathi	Kanpur	7275508227
243	Sidharth	Bharadwaj	Madhya	17.07.88	5'7"	B Tech	Working	Pune	R K Pandey	Kanpur	9415210728
244	Sidharth	Upmanyu	Aadi	29.07.91	6'2"	H Management	Working	USA	R Trivedi	Ahmedabad	9898474922
245	Sonu	Bharadwaj	Aadi	11.11.85	5'7"	M Tech	Working	Noida	S K Pandey	Gwalior	9407015945

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S.No.	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
246	Sonu	Bharadwaj	Aadi	24.11.85	5'9"	M Tech	MNC	noida	S K Pandey	Gwalior	9407465886
247	Shousya	Bharadwaj	Aadi	03.07.91	5'7"	B Tech	Working	Banglore	U D Shukla	Lucknow	8787015430
248	Suchitan	Upmanyu	Madhya	29.11.86	5'11"	MBA	Lecturer	Kanpur	S.N.Trivedi	Kanpur	9839300303
249	Sunil	Bharadwaj	Aadi	09.09.84	5'7"	MCA	Selt Occupied	Banglore	A Dubey	Kanpur	9739060321
250	Suraj	Kashyap	Antya	06.03.89	5'7"	MBA	Service	Durg	B Tiwari	Durg {C.G.}	9827190303
251	Suryansh	Katyan	Madhya	26.12.91		B Tech	TCS	Mumbai	A K Mishra	Lucknow	9838792102
252	Sushant			26.11.85	6'1"	B.Sc.MBA	Working	Delhi	H.D.Chaubey	Rajgarh	9939484830
253	Suyash	Upmanyu	Antya	20.01.88	5'11"	B.Com.	Mktg. Executive	Rajnandgaon	Sunil Bajpai	Kanpur	9301737555
254	Tarun	Bharadwaj	Madhya	08.07.90	5'9"	B Tech	Sofft. Engg.	Banglore	V S Pandey	Kanpur	9455359080
255	Umang	Bharadwaj		07.06.88	6'	MS MBA	Working	USA	G Dwivedi	Indore	7024342778
256	Udayan	Shandilya	Madhya	22.11.86	5'5"	M.Sc MBA	Govt. Ltd	Gwalior	Y D Mishra	Gwalior	9826297917
257	Utkarsh	Shandilya		22.02.88	5'11"	M.Tech.(BITS)	MNC	Banglore	P.K.Mishra	Kanpur	7275743955
258	Utkarsh	Katyan	Antya	05.06.86	5'9"	MBA	Medical Biz	Lakhimpur	D.C.Misra	Lakhimpur	9451687980
259	Utkarsh	Dhananjya		01.03.89	5'9"	B Tech	E.Commerce co.	Lucknow	P N Tiwari	Bareli	9839317538
260	Varun raj	Kashyap		10.01.93	5'10"	B Tech	Bank Manager	UP	A Tripathi	Unnao	8318639985
261	Vaibhav	Garg	Madhya	16.06.91	6'1"	B.TECH	Bank(PO)	Merath	H.K Chaturvedi	Kanpur	9792877087
262	Vaibhav	Bharadwaj		22.08.87	5'6"	B.Tech.,	Ericsson	Gurugram	K.K.Shukla	Kanpur	9958281964
263	Vaibhav	Shandilya	Antya	04.06.90	5'6"	B.Com, MBA	AXIS Bank	New Delhi	V K Mishra	Pilibhit	9410626492
264	Vaibhav	Upmanyu	Antya	30.07.90	5'9"	B.Tech	Power Plant	M.P	S.K. Bajpai	Merath	9358350093
265	Vaibhav	Shandilya	Manglik	29.05.94	6'	B Com	Business	Lucknow	S K Mishra	Lucknow	7007709259
266	Ved Vikas	Shandilya	Antya	05.03.91	5'8"	M.SC. B.ED	Teacher	Ahmedabad	A.K Dixit	Unnao	9913200388
267	Vibhor	Bharadwaj		27.11.92		B Tech	Asst. Engg.		Shukla	Lucknow	9794883336
268	Vividn	Shandilya	Antya	28.03.83	5'8"	M Tech	Sofft. Engg.	Banglore	A K Mishra	Etawah	9411867391
269	Vijay	Kashyap	Madhya	01.01.91	5'4"	BSc (Maths), ITI	Self Employed	Bhopal	Ajju Tiwari		7000069991
270	Vikaas	Bharadwaj	Antya	26.10.82	5'4"	MCA	S.W Engg	Noida	K.K.Bhardwaj	Kanpur	9793821021
271	Vikash	Upmanyu		10.10.82	5'10"	M COM	Private	Kanpur	V K Awasthi	Kanpur	6393239247
272	Vikrant	Vats	Antya	15.12.92	5'8"	B Tech MBA	Working	Banglore	Y Dubey	Kanpur	9450349526
273	Vimal	Kashyap	Aadi	10.01.88	5'7"	B.Tech.	Service	Pune	K Tiwari	Kanpur	9561478019
274	Vimal	upmanyu	Antya	15.09.89	5'4"	Under Gradutae	Pvt Job	Gurgaon	R Awasthi	Kanpur Dehat	9311718232
275	Vinay	Upmanyu		02.12.76	5'8"	MA. LLB	Govt Service	Burhanpur	Mrs Awasthi	Burhanpur	9165311846
276	Vinay	Upmanyu		08.11.89	5'8"	B Tech	Infosys	Hyderabad	K L Awasthi	Lucknow	9450458064
277	Vinod			15.02.82	5'9"		Business	Kanpur	S N Diwedi	Kanpur	7398163285
278	Vishaal	Garg		27.12.87	5'10"	BCA MBA	MNC	Delhi	R.K.Shukla	Lucknow	9936977763
279	Vishal	Upmanyu		29.02.92	5'11"	B.SC	Indian Airforce	Hyderabad	G Bajpai	Kanpur	9889315397
280	Vishal	Shandilya	Antya	10.11.92	5'9"	M A	R Jio	Lucknow	S Mishra	Lucknow	9935832287
281	Vishal	Shandilya	Madhya	11.10.92	5'9"	M A NIIT	Manager		S Mishra	Lucknow	7007709259
282	Vishesh	Kaushik		30.04.92	6'2"	M.Com	Sr. Consultant	Melbourne	Vipin Dubey	Bhopal	8109838010
283	Vivek	Bharadwaj	Aadi	07.11.84	5'10"	B.Tech.,	S.W Engg	Delhi	R.C.Pandey	Kanpur	9450327506
284	Vivek	Kashyap		22.03.76	5'8"	B.Com	Service	Lucknow	S.K.Sharma	Lucknow	9450112576
285	Vivek	Kashyap		10.07.73	5'6"	Double MA	Service	Kanpur	H.S.Tiwari	Kanpur	9455753557
286	Vivek	Upmanyu		04.12.90	5'11"	MCA	Sofft. Engg.	Gurgaon	R S Tiwari	Kanpur	9839475032
287	Yash	Bharadwaj		23.03.85	5'8"	B.Tech	Working	Delhi	P.Trivedi	Delhi	9868941052
288	Yash	Shandilya	Madhya	12.01.89	5'8"	Graduate	Sales	Delhi	A Mishra	Delhi	9718166678
289	Yogendra	Bharadwaj	Antya	31.10.78	5'4"	B.A, L.L.B.	Office	Kanpur	Y.K.Pandey	Kanpur	9455373843
290	Yogesh	Bharadwaj		30.03.91	5'7"	B.Tech.,	Astt Mngr	Chennai	S.C.Pandey	Kolkata	9903633761
291	Yogesh	Kashyap	Aadi	26.12.89	5'3"	M.Com, MA, LLB	Advocate	Philibhit	Mrs Pathak	Bithra	9759718916

यह वो जानकारी है जो हमें नाते-रिश्तेदारों, सगे-सम्बंधियों से व्यक्तिगत भेंट तथा पारिवारिक एवं मांगलिक समारोहों में स्वतः हो जाया करती थी। उन्हीं जानकारियों को हम अपने पाठकों से साझा कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी स्वयम् प्राप्त करें, पत्रिका को उत्तरदायी न बनायें।

ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। kkmanch@gmail.com/ 9310111069

वैवाहिक विवरण

युवती वर्ग

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
1	Anchal	Upmanyu		10.08.96	5'6"	B Tech	L&T	Mumbai	S Awashti	Kanpur	7985963062
2	Aarti	Katyan	Antya	22.10.86	5'2"	B.A	Working	New Delhi	S Mishra	New Delhi	9891444569
3	Aayusha	Upmanyu	Antya	01.02.91	5'3"	Bcom, MBA			A Awasthi	Lucknow	8423771880
4	Aditi	Katyan		10.07.90	5'6"	B E	MNC	Delhi	Mr. Mishra	Gurugram	9425808631
5	Aditi	Bharadwaj	Antya	17.06.92	5'4"	B.Tech	MNC	Pune	S Pandey	Chandrapur	9822701972
6	Agrani	Bharadwaj	Antya	05.05.91	5'5"	B. Tech, MBA	MNC	Bengaluru	A Mishra	Bihar	9824119055
7	Akanksha	Kashyap	Madhya	29.10.83	5'4"	M. A	Service	New Delhi	A Tripathi	Sitapur	9919114107
8	Akanksha	Bharadwaj	Antya	06.09.89	5'	M.COM ,B Ed			Rajesh Shukla	Yamuna N.	9729537603
9	Akanksha	Upmanyu		02.11.93	5'4"	Designing	Pursuing	Mumbai	A.P.Agnihotri	Jaipur	9829068476
10	Akanksha	Bhargava	Antya	26.10.92	5'5"	B.E.	IBM	Pune	Manish Vyas	Nrsinhgarh	9039387942
11	Akanksha	Upmanyu	Aadi	08.08.92	5'4"	M Pharma	Manager,	Jaipur	S Agnihotri	Rajasthan	8239811234
12	Akanksha	Katyan		30.06.90	5'2"	PHD Math			R P Mishra	Kanpur	9935600160
13	Akankshi	Bharadwaj	Aadi	09.11.88	5'1"	MA, B.ED			S.C Shukla	Unnao	9415919896
14	Alpika	Bharadwaj	Antya	35 YRS.	5'3"	M SC, M Ed	Teacher	Lucknow	P S Shukla	Lucknow	9451247895
15	Amrita	Upmanyu	Aadi	15.06.86	5'3"	M.SC.B.ED.	Teacher	Hardoi	S.D.Awasthi	Hardoi	9415175655
16	Amrita	Kashyap	Aadi	26.06.86	5'4"	MBA	INT. Designer	Delhi	H.K.Tripathi	Kanpur	9415740855
17	Anamika	Bharadwaj		16.01.89	5'2"	BCA	Pursuing LLB		H.N. Pandey	Delhi	9312000133
18	Anamika	Upmanyu	Madhya	12.09.90	5'4"	MBA	ICICI Bank		V N Bajpai		8931029856
19	Anima	Shandilya	Aadi	01.12.89	5'5"	MCA			Rohit Mishra	Noida	9650060422
20	Anjali	Upmanyu	Aadi	01.02.78	5'3"	MA, B ED	Teacher	Kanpur	Geeta Bajpai	Kanpur	9450337411
21	Anjusha	Kashyap		26.11.76	5'6"	MA , B Ed	Teacher	Lucknow	G N Awasthi	Lucknow	9415794589
22	Ankita	Katyan	Madhya	18.08.88	5'4"	B.A.(GOLD)	Army Captain	Rajori	K.K.Mishra	Lucknow	9454523684
23	Ankita	Bharadwaj	Madhya	17.05.85	5'2"	M A , NTT			P S Shukla	Lucknow	9451247895
24	Ankita	Upmanyu	Madhya	28.05.90	5'2"	B.Tech	Working	Lucknow	Rakesh Bajpai	Lucknow	9451533833
25	Ankita	Gautam	Antya	20.04.88	5'8"	M Tech	G I S developer	Hyderabad	S Mishra	Allahabad	9335932948
26	Ankita	Upmanyu	Madhya	15.01.90	5'4"	MSC	Officer		Ms. Awasthi	Kanpur	8317095144
27	Anshita	Kashyap		23.05.93	5'2"	BE	Teacher		P Joshi		9893570774
28	Anubhuti	Upmanyu		28.03.90	5'6"	B.TECH, LLB			Mr Agnihotri	Lucknow	9454382089
29	Anushka	Shandilya		02.10.88	5'5"	MBA BBA	Business	Delhi	S M Tripathi	Delhi	9810295454
30	Aparajita	Bharadwaj	Aadi	24.12.88	5'2"	B Tech	S/w Engg	Pune	R K Pandey	Bhopal	9691999321
31	Apoorva	Bharadwaj	Aadi	13.12.91	5'5"	B.Tech			C.K.Shukla	Durg	9827113544
32	Aradhika	Shandilya		05.01.85	5'3"	BA	SBI(P.O)	Shahjahanpur	P.D Dixit	Lucknow	9807477078
33	Arpita	Bharadwaj	Aadi	23.09.91	5'4"	BCA,M Tech	Wipro	Bengaluru	R K Shukla	Kanpur	9450455278
34	Arti	Sabaran	Madhya	11.12.87	5'5"	M Ed PhD	Proff.	Indore	J Pandey	Indore	9303536152
35	Asha	Katyan	Aadi	26.12.89	5'4"	M Sc B Ed	Lecturer		R Mishra	Nanded	8237448841
36	Astha	Shandilya		13.11.89	5'1"	B.Tech	PSU Bank		B.R. Mishra	Lakhimpur	8090688028
37	Barkha	Kashyap	Antya	17.09.84	5'5"	BA	Working	Delhi	Mohit Tiwari	Delhi	9211232373
38	Bhavana	Katyan	Aadi	13.04.88	5'4"	MBA	Service	Pune	P Mishra	Pune	9765602161
39	Bhavna	Katyan		13.04.88	5'4"	BBA,MBA	Working	Pune	P Mishra	Pune	9823281661
40	Bhumica	Katyan	Madhya	15.01.91	5'3"	B Tech	Sofft. Engg.		S K Mishra	Kanpur	9648816293
41	Chaaru	Upmanyu	Antya	14.11.89	5'5"	BTECH	Working	Noida	A.N.Dixit	Ghaziabad	9968941554
42	Charitra	Katyan	Aadi	02.08.89	5'2"	MA B.Ed.	Teaching	Hardoi	S Mishra	Hardoi	8081357385
43	Charu	Bharadwaj	Aadi	12.08.86	5'4"	MCA MSC			U Sharma		9837031965
44	Deepika	Upmanyu		24.10.86	5'3"	M.SC.PHD	Post Doctorate	USA	S.C.Awasthi	Kanpur	9451425376
45	Devahuti	Shandilya		09.05.82	5'3"	B.A.(Journalism)			D.D.Mishra	Kanpur	9621488942

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
46	Dimple	kashyap		03.11.85	5'5"	M Com B Ed	Lecturer		R Tiwari	Mumbai	9987317233
47	Disha	Bharadwaj	Madhya	07.11.91	5'3"	B.COM, Inter CA	Tax Exc	Lucknow	R Shukla	Lucknow	8174097778
48	Diksha	Kashyap		07.10.90	5'7"	M Tech	Consultant	New Delhi	C K Tiwari	Lucknow	9839016961
49	Divya	Kashyap	Antya	23.02.86	5'2"	B.TECH.	Working	Canada	R.P.Tiwari	Kanpur	9451287700
50	Divya	Bharadwaj	Aadi	12.02.95	5'2"	B.Sc	LMRC	Lucknow	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
51	Divya	Shandilya		12.01.94	5'3"	BTC , B Ed		Etawah	G Dixit	Etawah	9627549800
52	Dr Jyoti	Bharadwaj	Aadi	21.11.85	5'1"	MSc PhD	Research Officer	Patna	P Mishra	Patna	9934296441
53	Garima	Shandilya		10.09.89	5'3"	M.COM, MBA			R.S Mishra	Kanpur	9918475086
54	Garima	Bharadwaj		01.10.83	5'4"	MBA	Working	Lucknow	K.K.Pandey	Kanpur	9336998383
55	Garima	Katyan		15.01.85	5'2"	B E	SAP	Pune	C S Mishra	Khandwa M.P.	9425928788
56	Garima	Kashyap		08.11.79	5'3"	MA, Bed			S.K. Tripathi	Bareilly	9897049336
57	Garima	Upmanyu	Antya	12.12.88	5'5"	MBA	MNC	Gurugram	A.K Dixit	Lucknow	9451975400
58	Geetanjali	Katyan		15.07.75	5'2"	MA			S.K Mishra	Lucknow	9415003476
59	Hemalata	Katyan	Aadi	23.07.79	5'	M.sc Mba.	Working	Bengaluru	R Mishra	Unnav	9848759749
60	Hemapriya	Shandilya	Madhya	05.05.89	5'3"	BA,LLM	Central govt.		G.K.Mishra	Lucknow	9412554697
61	Harshita	Bharadwaj		16.09.94	5'5"	MSC PRI.	Bank	Bihar	S Shukla	Kanpur	9005095193
62	Indu	Katyan	Madhya	20.04.88	5'3"	PG	Asstt Manager	Lucknow	L.M.Mishra	Lucknow	9335915813
63	Ira	Kashyap	Madhya	25.09.89	5'5"	BTECH, MS	Engineer	California	Dr. M Tiwari	Kanpur	8130144400
64	Itisha	Kashyap	Antya	17.01.83	5'2"	Diploma	Jwel Design		R.N.Tripathi	Lucknow	9453437464
65	Jaahnavee	Katyan		18.03.93	5'	B.SC.			Ai Mishra	Kanpur	9451013644
66	Jaya	Katyan	Antya	24.07.89	5'3"	M Tech	MNC	Bengaluru	A Mishra	Kanpur	9450635424
67	Kanak	Upmanyu	Divorcee	08.06.87		MA	Teaching	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
68	Kanchan	Bharadwaj	Antya	29.07.82	5'5"	BA			C.P Shukla	Lucknow	9793027166
69	Kanchan	Upmanyu		28.05.92	5'1"	MA	Teacher	Bahraich	A Awasthi	Bahraich	9140487985
70	Kanchan	Kilawat		14.11.92	5'2"	BCA			V Vaishnav	Bhopal	9425091637
71	Kanchan	Shandilya	Antya	02.05.90	5'4"	MCA			S Dixit	Pune	7300636411
72	Kavita	Upmanyu		24.06.87	5'6"	M.C.A MNIT	Soft. Engg.	Delhi	R.K.Awashti	Kanpur	9936213811
73	Keerti	Bharadwaj		18.11.89	5'6"	M.SC.PHD.	Fellowship	Australia	K.N.Pandey	New Delhi	9971530438
74	Komal	Bharadwaj		07.06.91	5'2"	Bcom MBA			P Shukla	Kanpur	9415132087
75	Kriti	Ghalaria	Aadi	15.11.92	5'	MCA	IT MNC	Noida	V Sharma	Mathura	9709550141
76	Kritika	Upmanyu	Aadi	03.05.91	5'2"	M Tech Phd IIT	Asst.	Dhanbad	J K Awasthi	Lucknow	9415547363
77	Kritika	Kashyap		27.07.92	5'6"	M.Tech			Arun Tiwari	Banda	9453283648
78	Krtika	Bharadwaj		28.01.88	5'4"	MA(ENGLISH)	Journalist	New Delhi	K.N.Pandey	New Delhi	9971530438
79	Krtika	Shandilya	Aadi	09.09.87	5'5"	B.SC.MBA	SBI	Kanpur	M Mishra	Kanpur	9695666443
80	Madhu	Upmanyu	Madhya	02.09.89	5'2"	BE	S/W Engg.	Bengaluru	R B Pathak	Ballia	9774009524
81	Madhulika	Kashyap		03.08.80	5'1"	MA, B Ed , TET			Mrs Dixit	Lucknow	9455508981
82	Malini	Upmanyu		01.04.77	5'2"	M.SC.,MED,PHD.	Teacher		C.P.Awasthi	Lucknow	9452133470
83	Mandvi	Katyan		13.12.95	5'1"	B Com, MBA	Pursuing	Kanpur	G S Mishra	Kanpur	9839206130
84	Mani	Bharadwaj		14.09.89	5'3"	MA, B.ED			R.K Pandey	Allahabad	9415612663
85	Mansi	Shandilya	Madhya	30.12.87	4'11"	MBA	HR Manager	Delhi	A.K. Dixit	Lucknow	9451712383
86	Meenu	Katyan	Antya	14.08.82	5'3"	M.SC.B.ED.			A.K.Mishra	Jhansi	9452919509
87	Megha	Upmanyu		01.07.94	5'3"	MA	Teaching	Kanpur	R Awasthi	Kanpur	9311718232
88	Monika	Bharadwaj	Antya	05.07.87	5'	Ph.D	Scientist(KGMC)	Lucknow	Anita Pandey	Lucknow	8004747360
89	Monika	Kashyap	Madhya	15.08.85	5'3"	B. Tech	Fash. Design	Delhi	G Tiwari	Udaipur	9414238854
90	Mridulika	Katyan		05.10.90	5'2"	B COM	Press	Lucknow	N Mishra	Lucknow	9838070923
91	Naina	Bharadwaj		29.04.90	5'3"	B.TECH, MBA	Yes Bank	Mumbai	R.S Pandey	Lucknow	9044326357
92	Namita	Bharadwaj		16.06.80	5'3"	M.A.(ENGLISH)	INT. Designer		S.P.Shukla	Lucknow	9415424508
93	Namrta	Upmanyu	Aadi	11.01.81	5'6"	M.A.,Music			P Dubey	Kanpur	9839443316
94	Natasha	Bharadwaj		28.07.84	5'4"	BE	MNC	Pune	D K Shukla	Kota	9414189670
95	Neha	Upmanyu		01.12.90	5'4"	B COM			V Pathak	Kanpur	9962003310

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
96	Nidhi	Upmanyu		15.11.83	5'4"	M.A.(MUSIC)	Teacher		V.D.Awasthi	Lucknow	9415172212
97	Nidhi	Shandilya	Antya	19.02.79	5'2"	MA NIT			A Mishra	Allahabad	8318600210
98	Nidhi	Katyan	Antya	02.09.86	5'3"	Bizz.Eng. USA	Manager,	Hyderabad	R Mishra	Hyderabad	9000933436
99	Niharika	Upmanyu	Aadi	26.07.95	5'4"	Bcom, MA		Harda	Meena Dubey		9893228150
100	Nikita	Kashyap		21.10.90	5'3"	BBE,MBA	IBM	Gurugram	S.S. Tiwari	Delhi	9899723609
101	Nikita	Shandilya	Antya	25.04.94	5'5"	B.Tech	Saft.Eng.	Bengaluru	P Mishra	Lucknow	6394743035
102	Nikita	Shandilya		28.11.91	5'2"	MBA(IILM)	Bank	Noida	R C Mishra	Lucknow	9208831728
103	Nilakshi	Katyan	Antya	16.05.90	5'1"	B.COM,	CS(Pursuing)		N.C.Mishra	Lucknow	9415543919
104	Palak	Kashyap	Madhya	01.06.82	5'	MBA		Nairobi	Mrs Tiwari	Ahmedabad	7733803200
105	Pallav	Sankrit	Aadi	21.01.87	5'	M Tech. PhD	Service	New Delhi	S Shukla	Delhi	9811484078
106	Pallavee	Kashyap		08.03.85	5'3"	BSC, B.ED	Govt. Teacher	Lucknow	Prashant Mishra	Lucknow	9415466226
107	Pallavee	Sankrit		21.01.87	5'	M.TECH.(IIT)PHD.			S Shukla	Delhi	9811483078
108	Pooja	Katyan		20.09.93	5'1"	MCA	Sofft. Engg.	Pune	Ram Mishra	Kanpur	9454771886
109	Poornima	Upmanyu	Antya	12.08.80	5'5"	B.SC.MCA	S.F ENGG.	Bengaluru	S Awashti	Kanpur	9450125877
110	Prachi	Shandilya	Aadi	20.05.88	5'3"	MCA			A Mishra	Delhi	9311601401
111	Prachi	Kashyap		01.06.85	5'5"	B.TECH.(IIT)	SBI(P.O)	Lucknow	Deepti Dixit	Lucknow	9838610666
112	Pragati	Upmanyu		07.01.87	5'4"	MBA	MNC	Noida	D.S.Bajpai	Lucknow	9454644228
113	Pragati	Shandilya		24.06.92	5'3"	M Tech			Dr. V.P. Dixit	Allahabad	9415283021
114	Pragya	Kashyap		30.07.90	5'6"	BSc, MA, Bed	Teacher	Urai	R.K. Dixit	Urai	9453554259
115	Pramita	Katyan		29.06.81	5'1"	M.A,PHD,MPHIL	Working	Delhi	P.N.Mishra	Delhi	9013201099
116	Pratiti	Upmanyu	Antya	10.12.91	5'4"	B Tech	Accenture	Noida	Sunit trivedi	Lucknow	9415546277
117	Preeti	Kashyap	Aadi	22.12.90	5'5"	MBA	Working	Mumbai	Avinash Tripathi	Mumbai	9320981363
118	Preeti	Shandilya	Madhya	15.08.94	5'3"	MSc Bed.			D N Dixit	Kanpur	8932007700
119	Preeti	Shandilya		21.03.93	5'7"	B Tech			O Dixit	Fatehpur	7011596828
120	Priya	Bharadwaj	Aadi	26.08.91	5'5"	B.Com, S.W			P N Trivedi	Unnao	9415987702
121	Priya	Bharadwaj	Madhya	02.02.89	5'7"		Vetnry Surgeon	Gwalior	Rajeev Shukla	Gwalior	9926292469
122	Priyam	Upmanyu		20.07.88	5'3"	MBA	MNC	Pune	A.K.Awasthi	Kanpur	8604956305
123	Priyanka	Bharadwaj	Madhya	17.11.94	5'5"	B.COM,BTC			D.D Shukla	Unnao	9451149985
124	Priyanka	Bharadwaj		16.08.88	5'2"	BDS	Pursuing MBS		A.K.Pandey	Jaipur	9829094797
125	Priyanka	Bharadwaj		27.09.87	5'4"	B.TECH.MBA	TCS	Mumbai	A. Shukla	Kanpur	9935590475
126	Priyanka	Upmanyu	Aadi	15.10.82	5'4"	B.COM.MBA	Working	Noida	J.N.Bajpai	Kanpur	8978480521
127	Priyanka			29.08.84	5'4"	B.SC,MBA			Shri.Pandey		9838959360
128	Priyanka	Kashyap		05.11.81	5'8"	BDS	Working	Kanpur	Rajesh Tiwari	Kanpur	9839163346
129	Priyanka	Upmanyu	Antya	22.03.88	5'4"	MCA	Working	Noida	M Agnihotri	Kanpur	8052408397
130	Priyanka	Vats	Antya	02.01.89	5'5"	BE, MBA	MNC	Mumbai	Ravi Tiwari	Raipur	9425207900
131	Priyanka	Bharadwaj	Madhya	20.11.85	5'8"	MA CSJMU	Teacher	Unnao	Manju Trivedi	Unnao	9807314054
132	Priyuttama	Katyan	Madhya	12.05.88	5'4"	MA.B.ED.PHD.			K Mishra	Lakhimpur	9452040268
133	Pushpanjal	Bharadwaj	Aadi	12.05.92	5'2"	B.Tech, BTC	BTC Training	Jhansi	Rajesh Tiwari	Jhansi	9451131195
134	Pushpika	Katyan	Aadi	20.09.90	5'1"	MCA	Wipro	Pune	R P Mishra	Kanpur	7703091096
135	Raashi	Shandilya	Madhya	10.09.79	5'3"	M.SC.(Mass Com)	Asstt Prof.	Lucknow	Asha Mishra	Lucknow	9412554697
136	Rachana			15.01.81	5'	MBA	JP CEMENT	Noida	R.S.Mishra	Kanpur	9935349163
137	Ragini	Bharadwaj	Antya	10.02.88	5'4"	BHMS	P.G.	Pune	Girish Shukla	Kanpur	9839105203
138	Ragini	Bharadwaj	Antya	02.10.88	5'4"	BHMS	Private	Pune	G Shukla	Kanpur	8960362415
139	Rajni	Upmanyu	Antya	14.07.92	5'	M Tech			Mrs D Pathak	Farrukhabad	9999667148
140	Rajni	Upmanyu		15.07.92	5'	M Tech	Pursuing	Delhi	A Pathak	Delhi	9811131680
141	Rashmi	Vats	Madhya	12.08.87	5'1"	CS, LLB	Practice	Noida	Rajesh Tiwari	Delhi	9910507601
142	Rashmi	Upmanyu	Antya	12.06.90	5'4"	B.COM, MBA	MNC	Lucknow	R.K.Awashti	Lucknow	9457203523
143	Rashmi	Upmanyu	Madhya	25.09.76	5'2"	BSC, PGDCA			T R Pathak	Jabalpur	9754346532
144	Rashmi	Sankrit		30.07.86	5'4"	B Sc MBA	MNC	Noida	Mrs Mishra	Kanpur	7752946783
145	Rashmi	Bharadwaj	Madhya	14.08.86	5'2"	BA	Teaching	Saharanpur	M Shukla	Saharanpur	9456272806

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
146	Ratna	Bharadwaj	Madhya	15.01.86	5'6"	MBA	HDFC Bank	Bengaluru	R.K Dixit	Durg	7987456198
147	Ratna	Kashyap	Aadi	06.08.87	5'5"	BSC (BIO)			R K Mishra	Lucknow	9450672302
148	Reema	Upmanyu		30.11.94	5'3"	B.Com	Pursuing MBA		Mrs Awasthi	Hyderabad	7093757018
149	Reena	Upmanyu		01.07.83	5'6"	MA NTT	Teaching	Jhansi	R Bajpai		7275586913
150	Renu	Bharadwaj	Aadi	10.08.81	5'6"	B.A.NTT	Teacher	Jhansi	Aruna Shukla	Jhansi	9450978618
151	Renu	Sankrit	Aadi	05.02.87	5'3"	MA	Working	Delhi	M K Mishra	Delhi	9971356179
152	Richa	Shandilya	Madhya	30.09.91	5'3"	B.COM,MBA			K.S Mishra	Lucknow	9415469103
153	Richa	Katyan		15.03.84	5'4"	M.TECH.MBA	Asst Prof.	Kanpur	Sunil Mishra	Kanpur	9453045754
154	Richa	Bharadwaj	Madhya	20.12.84	5'2"	B Sc, B Ed, TET			Mrs Shukla	Hardoi	9026399895
155	Richa	Upmanyu	Madhya	06.04.85	5'7"	B.Com, M.Com, MBA			R.L Dwivedi	Lucknow	9919127170
156	Richa	Kashyap	Madhya	03.07.85	5'3"	M.Sc (BHU)	HSBC	Sydney	S K Tripathi	Unnao	8299676613
157	Ritika	Bharadwaj		14.01.91	5'5"	B Tech	Working	Delhi	V K Chaturvedi	Kanpur	7905040001
158	Ritu	Sankrit		02.02.92	5'3"	MA			J Shukla		8120039083
159	Ritambhara	Bharadwaj	Aadi	28.03.90	5'3"	MBBS	MD	Kanpur	D.S.Shhukla	Kanpur	9358352758
160	Ruby	Shandilya	Antya	20.03.84	5'5"	B.TECH.	Working	Noida	R.C.Dixit	Kanpur	9369019377
161	Ruchi	kashyap		01.10.96	5'3"	BA MA	Pursuing MA		M Tiwari	New Delhi	9711473367
162	Ruchi	Sankrit	Aadi	27.09.86	5'5"	B Com M A	Private	Kanpur	H Shukla	Kanpur	9839955748
163	Sachi	Bharadwaj	Antya	12.02.91	5'4"	B.Com, CA	CA Final Yr.	Lucknow	Naveen Shukla	Bareilly	9415966739
164	Sakshi	Shandilya	Madhya	27.03.89	5'2"	MCA	Govt Job	Lucknow	S.N.Dixit	Lucknow	8765677207
165	Samvedana	Upmanyu	Aadi	17.03.87	5'8"	B.Tech, MBA	Working	Chicago	R.N Agnihotri	Jaipur	7355619597
166	Sarika		Antya	03.08.82	5'4"	MBBS DGO DNB	Doctor		V.B.Pandey	Manpuri	9411936187
167	Saroj	Upmanyu	Madhya	20.10.89	5'9"	MA	Teacher	Ghatkopar	Indira Trivedi	Raebareilly	9167644809
168	Sashi	Katyan	Madhya	30.12.84	5'3"	B.Sc PGDCA,	Hospital	Nasik	A Mishra	Sitapur	7972186431
169	Saumya	Bharadwaj	Aadi	22.05.87	5'3"	MBA	PSU Bank(PO)	Lucknow	M Shukla	Lucknow	9161099365
170	Saumya	Katyan	Aadi	07.01.91	5'4"	BSC			K.K Mishra	Lucknow	7905134117
171	Saumya	Upmanyu		20.04.95	5'	B COM	Working	Noida	R Bajpai	New Delhi	9312832371
172	Savita	Upmanyu	Antya	22.08.86	5'	BSC, ADCA	Teacher	Telibagh	Pankaj Dwivedi	Lucknow	9455871884
173	Seema	Upmanyu	Antya	21.10.83	5'3"	B. ED	Teacher	Lucknow	Ashok awasthi	Lucknow	8318401171
174	Shailesh	Katyan	Madhya	27.09.80	5'1"	M.SC.PHD.	Asstt Prof.		S.S.Mishra	Kanpur	9450120999
175	Shailja	Upmanyu		29.03.86	5'2"	MA, Bed			R.P. Dubey	Kanpur	9415134056
176	Shalini	Shandilya		01.09.82	5'4"	Ph D.(HISTORY)	Working	Lucknow	Mishra	Lucknow	9415562096
177	Shakshi	Bharadwaj		14.12.96	5'4"	B E	Working		S Dwivedi	Indore	9826646571
178	Sheenu	Bharadwaj	Madhya	09.07.84	5'2"	MBA			V K Shukla	Kanpur	7275904560
179	Shikha	Bharadwaj	Madhya	05.02.92	5'8"	Bcom MBA	Working	Pune	R Tiwari	Amravati	9766219316
180	Shikha	Garg		27.09.87	5'4"	MA	UP Govt.	Lucknow	R Sharma	Lucknow	9651210977
181	Shilpi			29.09.93	5'5"	B COM	Working		A Dubey	Delhi	9350102245
182	Shipra	Upmanyu		27.07.88	5'5"	BPT	Fortis Hospital	New Delhi	H Awasthi	Kanpur	8896151617
183	Shivangi	Katyan	Antya	26.01.90	5'2"	B.A. , M.A			B Mishra	Farukhbad	9452261234
184	Shivani	Bharadwaj	Madhya	26.09.91	5'4"	MBA	Sr HR Executive	Gurugram	R N Pandey	Lucknow	9452841545
185	Shraddha	Upmanyu	Aadi	13.05.86	5'5"	B Tech	MNC	Coimbatore	S Trivedi	Telangana	8121717563
186	Shreyasi	Shandilya	Madhya	26.10.94	5'6"	B.Tech	Working	Mumbai	R.K. Dixit	Kanpur	7376692193
187	Shrushti			08.10.85		BA MBA	Asst. Professor	Kanpur	V Bajpai	Kanpur	8187923891
188	Shruti	Upmanyu	Aadi	10.06.88	5'7"	B.SC.MBA	Working	Hyderabad	S.K.Trivedi	Hyderabad	8121717563
189	Shruti	Katyan		09.12.78	5'3"	B.COM,CA.	Working	Mumbai	A.K.Mishra	Lucknow	9336506078
190	Shruti	Upmanyu	Aadi	30.06.90	5'4"	B Tech, M Tech	Asst. Professor	Delhi	Dr. M Awasthi	Etawah	9810323466
191	Shruti		Aadi	03.10.86	5'3"				Dwivedi	Kanpur	9236819199
192	Shubhee	Kashyap		23.06.86	5'3"	DIP. ELEC.COM.	Working	Delhi	D.K.Dubey	Delhi	9582628003
193	Shubha	Katyan		27.10.91	5'11"	B Tech	MNC	Pune	R K Mishra	Lucknow	9450672302
194	Shveksha	Sankrit		25.01.86	5'4"	BTC	Teacher	Etawah	D.K.Dixit	Etawah	9410487189
195	Shweta	Upmanyu	Antya	30.11.86	5'3"	B.SC.	Web Designer		B.N.Bajpai	Kanpur	9450325085

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुब्ज मंच' कानपुर

S No	Name	Gotra	Naadi	DOB	HEIGHT	EDUCATION	PROF.	SERV_LOCN.	PARENT_NAME	HOMETOWN	MOBILE NO.
196	Shweta	Upmanyu	Antya	25.08.84	5'	B H M S	Doctor	Kanpur	A K Awasthi	Kanpur	9532098695
197	Shweta	Bharadwaj		03.04.89	5'3"	MBA	Working	Etah	S Pandey	Mainpuri	7520323248
198	Shweta	Kashyap		12.05.87	5'5"	MS(USA)	Working	USA	S Tiwari	Hyderabad	9293765791
199	Shweta	Vashisht		06.04.88	5'3"	B.COM, MBA	Teacher	Kanpur	O.K. Sharma	Kanpur	9889736208
200	Shweta	Bharadwaj	Madhya	09.05.86	5'1"	B Sc, B Ed			Geeta Dixit	Gwalior	9406581038
201	Smriti	Upmanyu	Antya	30.06.91	5'4"	MBBS	Working	Lucknow	B.D Bajpai	Lucknow	9532276081
202	Sonam	Bharadwaj		30.08.88	5'6"	M CA	Working	Bengaluru	L Shukla	Kanpur	9621781155
203	Sonal	Gautam		10.12.81	5'5"	M.A.MBA.			B.D.Malwiy	Kanpur	9451845631
204	Sonal	Upmanyu		04.05.90	5'3"	B Tech	Accenture	Bengaluru	R K Bajpai	Kanpur	9415477656
205	Sonal	Upmanyu	Madhya	04.04.90	5'2"	B Tech			Usha Dubey	Lucknow	9936573750
206	Sonali	Bharadwaj	Aadi	04.02.86	5'5"	B.TECH.	Working	Hyderabad	A.N.Pandey	Kanpur	9415483587
207	Soumya	Katyan	Madhya	24.06.90	5'4"	BCA MS	MNC	Hyderabad	G D Mishra	Kanpur	9452496423
208	Soumya	Katyan		24.07.90	5'2"	M A			R K Mishra	Lucknow	7905134117
209	Soumya	Shandilya		26.03.88	5'2"	B sc Mca	Working	Bengaluru	S K Mishra	Bhopal	9415166113
210	Sreshtha	Shandilya		27.01.89	5'6"	M Com Bed	Working	Bengaluru	S K Tiwari	Kolkata	9088937393
211	Srishti	Upmanyu	Madhya	11.04.92	5'6"	B. Arch	Manager	Mumbai	Vijay Bajpai	Nagpur	9422140541
212	Stuti	Kashyap	Antya	19.11.89	5'	B.Tech	Bank of India	Lucknow	Amal Dixit	Lucknow	7052969469
213	Stuti	Garg	Madhya	15.06.91	5'4"	MBA	Oyo	Gurugram	A K Chaturvedi	Kanpur	9415478711
214	Stuti	Bharadwaj		11.09.90	5'	M Sc			P Dixit	Kanpur	9389195060
215	Suchi	Bharadwaj	Aadi	24.02.82	5'3"	M Sc, B ED	Govt Teacher	Unnao	R N Trivedi	Unnao	9452347648
216	Suchita	Bharadwaj		02.05.91	5'5"	B Tech MBA	MNC	Bengaluru	S C Shukla	Kanpur	9868590585
217	Suman	Kashyap	Aadi	03.05.91	5'6"	M.COM, BED			Akhilesh Tiwari	Kolkata	6294217393
218	Sunaina	Upmanyu	Aadi	22.11.93	5'1"	M. Sc	Pursuing BEd		A.K Agnihotri	Shahjahanpur	9458323288
219	Surbhi	Kaushik	Madhya	31.07.89	5'2"	B. Pharma	Pharma	Amravati	S Kauskiya	Amravati	8411837994
220	Surbhi	Kashyap	Aadi	29.08.90	5'4"	BDS, MPH	Associate	Puducherry	Sudha Dixit	Ujjain	9826816266
221	Swapna	Shandilya	Madhya	02.12.89	5'2"	MBA			P.D.Dixit	Indore	9425152103
222	Swarnim	Upmanyu	Madhya	27.07.92	5'6"	B.B.A, MBA	Working		P Bajpai	Kanpur	9889613890
223	Swati	Bharadwaj		20.06.89	5'6"	MA.M.PHIL	Studying		A.C.Shukla	Kanpur	9415428625
224	Swati	Shandilya	Antya	1.1.86	5'4"	B.SC.MBA	MNC	Bengaluru	B.L.Mishra	Bhopal	9826277688
225	Urvashi	Upmanyu	Antya	05.10.91	5'4"	M.Com	Govt Serv		D k Dubey	Gwalior	9826258558
226	Vaishnavi	Upmanyu	Aadi	25.11.91	5'6"	B Tech MBA	Working	Bengaluru	V K Trivedi	Kanpur	9935393499
227	Vandana		Aadi	03.11.83	5'3"	MA, Bed	Principal	Ghaziabad	D Mishra	Delhi	9268332289
228	Vartika	Upmanyu	Antya	13.12.90	5'2"	BCA, MBA	Working	Lucknow	S Dubey	Lucknow	9335907020
229	Vasundhar	Bharadwaj		10.10.91	5'7"	MBA	HR Manager	Delhi	B P Shukla	Delhi	7869114109
230	Vasvi			13.10.93	5'1"	BSC	Working	Raipur	V K Mishra	Jabalpur	8269671144
231	Vidya	Katyan	Antya	04.01.85	5'2"	M.A.B.ED.TET			K.K.Mishra	Kanpur	9792180122
232	Yamini	Bharadwaj		01.11.95	5'	MBA	HR Mgr	Kanpur	S K Pandey	Kanpur	9451283887

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ व्हाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

भाई बहन का स्नेह

हमारी कौटुम्बिक व्यवस्था में 'पुत्री' का जो स्थान है वह अत्यन्त पवित्र तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। भाई और बहिन का प्रेम इस देश की अपनी विशेषता है और उसकी गौरव पूर्ण गाथायें संसार की अमर कहानियां बन चुकी है।

एक कन्या सबसे पहले पुत्री के रूप में, फिर बहिन और अन्त में बुआ के रूप में तीन पीढ़ियों द्वारा समादृता और पुजिता रही है। उसकी चरण वन्दा करके बड़े बूढ़े भी अपने को सौभाग्यशाली समझते रहे हैं। उसके 'श्वसुर' घर के प्राणियों को 'मान्यवर' शब्द से सम्मानित किया जाता रहा है और उसके यहां से कुछ लेना महान पाप कर्म माना गया है और उसे देते रहना ही एक महान और मुख्य कर्तव्य। श्रावण सलौने, भातृ विवाह आदि मंगल कार्यों में इस मान्य को देना हमारी व्यवस्था का आवश्यक अंग रहा है और जितना अधिक से अधिक दिया जाय उतना ही कम है। ऐसी दशा में यह सवतः सिद्ध है कि कन्या अपने पैतृक गृह से भारतीय कौटुम्बिक व्यवस्था के अनुसार कहीं अधिक प्राप्त कर लेती है, वजाय कानून के द्वारा पिता की सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त करने के उस दशा में प्रेम के अनन्त स्रोत दोनों परिवारों में प्रवाहित रहता है और कौटुम्बिक एकता छिन्न-भिन्न नहीं होने पाती।❑

भूजल संरक्षण संकल्प पर्व

ब्राह्मण समाज ऑफ इण्डिया ने मकर-संक्रांति को भूजल संरक्षण संकल्प पर्व के रूप में मनाने की घोषणा की। कामराज रोड, नई दिल्ली में आयोजित ब्राह्मण समागम में पूर्व वित्त राज्य मंत्री शिवप्रताप शुक्ल ने उपस्थित जन समूह को जल-संरक्षण की शपथ दिलाते हुए कहा कि ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि तीसरा विश्व युद्ध का कारण पानी की किल्लत के कारण होगा। भविष्य की समस्याओं के निराकरण के लिए ब्राह्मण वर्ग को प्रयास करने होंगे। इस अवसर पर बाँदा जनपद के गांव जखनी को जलग्राम बनाने में मुख्य भूमिका निभाने के लिए श्री उमाशंकर पाण्डेय के प्रयासों को सराहा गया। पूर्व केंद्रीय मंत्री शिवप्रताप शुक्ल, विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी, समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी डॉ विश्वपति त्रिवेदी, नीतिआयोग के सलाहकार अविनाश मिश्र आदि ने जलयोद्धा के रूप में उमाशंकर पाण्डेय को सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर ब्राह्मण समाज की स्मारिका ब्राह्मण-दर्पण तथा कानपुर से प्रकाशित सामाजिक, सांस्कृतिक व पारिवारिक पत्रिका कान्यकुब्ज मंच का लोकार्पण भी किया गया।

विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने अपने उद्बोधन में बताया कि ब्राह्मण ने समाज को हमेशा दिया है, लिया नहीं है। इतिहास गवाह है, भारतीय समाज समतामूलक रहा है। विदेशी पर्यटकों मेगस्थनीज, ह्वेनसांग, अलबरूनी सभी ने भारतीय समाज के सौहार्द्र की चर्चा की है। ब्राह्मण समाज को दिशानिर्देश करने वाली शक्ति रही है। आज समाज को तोड़ने, इतिहास को अपने ढंग से स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं। ऐसे में हमारी भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए। कार्यक्रम के आरम्भ में अध्यक्ष डॉ विश्वपति त्रिवेदी ने अपने स्वागत भाषण में भूजल संरक्षण के दिशा में अपने अपने क्षेत्रों में अपेक्षित प्रयास करने का आव्हान किया। समारोह में पूर्व सांसद लालबिहारी तिवारी, पूर्व आईएएस प्रजापति त्रिवेदी, आर डी दीक्षित, शोभा उपाध्याय, कान्यकुब्ज मंच के सम्पादक आशुतोष पाण्डेय, उमाशंकर पाण्डेय, रामगोपाल शर्मा, बृजेश तिवारी, सरिता द्विवेदी, वैद्य अशोक मिश्र व राकेश मिश्र आदि की गौरवपूर्ण उपस्थिति रही।

समाजसेवी पं. रामचन्द्र दुबे

घाटमपुर (कानपुर देहात) के स्व.पं रामनारायण दुबे के सुपौत्र पं. राम चंद्र दुबे (आत्मज- पं रामलाल दुबे) इंदौर जिला न्यायालय से सेवानिवृत्त होने के बाद मनसा-वाचा-कर्मणा जिला, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर ब्राह्मण संगठन को सुदृढ़ करने में संघर्षरत हैं। कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इंदौर के सहमंत्री रहते हुए नियमित विजय नगर कार्यालय में निःशुल्क, निःस्वार्थ समय देते हैं। समाज के हर छोटे-बड़े कार्य के लिए इनमें 70 वर्ष की उम्र में भी तत्पर रहते हैं। सहज व्यक्तित्व, एक आम आदमी जैसा, जो आसानी से किसी से जुट जाय, सट जाय। निष्कलुष जीवन शैली, समाज को सक्रिय, संगठित, संवेदनशील, पारस्परिक सहयोग का वातावरण बनाने का सपना देखते रहते हैं। दुबे जी की सक्रियता, जाति प्रेम देखते हुए दिल्ली की संस्था 'ब्राह्मण संसार' ने उन्हें मप्र का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया है। अपनी माता श्रीमती कमला देवी की स्मृति में मप्र के मेधावी छात्रों का सम्मान करने, निकटतम जिलों में सामूहिक विवाह व यज्ञोपवीत के लिए प्रेरित करने तथा विवाह योग्य युवाओं के अभिभावकों को अपेक्षित जानकारी उपलब्ध कराने में योगदान करनेवाले दुबे जी अहमदाबाद व कानपुर में अभा कान्यकुब्ज महासभा द्वारा समादृत किये जा चुके हैं।❑

उत्साही युवा ब्रजेश शुक्ल

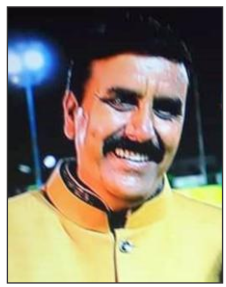

जिला रायबरेली, चिलौला गांव के प. रामकिशोर शुक्ल मालवांचल की होलकर सेना में सिपाही रहते हुए पुलिस सेवा में आ गए थे। उनके आत्मज ब्रजेश कुमार शुक्ल कान्यकुब्ज विद्याप्रचारिणी सभा, इंदौर के सहमंत्री रहते हुए समाजसेवा में स्वयं को खपाये हुए हैं। राजनीति में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में भाजपा मंडल अध्यक्ष का दायित्व सम्भाल चुके हैं। वर्तमान स्थानीय विधायक रमेश मन्डोला के राजनैतिक सलाहकार हैं। उनकी लोकप्रियता व जनस्वीकार्यता के पीछे वाणी और आचरण की सत्यता, शुद्धता, एवं मधुरता हैं। सहधर्मिणी सुलेखा शुक्ला राजकीय शिक्षिका रहते हुए कान्यकुब्ज महिला मण्डल के अध्यक्ष का गौरवपूर्ण दायित्व सम्भाल रही हैं। ऐसे युवा ही किसी संगठन की रीढ़ होते हैं।❑

कान्यकुब्ज ब्राह्मण समिति, तेलंगाना

15 मार्च, 2020। कान्यकुब्ज ब्राह्मण समिति, भाग्यनगर, हैदराबाद (तेलंगाना) का युवक-युवती परिचय सम्मेलन तथा होली मिलन महोत्सव श्री तुलजा भवानी मंदिर, उसमानगंज में सम्पन्न। समिति के अध्यक्ष विनय तिवारी ने अपने स्वागत भाषण में जातीय-संगठन की महत्ता बताते हुए कहा कि 'साथ है यदि सबका तो हर मौसम बसन्त है, वरना रिश्ते, परिवार और समाज का बस+अंत है'। आपसी तालमेल की कमी और समाज के प्रति बढ़ती नीरसता को पहचान पर एक संकट बताते हुए विनय जी ने युवाओं द्वारा किये जा रहे अंतरजातीय विवाहों को कोरोना से बड़ा संक्रमण कहा। उनका कहना है कि समाज के शुभचिंतकों को समय रहते इस पर विचार करने की आवश्यकता है। वरना ब्राह्मणों की गौरवशाली जातीय अस्मिता के विलुप्त हो जाने का भय है। समारोह में उपस्थित महानुभावों ने अन्तरब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्धों को आज की जरूरत बताया।

संगीतमय होलीगीतों के साथ लगभग 150 परिवारों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में युवाओं का उत्साह देखते बनता था। महिला-वर्ग ने वैवाहिक परिचय कार्यक्रम का जिम्मा ले रखा था। श्री विनय तिवारी के नेतृत्व में धीरज शुक्ल, रूपेश दुबे, रूपेश तिवारी, आलोक शुक्ल, संतोष तिवारी, अमित मिश्र, आशा मिश्रा, आलोक तिवारी, मोनिका अवस्थी, सपना दुबे, प्रभाष शुक्ल, राहुलकिशोर अवस्थी आदि की सशक्त टीम ब्राह्मण समाज के पुनरुत्थान में प्राणपण से जुटी है।❑

काशी की डॉ नीरजा माधव को हिन्दी साहित्यकारों की रैंकिंग में 10वां स्थान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ डॉ. नीरजा माधव व बिटिया कु. कुहू मिश्रा

काशी (वाराणसी) की डॉ नीरजा माधव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वे के बाद प्रतिवर्ष घोषित की जाने वाली रैंकिंग में इस वर्ष के 25 शीर्ष हिन्दी साहित्यकारों की सूची में दसवें स्थान पर आई हैं। मुख्यधारा में सक्रिय लेखन के आधार पर तय होने वाली राही रैंकिंग में डॉ नीरजा को यह सम्मान मिला है। राही रैंकिंग की शुरुआत वर्ष 2015 में हुई थी। पिछले वर्ष डॉ नीरजा माधव 26वें पायदान पर थीं, जबकि वर्ष 2015 में 60वें, 2016 में 49वें, 2017 में 26वें तथा 2018 में 22वें स्थान पर थीं।

रचनात्मक साहित्य सृजन में एक दर्जन से अधिक उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 6 कविता संग्रह, 15 से अधिक ललित निबंध, अनुदित साहित्य तथा राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं की नियमित रचनाकार नीरजा माधव ऑल इंडिया रेडियो में सह निदेशक हैं। लोक संस्कृति, लोक साहित्य, पर्यावरण तथा समसामयिक विषय संबंधित आयोजनों में आप की उपस्थिति मंच को गौरव प्रदान करती है। कोरोनाकाल पर लिखा आपका पहला उपन्यास 'कोरोना' खासी लोक प्रतिष्ठा अर्जित कर कर्नाटक प्रदेश के स्नातक पाठ्यक्रम का अंग बना। अनगिनत साहित्य सम्मानों से समादृत नीरजा माधव की लेखनी का प्रसाद 'कान्यकुब्ज मंच' के पाठकों को भी सुलभ है।

पति डॉ बेनी माधव मिश्र महाबोधि कॉलेज, सारनाथ, वाराणसी में प्रधानाचार्य हैं। बिटिया कु. कुहू ओएनजीसी में भूगर्भ वैज्ञानिक है। बीएचयू से भूगर्भ विज्ञान में परास्नातक कु. कुहू को तीन वर्षीय डिग्री कोर्स में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने पर द माइनिंग जियोलॉजिकल एंड मेटिलर्जिकल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, कोलकाता को 'ला-टच' अवार्ड से सम्मानित किया गया है। जबकि साहित्य, शिक्षा, समाजसेवा तथा प्रशासन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के द्वारा अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र की समाज में अनुकरणीय छाप छोड़ने वाली डॉ बेनीमाधव मिश्र सितम्बर में आध्यात्मिक व सामाजिक संस्था 'अक्' द्वारा 'कैरेक्टर ट्री अवार्ड' से समादृत हुए।❑

स्मृतिशेष

साहित्यकार रमेश तिवारी 'विराम'

जीवन एक विराट समर है
प्रतिक्षण यहां जूझना होगा
जीवन वह अनुभव पहेली
प्रतिदिन जिसे बूझना होगा

जनपद कन्नौज के शिक्षक साहित्यकार व समाजसेवी पंडित रमेश तिवारी विराम जी लिखित 'धरती के ईश्वर' की उक्त पंक्तियां आज भी मेरे अंतर्मन को सह लाती है और स्मरण कराती रहती हैं अपने पितासम पूज्य ससुर जी की जिनकी अब स्मृतियां ही शेष है 25 फरवरी 2020 को उनका घटा काश महाकाल में विलीन हो चुका है।

उनकी बड़ी पुत्रवधू (पत्नी श्री अंशुमान तिवारी प्रधान संपादक इंडिया टुडे दिल्ली) होने के नाते अपने ससुर जी की परिचर्या स्वास्थ्य देखभाल दैनिक कार्यों में सहायता व घर परिवार की रीति नीति परंपरा मर्यादाओं को सहज ही आत्मसात करने का सुयोग मिला. अपनी सासू मां श्रीमती उमा तिवारी, जो गोमती देवी इंटर कॉलेज कन्नौज की प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुई है, का गुरुत्व संरक्षण हम सभी परिवारजनों भावी पीढ़ी का संबल बना हुआ है।

76 वर्षीय श्री रमेश तिवारी विराम जी एक शिक्षक होने के साथ ही हिंदी साहित्य को अपना महत्वपूर्ण योगदान दे गए। श्रीरामचरितमानस उनका प्रिय ग्रंथ था। सेठ वासुदेव सहाय इंटर कॉलेज कन्नौज से अध्यापन कार्य शुरू करने वाले विराम जी ने कानपुर, इंदौर, सतना, दमोह, भोपाल व सीधी में अध्यापन कार्य करते हुए अंत में अपने जन्म स्थान कन्नौज चले आए। यहां वह पंडित सुंदरलाल डिग्री कॉलेज में हिंदी विभागाध्यक्ष से सेवानिवृत्त हुए। तीन प्रकाशित पुस्तकों 'नतोऽहम राम बलभाम' खंडकाव्य, 'शब्द वेणु' काव्य संग्रह और 'धरती के ईश्वर' काव्यरूपक के साथ 'संवेद घोष' मासिक पत्रिका के संस्थापक संपादक थे। दूरदर्शन की डिस्कवरी चैनल में कन्नौज दर्शन तथा कन्नौज सुगंध उद्योग पर उनकी प्रस्तुति को काफी प्रशंसा व सराहना मिली। साहित्य और मानस के अतिरिक्त आल्हा खंड के अतिथि प्रसंग नाटक, कहानी, समीक्षा एवं ललित निबंधों की लंबी फेहरिस्त है। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते थे। मानस मर्मज्ञ कीर्तिशेष पंडित रामकिंकर उपाध्याय के संपर्क में आकर आपने मानस पर अच्छा शोध किया। कन्नौज की सामाजिक संस्था 'कान्यकुब्ज साथी' ने तुलसी उपवन में आयोजित एक कार्यक्रम में मानस मर्मज्ञ से सम्मानित किया। मानस संगम कानपुर के वार्षिक साहित्य उत्सव में आपकी उपस्थिति आयोजन को गौरवान्वित करती। आज मेरे पूज्य श्वसुर पंडित रमेश तिवारी हमारे बीच नहीं है , उनका जीवन दर्शन कर्मठता, सहजता हमारे परिवार व भावी पीढ़ी को राह दिखाती है उनका रचना कर्म हिंदी साहित्य की धरोहर के रूप में सम्मान पा रहा है।❑

- दिव्या तिवारी (पुत्रवधू)

भाई राकेश मिश्र

19 जून 2020 को उनका निधन हो गया। मेरे समवयस्क थे। यही 60-62 वर्ष। मैं उन्हें उद्यमसिंह पुरुष मानता था। फतेहपुर जनपद के गांव हाजीपुर बिटौरा से बगैर विशेष शिक्षण-प्रशिक्षण के दिल्ली आ गए। ईश्वर पर आस्था, कर्म पर विश्वास और परिश्रम से टेक्सटाइल व्यवसाय में नाम कमाया। आर के एन्ड संस् के नाम से आपके प्रतिष्ठान की धाक है। कुछ समय हरियाणा राज्य में सुमन टेक्सटाइल्स उद्योग भी चलाया। सामाजिक व धार्मिक कामों में रुचि ही नहीं लेते आगे बढ़कर तन, मन, धन से सहयोग को तत्पर रहते। उदारमना राकेशजी दिल्ली कान्यकुब्ज समाज, ऑल इंडिया कान्यकुब्ज बोर्ड व ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के साथ अनेकों सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से जुड़े थे। सबका भला चाहने वाले राकेश जी का परिचय क्षेत्र विस्तृत था। वे सबके सुख में सुखी और सबके दुख में दुखी होते थे। ब्राह्मण होने का उन्हें गर्व था। उनकी सम्मति परिपक्व हुआ करती थी। वे कितना पढ़े-लिखे थे, ये तो मैं नहीं जानता, न ही कभी जानने की कोशिश की। हाँ, इतना जरूर मुक्का मार के कह सकता हूँ कि उन्होंने 'प्रेम' के ढाई अक्षर अच्छी तरह पढ़े थे। इस स्नेहसिक्त व्यक्ति में गजब की आत्मीयता थी। घर आया मित्र भी सहज ही परिवार में विलीन हो जाया करता। पता नहीं, कौन सा दैवयोग था, जिस घड़ी ये वज्रपात हुआ। जरूर कोई शक्तिशाली प्रारब्ध था, जो उनके पुण्यों पर भी भारी पड़ गया। यहीं विधि के विधान के आगे नतमस्तक हो जाना पड़ता है। और उनके परिवार, सगे-सम्बन्धियों, मित्रों, समाज, को विधि की नियति मान मौन हो जाना पड़ता है। जहां रह जाते हैं सिर्फ आंसू और स्मृतियां। आज मेरा अपने से ही विश्वास डोल गया। दूसरों को हिम्मत दिलाने वाला व्यक्ति कैसे हिम्मत हार गया? उनके न रहने के समाचार पर सहसा विश्वास करना मुश्किल हो गया 'ऐसे भी जाता है भला कोई ? जाने से एक सप्ताह पहले ही फोन से बातचीत हुई थी। कोविड19 के बन्धनों के चलते उनकी श्रद्धांजलि सभा में जाना सम्भव नहीं हो पाया जो उनके परिवार को इस विषम घड़ी में ढाढ़स दे पाता और प्रभु से उनको धैर्य प्रदान करने की याचना करता। शोकाकुल परिवार से मिलने की हिम्मत कैसे जुटाऊं? उस घर की वीरानी कैसे देख पाऊंगा, जहाँ टेबल पर बैठकर, सब्जी पराठा, चटनी, अचार, मिष्ठान्न और अंत में सुबह का नाश्ता कर दिल्ली भ्रमण की ऊर्जा प्राप्त करता। उस महिला, जिसको भाभी का आत्मीय सम्बोधन अच्छा लगता था, जिसमें एक सुघड़ गृहिणी, कान्यकुब्जियत के संस्कार व अतिथि सत्कार के सभी गुण विद्यमान हैं, एक विधवा के रूप में देखने का साहस जुटाने की हिम्मत कैसे कर पाऊंगा। कहना न होगा, भाई राकेश मिश्रा गए तो लेकिन बहुतों को रुला गए। ऐसे सहृदय, उदारमना मनस्वी का जाना परिवार में ही नहीं, अपने मिलने वालों, समाज के बीच काफी समय तक न भर पाने वाली रिक्तता कर गया।❑

- आशुतोष

डॉ प्रमथ नाथ अवस्थी, लखनऊ

बलरामपुर अस्पताल लखनऊ के पूर्व मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ प्रमथ नाथ अवस्थी नहीं रहे। 90 वर्ष की अवस्था में 21 मई, 2020 को लखनऊ में उन्होंने अंतिम सांस ली। कन्नौज मूल निवासी अवस्थी जी की सहृदयता, मिलनसारिता, निरभिमानता के लोग कायल थे। 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका के नियमित पाठक थे। 'कान्यकुब्ज मंच' पत्रिका द्वारा आयोजित वर्ष 2006 में लखनऊ गोमतीनगर के प्रेक्षागृह में अपनी स्वनामधन्य सुपुत्री मालिनी अवस्थी के लोकगीत कार्यक्रम के आयोजन के सूत्रधार थे। उक्त कार्यक्रम में स्मृतिशेष धरनीधर त्रिवेदी, महेश चंद्र द्विवेदी, अवनीश अवस्थी, जगतनारायण सुकुल आदि की गौरवपूर्ण उपस्थिति स्मरणीय है। विनम्र श्रद्धांजलि

अधिवक्ता प्रदीप शुक्ल, कानपुर

8 सितम्बर, 2020। खजुहा (फतेहपुर) के सांकृत गोत्रीय वरिष्ठ अधिवक्ता भाई प्रदीप शुक्ल कोविड 19 के कालग्रास बन गए। प्रौढ़ावस्था के प्रवेशद्वार की दुनिया बिखरी पड़ी होती है। ऐसे समय में उनका जाना बेहद दुःखद रहा। तमाम जिम्मेदारियां जुड़ी थीं। अपार ऊर्जा से भरपूर इस शख्सियत का यूँ चले जाना सामाजिक रूप से भी दुख से भरपूर रहा। पी पी एन कॉलेज छात्र यूनियन के अध्यक्ष तथा लॉयर्स एसोसिएशन कानपुर के महामंत्री रहे भाई प्रदीप शुक्ल चलती-फिरती संस्था थे। न जाने कितनी व्यस्तताएं थीं। सामान्य कद के इस व्यक्ति का छोटे-बड़े सभी सम्मान करते थे। उनकी सक्रियता अद्भुत थी। ऊर्जा से भरपूर ऐसा वटवृक्ष, जिसके नीचे न जाने कितनी प्रतिभाएं पुष्पित-पल्लवित हुईं। 28 सितम्बर को कानपुर बार एसोसिएशन में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सोशल डिस्टेंसिंग के बावजूद गमगीन चेहरे उनकी शख्सियत बयां कर रहे थे। कौन था जो उनके लिए वहां खड़ा नहीं हुआ। **– अजीत शुक्ल**

- **26 अप्रैल, 2020। मुख्य प्रबंधक-बैंक आफ इण्डिया, फरीदाबाद से सेवानिवृत्त 60 वर्षीय सुशील शुक्ल (सैवसू, कानपुर देहात) का मैट्रो हास्पीटल, फरीदाबाद असामयिक दुःखद निधन।**
- **16 जून 2020। दंतचिकित्सक डॉ अविनाश चन्द्र दीक्षित का रीजेंसी हास्पीटल, कानपुर में दुःखद निधन।**
- **13 अगस्त, 2020। उत्साही व समाजसेवी कानपुर निवासी सुधांश शुक्ला(अन्नू) का असामयिक-अप्रत्याशित निधन।**

परमपिता से मृत आत्माओं की शांति व शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे। ॐ शांति।

समाजसेवी हर्ष दुबे, कोलकाता

कान्यकुब्ज समाज का एक मजबूत स्तम्भ और ढह गया। कोलकाता कान्यकुब्ज सभा के पं. हर्ष दुबे 24 मार्च, 2020 का 71 वर्ष की अवस्था में गोलोकवासी हुए। जातीयता के अनुराग से अनुरंजित हर्ष दुबे ने कोलकाता में कान्यकुब्ज संगठन की स्थापना, गति व मजबूती प्रदान करने में कोई कसर नहीं रखी। बैसवारा क्षेत्र से आये कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को रोजगार, आवास, भोजन व्यवस्था के साथ प्रशासनिक व आर्थिक मदद करने में कभी कोताही नहीं बरती। अपने पिता कन्नौज निवासी कीर्तिशेष पं शिवस्वरूप दुबे द्वारा स्थापित कोलकाता कान्यकुब्ज सभा को गति देने में सदैव सक्रिय रहने वाले हर्ष दुबे ने एक-एक कर कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को एकत्र किया। उनके नेतृत्व में आयोजित सभा के कार्यक्रम व परिचय सम्मेलन औपचारिकताओं से परे होते। न जाने कितने ही युवाओं को उन्होंने आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाया। रविन्द्र सारणी स्थित उनका व्यवसायिक स्थल प्रवासियों की शरणस्थली बना रहता। दो दशकों से अधिक समय तक सभा का कार्यालय उनके व्यवसायिक केंद्र से ही चलता था। एक सप्ताह चले वाले गंगा सागर सेवा शिविर में तीर्थयात्रियों को भोजन, आवास, चिकित्सा आदि की व्यवस्था में उनकी ततपरता देखते ही बनती थी। देश की विभिन्न कान्यकुब्ज व ब्राह्मण संस्थाओं से समन्वय बनाये रखने में उन्होंने सार्थक प्रयास किये। कान्यकुब्ज सेवा ट्रस्ट के आजीवन ट्रस्टी रहे। कोलकाता कान्यकुब्ज सभा का वर्षों नेतृत्व किया। देश-विदेश में फैले इत्र-परफ्यूम के पारिवारिक व्यवसाय में पूर्वोत्तर क्षेत्र का दायित्व सम्भालने के साथ समाज के किसी काम के लिए हमेशा सुलभ रहने वाले हर्ष दुबे का जाना समाज को एक लंबे समय तक पूरित न ही सकने वाली शून्यता दे गया। अश्रुपूरित नेत्रों से हम उनकी स्मृति को सादर नमन करते हैं। **–अशोक शुक्ल**

ओम तिवारी, इंदौर

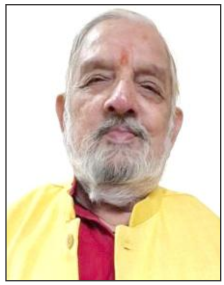

प्राचीन शनि मंदिर, इंदौर के मुख्य पुजारी, हिंदी एवं संस्कृत के विद्वान पं. ओम तिवारी का 15 सितंबर 20 को प्रातः आकस्मिक अवसान हो गया। मिलनसार, सहृदय तिवारीजी सिर्फ मंदिर के ही नहीं, सामाजिक, सांस्कृतिक व संगठन में रुचि रखने वाले मानवता के भी पुजारी थे। 1962 से 2019 तक इनके संयोजकत्व व नेतृत्व में अखिल भारतीय श्री शनिजयंती पर सप्ताह भर चलने वाला संगीत-महोत्सव अविस्मरणीय था। उनके प्रयासों से इंदौर शहर को एक अनुपम सौगात मिलती रही। श्री तिवारी जी एक कुशल छायाकार के रूप में भी जाने जाते रहे। उनके निधन से कला, संस्कृति, धर्म और साहित्य क्षेत्र को अपूर्ण क्षति हुई है।

मालवीय-जयंती (25 दिसंबर)

ब्राह्मणत्व जागा

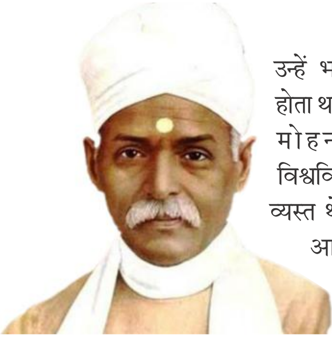

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल राजा कालाकांकर के अधीनस्थ शोध कर रहे थे। राजा द्वारा उन्हें भरपूर पारिश्रमिक भी प्राप्त होता था। उन्हीं दिनों महामना मदन मोहन मालवीय काशी विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य में व्यस्त थे। मालवीय जी की नजर आचार्य शुक्ल पर पड़ी। उन्होंने शुक्ल जी को पत्र लिखा- 'तुम्हारा स्थान कालाकांकर नरेश नहीं काशी विश्वविद्यालय है। तुम्हारे अनुभव, योग्यता, मेधा की आवश्यकता विश्वविद्यालय को अधिक है। यदि आपका ब्राह्मणत्व जगे तो मेरे साथ लगो, मुझे सहयोग करो।' डॉक्टर शुक्ल का ब्राह्मणत्व जागा और उन्होंने राजा कालाकांकर से अपनी बात कह दी। राजा ने कहा ब्राह्मणत्व जगाने का मतलब बुद्धिहीन होना तो नहीं है। अच्छा खासा वेतन छोड़कर कुछ चंद कौड़ी में हिंदू विश्वविद्यालय की सेवा करना कौन सी अक्लमंदी है? जबकि हम यहां भी हिंदी की सेवा में लगे हैं। आचार्यजी ने कहा अच्छे वेतन के साथ आपके शोध कार्य को छोड़ना बुद्धिहीन तो हो सकता है, पर विवेक हीन होना नहीं। और विवेक का संबंध आत्मा से होता है। अंत में राजा कालाकांकर ने यह कहते हुए उन्हें अनुमति दे दी कि

हिंदी साहित्य के प्रख्यात आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल राजा कालाकांकर के अधीनस्थ शोध कर रहे थे। राजा द्वारा उन्हें भरपूर पारिश्रमिक भी प्राप्त होता था। उन्हीं दिनों महामना मदन मोहन मालवीय काशी विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य में व्यस्त थे। मालवीय जी की नजर आचार्य शुक्ल पर पड़ी। उन्होंने शुक्ल जी को पत्र लिखा- 'तुम्हारा स्थान कालाकांकर नरेश नहीं काशी विश्वविद्यालय है। तुम्हारे अनुभव, योग्यता, मेधा की आवश्यकता विश्वविद्यालय को अधिक है। यदि आपका ब्राह्मणत्व जगे तो मेरे साथ लगो, मुझे सहयोग करो।' डॉक्टर शुक्ल का ब्राह्मणत्व जागा और उन्होंने राजा कालाकांकर से अपनी बात कह दी। राजा ने कहा ब्राह्मणत्व जगाने का मतलब बुद्धिहीन होना तो नहीं है। अच्छा खासा वेतन छोड़कर कुछ चंद कौड़ी में हिंदू विश्वविद्यालय की सेवा करना कौन सी अक्लमंदी है? जबकि हम यहां भी हिंदी की सेवा में लगे हैं। आचार्यजी ने कहा अच्छे वेतन के साथ आपके शोध कार्य को छोड़ना बुद्धिहीन तो हो सकता है, पर विवेक हीन होना नहीं। और विवेक का संबंध आत्मा से होता है। अंत में राजा कालाकांकर ने यह कहते हुए उन्हें अनुमति दे दी कि **'ब्राह्मण हमेशा राजा से बड़ा होता है'**।❑

पत्रिका हेतु सहयोग राशि 'संपादक-कान्यकुब्ज मंच' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ोदा की सीबीएस शाखा में IFSC:BARB0KIDKAN में जाकर हमारे खाता संख्या 19640100008057 में जमा कर इसकी सूचना पूरा नाम पता व पिन कोड सहित मोबाइल 09450332385 पर एसएमएस द्वारा या पत्रिका के ईमेल पर दें।

संरक्षक: ₹11000 ● **विशिष्ट: ₹5100** ● **आजीवन: ₹2100**

$200 **$100** **$40**

पत्रिका प्राप्ति स्थान

कानपुर – गुप्ता मैगजीन सेंटर, एलआईसी बिल्डिंग के सामने, फूल बाग चौराहा, कानपुर। मो.-8896229786
- पाण्डेय बुक सेलर, के-ब्लॉक, निकट आरबीआई कॉलोनी, किदवई नगर, कानपुर। मो-9336121757
- कृष्णा फार्म सेंटर, निकट साकेत गेस्ट हाउस, विकास नगर, कानपुर। मो.-9336029994

लखनऊ – शुक्ल मैगजीन सेंटर, हनुमान के निकट, हजरतगंज, लखनऊ। मो.-9473897006
- 1/206, विकास नगर, लखनऊ। मो.-9554096508
- 3/19 सेक्टर-जे, जानकी पुरम, लखनऊ। मो.-9450362385

नोएडा - शुक्ला मैगजीन सैंटर, ब्रह्मपुत्र कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 29, नोएडा। मो.-9210135448

दिल्ली – तिवारी ब्रादर्स, 73, एमएम मार्केट, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन-011 23413313-23411764

भोपाल - श्री के.एन. मिश्र, 58, सागर स्टेट कॉलोनी, अयोध्या नगर, भोपाल-462041, मो.-7224882166

इंदौर – श्री दुर्गानारायण तिवारी, 33, बिजासन रोड़, इंदौर-452005, मो.-9827791616

इंदौर – श्री रामचन्द्र दुबे, सी/एम, 112 आई, दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुक्लिया, इंदौर-452010, मो.-9098902326

फरीदाबाद - 264, सेक्टर-3, फरीदाबाद 121004, मो. 8800377066

ICS

Hospitality Services

I.C.S. FOODS PVT. LTD.

#909-910, Emaar MGF, Palm Square, Golf Course Extension Road,
Sector-66, Gurugram-122102, HARYANA
Phone: 0124-4554956, 57, 58 Visit us: www.Icsfoods.in

RNI: 46226/87

मेघदूत
बालों से हो जाये प्यार
बहुत हुए विदेशी केमिकल शैम्पू!
अब अपनाये पूर्णतया स्वदेशी
मेघदूत के आयुर्वेदिक उत्पाद।
आयुर्वेदिक औषधि
सत्रीठा हर्बल सत्– बालों का झड़ना, रूसी–खुश्की, दोमुहे बालों में विशेष गुणकारी
नीम सत् शैम्पू– जिसके प्रयोग से फुन्सी, रूसी–खुश्की, जुएं आदि बालों की समस्याओं मे गुणकारी
महाभृंगराज तेल– मानसिक तनाव, आधाशीशी दर्द, सिर पीड़ा, रूसी–खुश्की, जुएं आदि बालों की समस्याओं में गुणकारी।
khadi
Maha Bhrangraj Oil
Ayurvedic Medicine
Neem Sat
Ayurvedic
AMLA, NEEM & LEMON
Net Vol. 300ml
सत्रीठा
AYURVEDIC
with natural extracts of
AMLA, REETHA & BHRINGRAJ
FOR HAIR FALL, DANDRUFF & SCALP ACNE
Net Vol. 500ml
AVAILABLE ON: amazon Flipkart paytm mall 1mg
www.meghdootherbal.com | Helpline : +91- 9235623142